जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

Rashtradoot

जयपुर, रविवार 24 अगस्त, 2025

विचार बिन्दु

सेवा से शत्रु भी मित्र हो जाता है। –वाल्मीकि

शहरी हरियाली में मृत्यु दर घटाने का रहस्य छुपा है

यजुर्विद संहिता का एक सूत्र है: हरित्समुच्चयः शुभहेतुरेषः, स्वस्थंशरीरंमनसश्चशान्तिम्। विनाशयत्याशुगदांस्तथान्याः, सृजत्ययुंदीर्घमथोसमृद्धिम्।। तात्पर्य यह है कि हरियाली का विस्तार शुभ का कारण है। यह शरीर को स्वस्थ बनाती है और मन को शांति प्रदान करती है। यह शीघ्र ही रोगों और अन्य कष्टों को नष्ट करती है और दीर्घायु तथा समृद्धि को उत्पन्न करती है। आज की चर्चा इसके वैज्ञानिक विश्लेषण पर है।

कभी आपने सोचा है कि हमारे आसपास के हरे-भरे पेड़, पार्क और हरियाली हमें कैसे जिंदा रख सकते हैं? यह कहानी एक ऐसे सफर की है जहां विज्ञान और प्रकृति के बीच की अनदेखी डोर ने मानव जीवन को न केवल लंबा किया है, बल्कि इसे शांत और स्वस्थ भी बनाया है। कल्पना कीजिए, एक ऐसा दिन जब शहरों में हरियाली का नामो-निशान मिट चुका हो। हर तरफ केवल कंक्रीट का जंगल, धूल, धुआं और बेचैनी। यही तो आधुनिक शहरीकरण की सच्चाई है, जहां हरियाली कम होती जा रही है। लेकिन विज्ञान ने हमें बताया है कि यह कहानी किसी त्रासदी की ओर बढ़ सकती है। शोध बताते हैं कि जो लोग हरियाली के पास रहते हैं, उनकी मृत्यु दर कम होती है। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु के बीच की कहानी है।

एक बूढ़ी महिला की कहानी लीजिए, जो शहरी कोलाहल में अपने घर की खिड़की से केवल कंक्रीट की इमारतें देखती है। वह अकेली रहती है, उसका स्वास्थ्य खराब है, और वह अक्सर अस्पताल जाती है। लेकिन एक दिन, उसकी बेटी उसे एक ऐसे घर में ले जाती है, जहां खिड़की के बाहर एक बड़ा बगीचा है। कुछ महीनों में, उसकी मानसिक स्थिति में सुधार होता है, उसकी हृदय गति सामान्य हो जाती है और वह पहले से बेहतर महसूस करने लगती है। यह कहानी केवल भावनात्मक नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक है। अध्ययन बताते हैं कि हरियाली हृदय संबंधी बीमारियों, मानसिक तनाव और श्वसन तंत्र पर अद्भुत प्रभाव डालती है।

हरियाली का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह सामुदायिक स्तर पर भी लाभकारी है। ज़रा सोचिए, एक ऐसा इलाका जहां हरियाली की कमी हो, वहां अपराध दर अधिक होती है। लेकिन जैसे ही एक पार्क का निर्माण होता है, बच्चों के लिए खेलने की जगह मिलती है, वयस्कों के लिए टहलने के रास्ते बनते हैं, क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आने लगते हैं। यह केवल एक सामाजिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य और कल्याण का विस्तार है।

क्या हरियाली के बिना भी जीवन संभव है? वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो नहीं। चीन में एक अनोखा अध्ययन बताता है कि अत्यधिक ठंड या गर्मी से होने वाली मौतों को हरियाली नाटकीय रूप से कम कर सकती है। यह शोध स्पष्ट करता है कि हरियाली केवल सौंदर्य का स्त्रोत नहीं है, बल्कि यह जीवन रक्षक भी है। हरियाली केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक शांति और दीर्घायु का आधार भी बन सकती है।

दक्षिण एशियाई देशों में हरियाली के महत्व को समझना और भी आवश्यक हो जाता है। शहरीकरण के कारण हरियाली के क्षेत्र सीमित हो गए हैं, जिससे शारीरिक गतिविधियों में कमी और संबंधित बीमारियों, जैसे मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप में वृद्धि हुई है। हरियाली को उपयोगी बनाने के लिए डिज़ाइन में सुधार आवश्यक है। उदाहरण के लिए, महिलाओं और बच्चों के लिए सुरक्षित और सुलभ पार्क बनाना, जहां वे बिना किसी डर के टहल सकें।

कम आय वाले और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए हरियाली का सकारात्मक प्रभाव अधिक होता है। गरीब और वंचित समुदाय, जिनके पास स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य संसाधनों तक सीमित पहुंच होती है, हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। यह न केवल स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने में मदद करता है, बल्कि सामाजिक समानता को बढ़ावा देने का भी एक प्रभावी साधन है।

क्या आप जानते हैं कि ब्लू स्पेस (जैसे तालाब, झील) का भी स्वास्थ्य पर प्रभाव हो सकता है? ब्लू और ग्रीन स्पेस का सम्मिलित प्रभाव श्वसन और कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों से होने वाली मृत्यु दर को कम कर सकता है। शोध स्पष्ट करता है कि पानी और हरियाली के बीच का यह जुड़ाव हमारी सेहत के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

अब जरा एक छोटे लड़के की कल्पना करें, जो बड़े शहर में हरियाली के बिना पला-बढ़ा है। उसकी श्वसन समस्याएं बढ़ जाती हैं, और वह अक्सर अस्पताल जाता है। लेकिन जब वह एक गांव में अपने दादा-दादी के पास जाता है, जहां हर तरफ पेड़ और खेत हैं, तो उसका स्वास्थ्य बेहतर हो जाता है। यह सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि हकीकत है। अध्ययनों ने दिखाया है कि हरियाली केवल बीमारी को रोकने का साधन नहीं है, बल्कि यह पुनर्वास और उपचार का भी एक प्रभावी माध्यम हो सकती है।

नीचे प्रस्तुत शोध के आंकड़े और उनके निष्कर्षों में हरियाली और स्वास्थ्य के बीच संबंधों पर व्यापक और समग्र विवरण देखा जा सकता है।

अल्फ़ानो और साथियों (Environmental Research: 216, 2023) ने 538 नमूनों पर अध्ययन किया। उन्होंने गर्भावस्था के दौरान माताओं के हरियाली के संपर्क का नवजात शिशुओं के डीएनए मिथाइलेशन पर प्रभाव देखा। 147 डिफरेंशियली मिथाइलेटेड क्षेत्र की पहचान की गई, जिनमें से 85 क्षेत्रों ने प्रदूषण, सड़क की दूरी, शहरीकरण और पड़ोस की आय जैसे कारकों के बावजूद भी महत्वपूर्ण परिणाम दिखाए। यह अध्ययन हरियाली और आनुवंशिक प्रभावों के बीच संबंध को रेखांकित करता है।

कामी-बर्नाल और साथियों (Health and Place: 82, 2023) ने हरियाली और टाइप-2 मधुमेह के बीच संबंध पर 13 कोहोर्ट अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें 1,700 से 19,22,545 प्रतिभागी शामिल थे। उन्होंने पाया कि जिन व्यक्तियों को अधिक हरियाली का संपर्क मिला, उनमें टाइप-2 मधुमेह की घटनाएं कम थीं।

> **हरियाली का महत्व केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति, हमारे समाज, और हमारे अस्तित्व का आधार है। यह हमें न केवल जिंदा रखती है, बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाती है। यह समय है कि हम इस ज्ञान को अपनाएं और अपने जीवन में हरियाली को स्थान दें। आखिरकार, यह केवल पेड़ों और पौधों की बात नहीं है; यह हमारे जीवन की बात है।**

डिमाकोपुलू और साथियों (Frontiers in Epidemiology, 3, 2023) ने यूरोप के नौ देशों में 204 मिलियन व्यक्ति-वर्ष और 3.1 मिलियन मौतों के आंकड़ों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि पी.एम.2.5, नाइट्रोजन के ऑक्साइड और ब्लैक कार्बन के संपर्क से मृत्यु दर बढ़ती है, लेकिन हरियाली का उच्च स्तर इन नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकता है।

लियू और साथियों (Environmental Pollution, 301, 2022) ने 53 अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें 18 देशों के 100 मिलियन व्यक्ति शामिल थे। उनका मेटा-विश्लेषण दिखाता है कि एनडीवीआई (हरियाली का माप)में 0.1 की वृद्धि से कार्डियोवैस्कुलर मृत्यु दर में 2-3 प्रतिशत की कमी होती है।

अधिकारी और साथियों (The Lancet Planetary Health, 4, e135-e136, 2020) ने दक्षिण एशिया के संदर्भ में हरियाली और स्वास्थ्य का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि शहरीकरण के कारण हरियाली की कमी मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों को बढ़ाती है। उन्होंने सुझाव दिया कि हरियाली के डिज़ाइन और उसकी उपलब्धता में सुधार के लिए नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता है।

बर्ट्रेंड और साथियों (Public Health, 200:91-98, 2021) ने 13 एक्सपोजर-रिस्पॉन्स फंक्शन का उपयोग किया और निष्कर्ष निकाला कि एनडीवीआई में 0.1 की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर के जोखिम अनुपात को 0.96 तक कम कर सकती है।

कुआ और ली (Perspectives in Public Health, 141: 342-353, 2021) ने 20 अध्ययनों (133,363 प्रतिभागी और 202 मिलियन व्यक्ति) का विश्लेषण किया और पाया कि हरियाली का अधिक संपर्क सामान्य मृत्यु दर को 3 प्रतिशत तक कम कर सकता है।

झोउ और साथियों (Sustainable Cities and Society, 116, 2024) ने 21 अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि ब्लू और ग्रीन स्पेस का संयुक्त प्रभाव श्वसन और हृदय संबंधी मृत्यु दर को कम करता है।

ही और साथियों (Science of the Total Environment, 851, 2022) ने 138,749स्ट्रोक से संबंधित मौतों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि हरियाली ने ठंड और गर्मी से संबंधित स्ट्रोक मृत्यु दर को कम किया। उच्च एनडीवीआई नेविशेष रूप से गर्मी के प्रभाव को कम करने में सहायता की।

रिगोलोन और साथियों (International Journal of Environmental Research and Public Health, 18: 1-29, 2021) ने 90 अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि गरीब और वंचित समुदाय हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। हरियाली इन समुदायों में स्वास्थ्य असमानताओं को कम करती है।

रॉजस-रुएडा और साथियों (The Lancet Planetary Health, 3:e469-e477, 2019) ने 8.3 मिलियन प्रतिभागियों पर नौ अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि एनडीवीआईमें 0.1 की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर को 4 प्रतिशत तक कम कर सकती है।

स्मिथ और साथियों (Cities, 119, 2021) ने ब्लू स्पेस के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए पाया कि ब्लू स्पेस का संपर्क मोटापे और सामान्य मृत्यु दर में सुधार करता है।

युआन और साथियों (Aging Clinical and Experimental Research, 33:1783-1797, 2021) ने बुजुर्ग व्यक्तियों पर हरियाली के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि हरियाली का संपर्क सामान्य और स्ट्रोक मृत्यु दर को कम करता है।

इसी प्रकार जरे सखाविदि इत्यादि (Science of the Total Environment, 838, 156180, 2022) द्वारा हरियाली और कैंसर के संबंध पर 18 अध्ययनों का मेटा-विश्लेषण बताता है कि फेफड़ों और अन्य प्रकार के कैंसर पर हरियाली के सकारात्मक प्रभाव के संकेत मिले।

इन शोधों ने हरियाली के व्यापक लाभों को दर्शाया है, जिसमें मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य सुधार और सामाजिक असमानताओं को कम करने की क्षमता शामिल है। यह स्पष्ट है कि हरियाली मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

लेकिन हम इस ज्ञान का उपयोग कैसे कर सकते हैं? व्यक्तिगत स्तर पर, हम अपने आस-पास अधिक से अधिक पौधे लगा सकते हैं। पड़ोस के पार्क में नियमित रूप से समय बिताना हमारे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। जैसा कि यजुर्विद संहिता में कहा गया है: वनंप्रविश्यप्रचलन्ति ये ते, धृतिंलभन्तेहृदये सदा वै। तनुः सुदृढ्यामनसः प्रसादं, विधायसेव्यंशमयेत्व्यथाश्च।। तात्पर्य यह है कि वन में प्रवेश करके जो लोग पैदल भ्रमण करते हैं, वे सदा अपने हृदय में स्थिरता (धैर्य और शक्ति) प्राप्त करते हैं। उनका शरीर सुदृढ़ होता है और मन प्रसन्न हो जाता है। इस प्रकार, वन को सेवन करते हुए (वन में नियमित भ्रमण करते हुए), शारीरिक और मानसिक दुखों और कष्टों को शांत किया जा सकता है।

बच्चों को प्रकृति के संपर्क में लाना, उन्हें पेड़ों और हरियाली के महत्व के बारे में सिखाना भी एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रशासन के लिए यह जरूरी है कि हरियाली को शहरी योजना का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। पार्कों का निर्माण, सार्वजनिक स्थानों पर हरियाली बढ़ाना, और ब्लू-ग्रीन स्पेस का प्रबंधन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। इसके साथ ही, सामाजिक असमानता को ध्यान में रखते हुए ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए, जो गरीब और वंचित समुदायों के लिए अधिक सुलभ हों।

हरियाली का महत्व केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति, हमारे समाज, और हमारे अस्तित्व का आधार है। यह हमें न केवल जिंदा रखती है, बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाती है। यह समय है कि हम इस ज्ञान को अपनाएं और अपने जीवन में हरियाली को स्थान दें। आखिरकार, यह केवल पेड़ों और पौधों की बात नहीं है; यह हमारे जीवन की बात है। आइए, इसे संजोएं और संरक्षित करें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

डेमोग्राफी मिशन से राष्ट्रीय सुरक्षा को मिलेगा नया आधार

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों को संबोधित करते हुए हाईपॉवर डेमोग्राफी मिशन की घोषणा कर देश के सीमावर्ती जिलों में अवैध घुसपैठियों और अन्य कारणों से देश में आ रहे डेमोग्राफी बदलाव की समस्या के समाधान की आश बंधी है। देश के कुछ हिस्सों खासतौर से सीमावर्ती जिलों में आबादी असंतुलन से बड़ी समस्या होती जा रही है। डेमोग्राफी मिशन को राजनीतिक लाभ हानि की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। अपितु जो तस्वीर देश में सामने आ रही है उससे सबसे बड़ी और गंभीर समस्या सीमावर्ती क्षेत्र की सुरक्षा को लेकर आ गई है।

हालांकि राजनीतिक दल वोट बैंक के चलते बांग्लादेशियों, रोहिंग्याओं सहित अवैध प्रवास कर रहे लोगों के पक्ष में आ जाते हैं पर यह सीधा-सीधा राष्ट्रीय सुरक्षा का गंभीर मुद्दा होता जा रहा है। पिछले दिनों अमेरिका के लॉस एंजिल्स की घटना पर ध्यान दिया जाना जरुरी हैं जहां वाहनों को जलाते और लूटपाट मचाकर कानून व्यवस्था को ही तहस-नहस करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। फ्रांस में भी इस तरह की घटनाएं होती रही हैं। रवांडा, पश्चिमी वाल्मिक, यारोपीय देश आदि दुनिया के अनेक देश इस समस्या से दो चार होते रहे हैं। अमेरिका के चुनाव परिणाम किस तरह से लांस एंजिल्स में प्रभावित होते हैं वह सबके सामने हैं। हमारे देश में पश्चिमी बंगाल, असम, बिहार, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, झारखण्ड आदि कई दृष्टि से प्रभावित हो रहे हैं। बांग्लादेशी, रोहिंग्या अवैध घुसपैठ कर देश के हर कोने में आसानी से पहुंच रहे हैं और जब किसी तरह की घटना होती हैं तो इनके द्वारा आंतक और अशांति फैलाई जाती है वह भी किसी से नहीं है।

दुनिया के देशों में अवैध घुसपैठियों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई की जाती है। चीन जैसे देश तो इतने कठोर कदम उठाते हैं कि कभी पता ही नहीं चल सकता की स्वतंत्रता क्या होती है उसका पता ही नहीं चलता। अफगान सीमा पर तो गोली मार दी जाती है। क्यूबा में राजनीतिक जेल में बंद हो जाते हैं। सउदी अरब में भी जेल में बंद कर दिया जाता है। ठीक इसके विपरीत हमारे हालात है। हमारे यहां राजनीतिक संरक्षण मिल जाता है। सोशल एक्टिविस्ट सक्रिय हो जाते हैं। हमारे यहां तो अवैध कब्जा, राशनकार्ड, निःशुल्क सुविधाओं से लाभान्वित करवाने वाले सक्रिय हो जाते हैं। सच में देखा जाए तो राष्ट्रीय सुरक्षा से एक तरह से लेना देना ही नहीं रहता। यही कारण है कि बांग्लादेशी हो या रोंहिग्या हो या पाकिस्तान परस्त लोग देश की सुरक्षा और अशांति फैलाने में कोई कमी नहीं छोड़ते हैं। ज्योंही कहीं पर कोई कार्रवाई करने को प्रशासन आगे आता है तो इनके बचाव में मानवीयता का नारा उछालने लगते हैं। यह अपने आप में दुर्भाग्यपूर्ण हालात है।

डेमोग्राफी का सबसे पहले प्रयोग 1855 में बेल्जियम के अकिल गुडलार्ड ने अपनी पुस्तक एलिमेंट्स ऑफ ह्यूमन डेमोग्राफी में किया। हांलाकि जनसांख्यकी की बात राबर्ट माल्थस 1766 से 1834 में कर चुके हैं और उन्होंने पूरी थ्योरी प्रस्तुत की है। डेमोग्राफिक अध्ययन को दो तरह से समझना पड़ेगा। एक तो सामान्य तौर पर जिस तरह से आयु-धर्म के आधार पर जनसांख्ययीय अध्ययन कर विकास की रुपरेखा तैयार की जाती है। यह एक तरह से इस समस्या का समाधान डेमोग्राफिक अध्ययन के परिणामों के आधार पर नीति व योजनाएं बनाकर की जाती है और की जा सकती है। इसके ठीक विपरीत जिस तरह से देश में अराजकता और अशांति फैलाने और घुसपैठ व वर्गविशेष के कारण जनसंख्या में बदलाव लाकर क्षेत्रीय असंतुलन पैदा करने का प्रयास किया जाता है वह अधिक गंभीर व चिंतनीय हो जाती है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा डेमोग्राफी मिशन की घोषणा के निश्चित रुप से राजनीतिक अर्थ निकालने के प्रयास किये जायेंगे। इसे लंबे समय से भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक द्वारा घुसपैट और सीमावर्ती क्षेत्रों में अवैध मदरसों आदि द्वारा संचालित गतिविधियों के खिलाफ आवाज उठाई जा रही है उससे जोड़कर देखने का प्रयास किया जाएगा। यहां इसको भी ध्यान में रखना होगा कि अवैध घुसपैठियों द्वारा सीमावर्ती जिलों में जिस तरह से आदिवासियों की जमीन और संपत्ती पर कब्जा किया जा रहा है यह भी किसी से छिपा नहीं हैं।

बीएसएफ और एसएसएफ द्वारा जिस तरह से सरकार को लगातार रिपोर्टें दी जाती रही हैं पहलीवार उसे गंभीरता से लिया जा रहा है। बीएसएफ के पूर्व एडीजी पीके मिश्रा का कहना है कि डेमोग्राफी मिशन को राजनीतिक चश्में से नहीं देखा जाना चाहिए। यह तो सीधा सीधा राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा मुद्दा है। आज समूचा देश डेमोग्राफिक समस्या से दो चार हो रहा है। इसे नेपाल, बांग्लादेश, सीमावर्ती इलाकों में मुसलमान और हिंदुओं की आबादी में आ रहे बदलाव आदि से देखना होगा। प्रधानमंत्री की चिंता किसी एक क्षेत्र या सीमा तक नहीं है। इसका बड़ा कारण देश में डेमोग्राफिक समस्या की गंभीरता को समझने से ही होगा। आने वाले दिनों में बिहार, बंगाल आदि में चुनाव होने हैं और राजनीतिक दल इस घोषणा को निश्चित रुप से मुद्दा बनायेंगे, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। पर धरातलीय समस्या से आंख नहीं मूंदी जा सकती। बंगाल की मुर्शिदाबाद, बिहार का किशनगंज, उत्तरप्रदेश का नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र, असम के आदिवासी क्षेत्र, पश्चिमी बंगाल और झारखण्ड के हालात सामने हैं। सीमावर्ती सहित इन क्षेत्रों में मदरसों द्वारा जिस तरह का वातावरण तैयार किया जा रहा है उससे डेमोग्राफी बदलती जा रही है। कश्मिर का उदाहरण हमारे सामने है आज कश्मिरी पंडितों का कश्मिर से विस्थापन हो चुका है।

डेमोग्राफी मिशन के पक्ष विपक्ष में अंतहिन विवाद किया जा सकता है पर दो टके का सवाल यही है कि देश को किसी भी हालत में आंतरिक व राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर किसी तरह का कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिये। जिस तरह से देश के कई पॉकेट्स में तेजी से डेमोग्राफिक असंतुलन बन रहा है उसे देखते हुए देरी से ही सही पर डेमोग्राफिक मिशन की घोषणा स्वागतीय है। सभी को दलीय राजनीति से उपर उठकर इसका स्वागत किया जाना चाहिए। यह साफ हो जाना चाहिए कि देश की आंतरिक और सीमावर्ती सुरक्षा को कोई खतरा नहीं होना चाहिए। कोई भी राष्ट्र इसे स्वीकार भी नहीं करेगा। घुसपैठियों के कारण जिस तरह की समस्याएं और आदिवासियों की भूमि पर कब्जा करने से लेकर देश की आम जनता के लिए लोकहितकारी योजनाओं में सैंध लगारहे हैं उसे रोका जाना अतिआवश्यक हो गया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस भावना के साथ मिशन की घोषणा की है उसी भावना और मंशा के साथ इस मिशन को आकार दिया जाना चाहिए और पूरी कार्ययोजना बनाकर इसे जल्द से जल्द से आकार दिया जाना चाहिए ताकि डेमोग्राफिक मिशन अपना कार्य आरंभ कर सके। डेमोग्राफिक संतुलन व सीमाओं की सुरक्षा के साथ ही योजनावद्ध तरीके से असंतुलन के जो प्रयास किये जा रहे हैं उस पर प्रभावी अंकुश लगाया जाना जरुरी है। इसे राजनीतिक विवाद से दूर ही रखा जाना चाहिए। सोशल एक्टिविस्टों को भी राष्ट्रहित को पहली प्राथमिकता देनी ही होगी।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर अलवर में विद्यार्थियों ने साइंस प्रदर्शनी लगाई

पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय नं.1 में लगाई गई साइंस प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने अपने मॉडलों का प्रदर्शन किया

अलवर, (निसं)। केन्द्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री एवं अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव ने शनिवार को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के अवसर पर अलवर में पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय नं.1 में विद्यार्थियों द्वारा अटल टिंकरिंग लैब में लगाई गई साइंस प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं शिक्षाविदों से संवाद किया। अटल टिंकरिंग लैब में विद्यार्थियों ने आई ओटी डिवाइस, रोबोटिक्स किट व थ्री डी प्रिंटर व अन्य उपलब्ध आधुनिक सामग्री की सहायता से लगाई गई साइंस प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने अपने नवोन्मेशी मॉडल का प्रदर्शन किया, जिसको मंत्री यादव ने बारीकी से देखकर विद्यार्थियों की हौसला-अफजाई की। केंद्रीय मंत्री यादव ने कार्यक्रम के दौरान शिक्षाविदों व विद्यार्थियों से रूबरू होकर कहा कि 23 अगस्त 2023 को चंद्रमा पर चंद्रयान के द्वारा विक्रम लैंडर ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रूव पर सॉफ्ट लैंडिंग कर इतिहास रचा था। उसके पश्चात प्रज्ञान रोवर चंद्रमा की सतह पर उतरकर अनुसंधान किया था।

केन्द्रीय मंत्री एवं अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव ने साइंस प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

उन्होंने भारत सरकार के अटल इनोवेशन मिशन के बारे में बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने न केवल इसको प्रारम्भ किया, बल्कि इस मिशन के तहत परम्परागत शिक्षा की तुलना में नवाचार व अनुभवात्मक शिक्षा की भावना को युवा पीढ़ी के बीच बनाना है। इसी मिशन में अटल टिंकरिंग लैब एक महत्वपूर्ण घटक है जिसके तहत सरकारी स्कूलों में आधुनिक लैब बनाई जा रही है, जिसका उद्देश्य शिक्षा के स्कूली दिनों में ही शोध और अनुसंधान के प्रति बच्चों की अभिरूचि जाग्रत करना है। साथ ही समुदाय में शिक्षा की उपलब्धता का जो गैप है उसे फिल करना है। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा सभी तक बेसिक शिक्षा पहुंच सके इसके लिए समग्र शिक्षा अभियान चलाया गया था। वर्तमान में अभूतपूर्व बदलाव आए हैं, अब साक्षर होना नाकाफी है, बल्कि तकनीकी रूप से दक्ष होना भी समय की मांग है।

उन्होंने कहा कि इस विषय को आगे बढ़ाते हुए अलवर जिले में ई-गुरूकूल लाइब्रेरी शुरू करने की एक मुहिम शुरू की है जिसके तहत जिले के सभी क्षेत्रों में विद्यार्थियों और युवाओं को आधुनिक तकनीक पर आधारित डिजिटल शिक्षा मिल सके, जिससे युवा न केवल अपने करिकूलम का अध्ययन कर सकेंगे, बल्कि अपने कैरियर से संबंधित शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि इसके लिए सांसद निधि कोष का उपयोग करने के साथ सामुदायिक सहयोग की भी आवश्यकता है, जिसमें सामुदायिक सहयोग के साथ-साथ जिला प्रशासन द्वारा भी इस कार्य को आगे बढ़ाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि तकनीकी के इस दौर में बच्चों व युवाओं को खेल मैदान से जोड़ने व उन्हें खेल में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से अलवर में अलवर सांसद खेल उत्सव शुरू किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों व युवाओं की भागीदारी रही। इसमें बेटियों ने भी बढ़चढ़कर भाग लिया। प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें अच्छा प्रशिक्षण दिया जाना भी आवश्यक है। इसके लिए उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को ग्रीष्मकाल अवकाश में अंतरराष्ट्रीय स्तर तक के खेल प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण दिलाने का कार्य किया गया है। साथ ही अलवर पर्यटन को बढ़ाने के उद्देश्य से अलवर टाईगर मैराथन का आयोजन कराया गया, जिसमें देशभर से एथलिटों की भागीदारी रही। अबकी बार यह मैराथन अंतरराष्ट्रीय स्तर की कराई जा रही है। उन्होंने कहा कि 29 अगस्त खेल दिवस के अवसर पर एक आयोजन कराया जा रहा है, जिसमें अलवर में केंद्रीय खेल मंत्री को आमंत्रित किया गया है।

जिला कलेक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस से युवा पीढी प्रेरणा लेकर विज्ञान और तकनीकी और अनुसंधान की ओर अग्रसर हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री व अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव की प्रेरणा से अलवर में जिला प्रशासन द्वारा ई-विद्या प्रोजेक्ट शुरू किया गया है, जिसके तहत सरकारी स्कूलों में डिजिटल तकनीक पर आधारित ई-लाइब्रेरी विकसित की जा रही है। उन्होंने कहा कि इससे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को आधुनिक शिक्षा मिल सकेगी तथा वो अपने कॉम्पटेटिव परीक्षाओं की भी तैयारी यहां कर सकेंगे।

प्राचार्य गंगाधर मीणा ने विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर विद्यालय में की गई गतिविधियों व अटल टिंकरिंग लैब से विद्यार्थियों में विज्ञान व अनुसंधान के प्रति बढ़ रही रूचि के बारे में विस्तार से बताया।

इस दौरान जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, एडीएम द्वितीय योगेश डागुर, महासिंह चौधरी, बन्नाराम मीणा, संजय नरूका, घनश्याम गुर्जर, इंद्र यादव, दौलतराम जाटव, वीरमती देवी, अरूण जैन, जितेन्द्र शर्मा, सतीश यादव सहित अनेक प्रबुद्ध व्यक्ति, शिक्षाविद्, विद्यालय स्टाफ एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

राशिफल रविवार 24 अगस्त, 2025

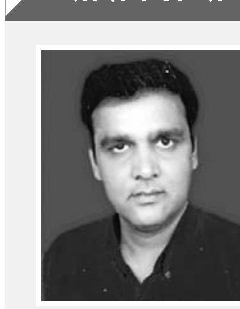

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 2:06 तक, शिव योग दिन 12:30 तक, बव करण दिन 11:49 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज राजयोग दिन 11:49 से रात्रि 2:06 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और त्रिपुष्कर योग रात्रि 2:06 से सूर्योदय तक है। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति है। आज नक्त व्रत पूर्ण होंगे। आज वीर जन्मोत्सव (जैन), प्रथम प्रकाश उत्सव गुरू ग्रन्थ साहिब (प्रा.मत) है। आज से मौन व्रत (जैन) आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:42 से 9:18 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:24 तक, शुभ 2:05 से 3:41 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:06, सूर्यास्त 6:52

मेष
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार संपन्न हो सकते हैं। परिवार में मनोरंजन पर धन खर्च हो सकता है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

वृश्चिक
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। आज धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सामाजिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

Volodymyr Zelenskyy Authenticity and performance

War came to Europe, Ukraine made headline in the West. The sheer volume of coverage trained on the country and its leader, what makes Zelenskyy, the man, the leader and the citizen

Bees And Cancer — Bee Venom cures Breast Cancer: A Natural Breakthrough in Modern Medicine

यूरोपीय देश एकजुट होकर अमेरिका के साथ खड़े हुए यूक्रेन के मुद्दे पर

पुतिन कुण्ठित हुए, अकेले पड़ने से, तथा उन्होंने यूरोपीय देशों पर कटाक्ष किया कि इन देशों ने अपनी ''सॉवरैनिटी'' (संप्रभुता) गिरवी रख दी है

-अंजन रॉय-
-अमेरिका में राष्ट्रदूत प्रतिनिधि-

वॉशिंगटन,23 अगस्त। ऐसे में जबकि पश्चिमी देश अमेरिका के प्रति निष्ठा दिखा रहे हैं, व्लादिमीर पुतिन ने उन सभी पर तीखा हमला बोल है।

कुछ हद तक अलग-थलग पड़े रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अब उन पश्चिमी सहयोगियों पर सीधा हमला बोला है जिन्हें अब कोएलिशन ऑफ द विलिंग (इच्छुकों का गठबंधन) कहा जा रहा है। पहले जहाँ यूरोपीय देशों और अमेरिका के बीच साफ-साफ मतभेद था, अब समीकरण बिल्कुल उलट गए है। पूरा पश्चिमी ब्लॉक अमेरिका के साथ आ गया है और अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व को खुले तौर पर मान्यता दे रहा है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण वह तस्वीर है, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है, जिसमें ट्रंप बीच में बैठे हैं और उनके चारों ओर पश्चिमी यूरोप के नेता ऐसे बैठे हैं जैसे किसी कक्षा में बच्चों को शिक्षक समझा रहे हों।

- **पुतिन ने कहा कि रूस कभी भी अपनी संप्रभुता गिरवी रखकर समझौता नहीं करेगा। उन्होंने चीन, भारत व बांग्लादेश के साथ मिलकर अपना अलग गुट बनाने की बात कही।**
- **पुतिन ने यह भी कहा कि रूस की अन्य देशों से दोस्ती व सम्बन्ध बनाने का आधार होता है, उन देशों से सहयोग करके, उन देशों के साथ उन देशों के विकास में भागीदार होना, जबकि अन्य देश (अमेरिका) अन्य देशों को केवल एक मार्केट के रूप में देखता है। जैसा कि विदित ही है, रूस बांग्लादेश में न्यूक्लियर पावर प्लॉन्ट बना रहा है।**
- **साथ ही रूस ने अमेरिका के साये में यूक्रेन के साथ त्रिपक्षीय वार्ता व मुलाकात का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया है। हालांकि, रूस ने औपचारिक तौर पर कहा यही है, कि यूक्रेन अभी त्रिपक्षीय वार्ता के लिए तैयार नहीं है, क्योंकि यूक्रेन ने अपनी भूमि छोड़ने व नाटो की सदस्यता को छोड़ने का इरादा त्यागने पर अभी तक सहमति नहीं दी है।**

इस नए गठबंधन पर स्पष्ट टिप्पणी करते हुए, रूसी राष्ट्रपति ने अपने घरेलू दर्शकों को संबोधित भाषण में,जो कि साफ तौर पर उनके अंतरराष्ट्रीय प्रतिद्वंद्वियों के लिए था, कहा कि ''पश्चिमी यूरोप के देशों ने स्पष्ट रूप से अपनी संप्रभुता खो दी है।''

अपना स्टेटस गंवाने की इन देशों की स्थिति को और स्पष्ट करने के लिए पुतिन ने कहा कि कई देश अपनी संप्रभुता खोने के बाद भी अपने स्टेटस से संतुष्ट हैं। उन्होंने ज़ोर दिया कि रूस इस रास्ते पर नहीं चलेगा और कभी भी इन बुनियादी सिद्धांतों पर समझौता नहीं करेगा।

पुतिन ने यह भी कहा कि भले ही पश्चिमी गोलार्ध में रूस अकेला पड़ गया हो, लेकिन वह अपने खुद के देशों का गठबंधन बना रहा है। उन्होंने साफ तौर पर चीन, भारत और बांग्लादेश का उल्लेख किया। चीन के साथ रूस की "अनंत मित्रता" की बात करते हुए उन्होंने भारत और बांग्लादेश के साथ सहयोग के विशेष क्षेत्रों को रेखांकित किया। ज्ञातव्य हैं कि रूस बांग्लादेश में कुछ परमाणु बिजलीघर भी बना रहा है।

उन्होंने रूसी दृष्टिकोण की ओर इशारा किया जिसमें रिश्ते, सहयोग और स्थानीय विकास के स्तर पर बनाए जाते हैं। उन्होंने दावा किया कि वह स्थानीय क्षमताओं को विकसित करने में मदद कर रहे हैं, जबकि पश्चिमी देश केवल अपने उत्पाद बेचने में लगे रहते हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

खराब लड्डू बेचे, हलवाई पर जुर्माना

जयपुर, 23 अगस्त। जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-तृतीय ने ग्राहक को सवामणी प्रसादी के लिए खराब लड्डू बेचने पर कंवर नगर निवासी हलवाई संजय कुमार शर्मा पर 11 हजार रुपए हर्जाना लगाया है। वहीं हलवाई को निर्देश दिया है कि वह ग्राहक को खराब लड्डुओं की कीमत 18,500 रुपए भी ब्याज सहित वापस करे। आयोग के अध्यक्ष देवेन्द्र मोहन माथुर व सदस्य पवन कुमार भारद्वाज ने यह आदेश मानसरोवर निवासी राकेश गर्ग के परिवाद पर दिया। आयोग ने कहा कि

- **जिला उपभोक्ता आयोग ने सवामणी के लिए खराब लड्डू बेचने पर ब्याज सहित कीमत लौटाने तथा 11 हजार रुपये जुर्माना देने के आदेश दिये।**

साक्ष्यों से स्पष्ट है कि विपक्षी ने इस बात का खंडन नहीं किया है कि उसके द्वारा दूषित लड्डू नहीं बेचे गए थे। ऐसे में यह विपक्षी की ओर से सेवाओं में कमी और अनफेयर ट्रेड प्रेक्टिस है। ऐसे में विपक्षी पर हर्जाना लगाया जाना उचित होगा।

मामले के अनुसार, परिवादी ने खोले के हनुमानजी मंदिर में सवामणी प्रसादी के लिए 22 फरवरी 2022 को 50 किलो चौगानी लड्डू 18,500 रुपए में खरीदे थे। उसने लड्डू का मंदिर में भोग लगाकर परिजनों को प्रसादी वितरण

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एन.डी.ए. के पास पर्याप्त संख्याबल नहीं अमित शाह के विधेयक को पास कराने के लिए

इस संविधान संशोधन विधेयक को लोकसभा में पारित कराने के लिए दो तिहाई बहुमत, यानि 365 सदस्यों का समर्थन चाहिये, जबकि एनडीए के पास 293 सांसद हैं, लोकसभा में

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ला ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 अगस्त। गृह मंत्री अमित शाह ने 20 अगस्त को लोकसभा में एक विवादित बिल पेश किया था, जिसके तहत प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और मंत्रियों को अयोग्य ठहराने का प्रावधान है। लेकिन यह बिल आगे बढ़ ता नहीं दिख रहा है।

हालांकि, बिल को संसद की संयुक्त समिति के पास भेजा गया है, मगर इसे पास करने के लिए लोकसभा में दो-तिहाई यानि 365 सांसदों का समर्थन चाहिए, जबकि एनडीए के पास सिर्फ 293 सांसद हैं। जो इस संविधान संशोधन बिल को पास करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

बिल बिना किसी सलाह-मशविरे के लाया गया था, इसलिए कोई आश्चर्य नहीं होगा कि चंद्रबाबू नायडू की तेलुगु देशम पार्टी और नीतीश कुमार की जेडीयू इसका समर्थन नहीं करें, जिससे एनडीए की ताकत और घट जाएगी।

- **अमित शाह के विधेयक के अनुसार, प्र.मंत्री, मु.मंत्री या अन्य कोई मंत्री की सदस्यता समाप्त की जा सकेगी,अगर वह, 100 दिन से अधिक जेल में कैद रहेगा।**
- **इस विधेयक को लाने से पहले एनडीए के अन्य घटकों को विशेषकर, चन्द्रबाबू नायडू व नीतीश कुमार को विश्वास में नहीं लिया गया था, अतः सम्भावना है, कि तेलगुदेशम व जद (यू) भी इस विधेयक के पक्ष में वोट नहीं करेंगे।**
- **ये दिक्कतें आयेंगी, यह जानते हुए भी, यह विधेयक लोकसभा में क्यों पेश किया गया, यह एक विचारणीय प्रश्न है।**
- **विपक्ष का प्रचार है, कि प्रायः न्यायालय सौ दिन में जमानत नहीं दे पाते हैं, अतः यह विधेयक उन मुख्यमंत्रियों को चेतावनी देने के लिए लाया गया है, जो सरकार को उत्साहजनक समर्थन नहीं दे रहे हैं, अतः उन पर सदस्यता रद्द करने के लिए ई.डी., सी.बी.आई. की ''रेड'' करवाई जा सकती है।**

असल में, इस बिल के जरिए इन दो सहयोगी दलों को डराने की कोशिश की गई थी कि वे एनडीए का साथ देते रहें नहीं तो उनके मुख्यमंत्री केंद्रीय एजेंसियों (जैसे ईडी या सीबीआई) के शिकंजे में फंस जाएंगे और क्योंकि, वो 100 दिन जेल में रहेंगे तो उनकी कुर्सी चली जाएगी, क्योंकि अदालतें सामान्यतः 100 दिनों में जमानत नहीं देतीं। संविधान विशेषज्ञ पी.डी.टी. आचार्य 14वीं और 15वीं लोकसभा के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अमेरिका के लिए सौ डॉलर से ज्यादा कीमत की डाक सेवाएं बंद'

भारतीय डाक विभाग का यह आदेश 25 अगस्त से क्रियान्वित होगा

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 अगस्त। भारतीय डाक विभाग ने घोषणा की है कि 25 अगस्त 2025 से अमेरिका के लिए 100 डॉलर से अधिक मूल्य वाली अधिकांश अंतरराष्ट्रीय डाक सेवाएँ अस्थायी रूप से बंद कर दी जाएँगी। यह कदम अमेरिकी सरकार के नए नियमों के बाद उठाया गया है।

अमेरिका ने 30 जुलाई 2025 को जारी आदेश (एक्ज़िक्यूटिव ऑर्डर न. 14324) में 800 डॉलर तक के सामान पर मिलने वाली ड्यूटी-फ्री छूट खत्म कर दी है। अब 29 अगस्त से अमेरिका आने वाले हर सामान पर

- **अमेरिका ने 30 जुलाई 2025 को जारी आदेश में 800 डॉलर तक के सामान पर मिलने वाली ड्यूटी फ्री छूट खत्म कर दी है, अब अमेरिका भेजे जाने वाले हर सामान पर कस्टम ड्यूटी लगेगी। सिर्फ 100 डॉलर तक के गिफ्ट आइटम ही ड्यूटी फ्री रहेगें।**

कस्टम ड्यूटी लगेगी। केवल 100 डॉलर तक के गिफ्ट आइटम ड्यूटी-फ्री रहेंगे।

नए आदेश के तहत अब केवल वे ट्रांसपोर्ट कैरियर्स या क्वालिफाइड पार्टियां जिन्हें अमेरिकी कस्टम और बॉर्डर प्रोटेक्शन (सी.बी.पी.) मान्यता देगा, वे ही ड्यूटी वसूल कर सरकार को जमा कर पाएँगे। हालांकि, इन प्रक्रियाओं की पूरी जानकारी अभी स्पष्ट नहीं है।

इसी वजह से अमेरिका जाने वाली एयरलाइनों ने कहा है कि वे 25 अगस्त के बाद ऐसे डाक पार्सल स्वीकार नहीं कर पाएँगी।

डाक विभाग ने बताया कि अब अमेरिका के लिए सिर्फ पत्र, दस्तावेज और 100 डॉलर तक के गिफ्ट पैकेट ही भेजे जा सकेंगे। अन्य सभी प्रकार की डाक सेवाएँ अगले आदेश तक निलंबित रहेंगी।

जिन ग्राहकों ने पहले ही ऐसे पार्सल बुक कर दिए हैं जिन्हें अब भेजा नहीं जा सकता, वे डाक शुल्क की वापसी के लिए आवेदन कर सकते हैं।

डाक विभाग का कहना है कि वह सी.बी.पी. और अमेरिका की डाक सेवा से मिलकर इस समस्या का समाधान निकालने की कोशिश कर रहा है ताकि जल्द ही सभी सेवाएँ फिर से शुरू की जा सकें।

सीबीआई ने अनिल अंबानी के दो परिसरों की तलाशी ली

नयी दिल्ली, 23 अगस्त। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने 2929.05 करोड़ रुपये के बैंक ऋण धोखाधड़ी मामले में व्यवसायी अनिल अंबानी के मुंबई स्थित दो ठिकानों पर शनिवार को तलाशी ली।

सीबीआई ने यह कार्रवाई भारतीय स्टेट बैंक की शिकायत के आधार पर की है, जिसने 13 जून को इन संस्थाओं

- **बैंक ऋण धोखाधड़ी मामले में सीबीआई ने शुक्रवार को मुंबई की विशेष अदालत से तलाशी वारन्ट लिया था।**

को धोखाधड़ी के रूप में वर्गीकृत किए जाने के बाद एजेंसी से संपर्क किया था। यह कार्रवाई आरबीआई के धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन पर मास्टर निर्देशों और बैंक के बोर्ड द्वारा अनुमोदित धोखाधड़ी के वर्गीकरण, रिपोर्टिंग और प्रबंधन नीति के अनुसार की गई थी।

सीबीआई ने शुक्रवार को मुंबई की एक विशेष अदालत से तलाशी वारंट हासिल किया था।

अपने सबसे विश्वास पात्र सर्जियो गोर को भारत में राजदूत नियुक्त किया ट्रंप ने

गोर सिर्फ भारत में राजदूत का काम नहीं देखेगें बल्कि उन्हें समूचे दक्षिणी और मध्य एशिया मामलों का विशेष राजदूत भी बनाया गया है

- सुकुमार साह -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 23 अगस्त। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने सर्जियो गोर को भारत में अगला अमेरिकी राजदूत नियुक्त करने के लिए चुना है। गोर लम्बे समय से ट्रंप के सहयोगी हैं और वर्तमान में वाइट हाउस प्रेसिडेंशियल पर्सनल ऑफिस के निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। ट्रंप ने एक सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से यह घोषणा जारी, और कहा वह जिसमें उन्होंने गोर को एक "विश्वसनीय सहयोगी" बताया जो कई वर्षों से मेरे साथ रहे हैं।

ट्रंप ने कहा कि 38 वर्षीय गोर को दक्षिण और मध्य एशियाई मामलों के लिए विशेष दूत के रूप में भी काम करेंगे, जिससे उनके अधिकार राजदूत पद से आगे, एक व्यापक क्षेत्रीय स्तर तक बढ़ जाएंगे। यह नामांकन ऐसे समय में आया है जब वॉशिंगटन और नई दिल्ली के बीच व्यापार और शुल्क को लेकर तनाव जारी है।

- **ट्रंप ने कहा, यह जरूरी है कि विश्व के इस सर्वाधिक आबादी वाले क्षेत्र में मैं किसी ऐसे व्यक्ति को लाऊं जिस पर मैं पूरा भरोसा कर सकूं, कि वह मेरा ऐजेंडा लागू कर सकता है। कहा जा रहा है कि इससे ट्रंप भारत पर पूरी नज़र रख सकेगें।**
- **गोर की नियुक्ति की अभी सीनेट से पुष्टि होना बाकी है। वे भारत में एरिक गार्सेटी की जगह लेंगे जो मई 2023 से जनवरी 2025 तक भारत में राजदूत थे।**
- **जहां तक भारत की बात है, यहाँ हमेशा ऐसे अमेरिकन राजदूत को ज्यादा स्वीकृति दी गई है जो राष्ट्रपति का बेहद करीबी रहा हो, ऐसे में संदेश सीधे राष्ट्रपति तक पहुंचने की संभावना बढ़ जाती है।**

अपनी घोषणा में ट्रंप ने गोर की प्रशासन में भूमिका की प्रशंसा की और उन्हें संघीय विभागों और एजेंसियों में लगभग 4,000 अधिकारियों की नियुक्ति को "रिकॉर्ड समय" में संपन्न कराने का श्रेय दिया। राष्ट्रपति के अनुसार, अब इन पदों में से 95 प्रतिशत से अधिक भरे जा चुके हैं। सीनेट द्वारा नियुक्ति पुष्टि होने तक गोर अपने वर्तमान पद पर बने रहेंगे।

ट्रंप ने आगे कहा, "दुनिया के सबसे अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र के लिए यह जरूरी है कि मेरे पास कोई ऐसा व्यक्ति हो जिस पर मैं पूरी तरह से भरोसा कर सकूं, जो मेरे एजेंडा को आगे बढ़ाए और अमेरिका को फिर से महान बनाए। सर्जियो एक शानदार राजदूत बनेंगे। बधाई हो, सर्जियो!"

अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वांस ने भी इस चयन का समर्थन किया और सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि गोर हमारे देश के लिए भारत में एक शानदार राजदूत साबित होंगे।

यदि सीनेट द्वारा पुष्टि हो जाती है, तो गोर एरिक गार्सेटी का स्थान लेंगे, जिन्होंने मई 2023 से जनवरी 2025 तक भारत में अमेरिकी राजदूत के रूप में कार्य किया था। यह पद कूटनीतिक रूप से काफी अहम माना जाता है, क्योंकि यह भारत की क्षेत्रीय और वैश्विक भूमिका के बढ़ते महत्व को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्रियंका, अखिलेश, स्टालिन राहुल की यात्रा में शामिल होंगे

नयी दिल्ली 23 अगस्त। कांग्रेस ने कहा है कि पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की वोट चोरी के खिलाफ बिहार में चल रही वोटर अधिकार यात्रा में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ ही इंडिया गठबंधन के अखिलेश यादव, एम के स्टालिन तथा हेमंत सोरेन जैसे प्रमुख नेता भी शामिल होंगे। कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने शनिवार को यहां बताया कि गांधी की यात्रा में पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन,

- **कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने यह भी बताया कि कांग्रेस के मुख्यमंत्री भी यात्रा में शामिल होंगे।**

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री तथा समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी तथा हिमाचल के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू सहित कई प्रमुख नेता शामिल होंगे। गौरतलब है कि गांधी की 17 अगस्त को बिहार के सासाराम में शुरु हुई वोटर अधिकार यात्रा 20 जिलों को कवर करते हुए 1300 किमी चलने के बाद एक सितंबर को पटना में समाप्त होगी।

इलैक्ट्रॉनिक फार्मास्युटिकल व सोलर एनर्जी के सामान व स्पेयर पार्ट्स के लिए भारत चीन पर काफी निर्भर है

दूसरी ओर 2020 में गलवान घाटी पर संघर्ष के बाद, भारत में चीन को संशय की दृष्टि से देखा जाता है

- सुकुमार साह -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 23 अगस्त। भारत की विदेश नीति अब एक विरोधाभास से परिभाषित होती जा रही है। एक ओर, इसकी राजनीतिक और सुरक्षा रणनीति इसे अमेरिका के करीब धकेलती है। तो दूसरी ओर, इसकी आर्थिक मजबूरियाँ और बहुपक्षीय मंचों पर इसकी स्थिति अक्सर इसे चीन के साथ सामरिक मेलजोल में ला देती हैं। यह दोहरी रणनीति कोई भ्रम नहीं, बल्कि रणनीतिक स्वायत्तता की भारत की सोच-समझकर अपनाई गई नीति है। लेकिन इससे वॉशिंगटन और बीजिंग दोनों के साथ तनाव भी उत्पन्न होता है, जिससे दिल्ली को एक नाज़ुक संतुलन बनाए रखना पड़ता है।

भारत और अमेरिका के बीच बढ़ती साझेदारी का राजनीतिक और रणनीतिक तर्क सीधा है। वर्ष 2020 में गलवान घाटी की घातक झड़प के बाद से भारत ने चीन को अपने दीर्घकालिक प्रमुख प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखना शुरू किया। दोनों देश अब भी वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सीमा तनाव में उलझे हुए हैं, जहाँ सैनिक जमावड़े और आमने-सामने की स्थितियाँ बनी हुई हैं। भारत में जनमत और राजनीतिक दृष्टिकोण चीन के खिलाफ काफी सख्त हो गया है, और चीन को भारत की संप्रभुता के लिए मुख्य खतरे के रूप में देखा जा रहा है।

इस खतरे का संतुलन साधने के लिए दिल्ली ने अमेरिका के साथ रक्षा और सुरक्षा सहयोग तेज कर दिया है। क्वाड समूह-अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत-इंडो-पैसिफिक रणनीति का एक केंद्रीय स्तंभ बन चुका है। मालाबार जैसे नौसेना अभ्यास, खुफिया साझेदारी समझौते और तकनीकी हस्तांतरण सौदे भारत को एशिया में अमेरिका के सुरक्षा साझेदार के रूप में स्थापित करते हैं।

- **पर, अमेरिका की टैरिफ नीति में भारत विरोधी रूझान, भारत को चीन के नज़दीक धकेलता है।**
- **अतः भारत व चीन का रिश्ता, आपसी विश्वास पर आधारित नहीं, बल्कि आपसी राजनीतिक आवश्यकता के कारण पनपने को मजबूर है।**
- **इसी प्रकार भारत चीन द्वारा सीमा पर अपनाये गये आक्रामक रवैये से चौकन्ना होकर, अमेरिका के नज़दीक जाने की सोचने लगता है, क्वाड की संघीय सदस्यता (यू.एस., जापान, ऑस्ट्रेलिया व भारत को मैत्री ग्रुप की मैम्बरशिप), नौसैनिक अभ्यास, इन्टैलिजेन्स शेयरिंग के समझौते व टैक्नॉलोजी ट्रांसफर के अनुबन्धन, इसी प्रयास के नमूने हैं।**
- **इन दो विरोधाभासी दबावों के बीच भारत का अपनी कूटनीतिक नाव खेना, काफी नाज़ुक संतुलन का काम है।**

राजनीतिक रूप से, दोनों देश अपनी साझेदारी को लोकतंत्रों के मेल के रूप में प्रस्तुत करते हैं, भले ही दिल्ली घरेलू शासन पर उपदेश को अस्वीकार करता है। वहीं, अमेरिका भारत को अब चीन के साथ अपनी व्यापक प्रतिस्पर्धा में एक निर्णायक खिलाड़ी के रूप में देखने लगा है।

फिर भी, जहाँ राजनीति भारत को पश्चिम की ओर ले जाती है, वहीं अर्थव्यवस्था चीन के साथ मेल के लिए मजबूर करती है।

चीन भारत का सबसे बड़ा आयात स्त्रोत है, जो इलेक्ट्रॉनिक्स और दवाइयों से लेकर सौर ऊर्जा तक के उद्योगों के लिए आवश्यक घटक प्रदान करता है। भले ही भारत आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में प्रयासरत है, लेकिन वह फिलहाल और निकट भविष्य में चीनी घटकों से पूरी तरह अलग नहीं हो सकता। बहुपक्षीय स्तर पर, भारत अक्सर ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन में चीन के रुख के पक्ष में होता

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मोदी के खिलाफ टिप्पणी, तेजस्वी पर मुकदमा

ललितपुर 23 अगस्त। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ अभद्र टिप्पणी सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के जिलाध्यक्ष हरिश्चन्द्र रावत ने बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव पर एफआईआर दर्ज कराई है।

- **बिहार से भाजपा जिला अध्यक्ष ने यह मुकदमा दर्ज किया जिसमें आरोप है कि तेजस्वी ने सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की है।**

कोतवाली तालबेहट अंतर्गत मुहल्ला सरफयाना निवासी भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष हरिश्चंद्र रावत ने कोतवाली तालबेहट में एफआईआर दर्ज कराई, जिसमें बताया गया कि पीएम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

संक्षिप्त

मंत्री का कोटपूतली दौरा आज

कोटपूतली। राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), वन, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान सरकार संजय शर्मा 24 अगस्त 2025 को कोटपूतली-बहरोड़ के दौरे पर रहेंगे एवं विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे। प्रस्तावित कार्यक्रम अनुसार शर्मा रविवार को दोपहर 1 कलेक्ट्रेट सभागार में वन एवं पर्यावरण विभाग, कोटपूतली-बहरोड़ जिले की बजट घोषणाओं/ पौधारोपण व अन्य योजनाओं तथा विभागीय कार्यकलापों की समीक्षा बैठक लेंगे। साथ ही शर्मा कार्यक्रम अनुसार दोपहर 12 बजे कोटपूतली के दीप मैरिज गार्डन में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में भाग लेंगे एवं सायं 4.30 बजे विधायक तिजारा महंत बालकनाथ के दादाजी के निधन पर शोक संवेदना प्रकट करने ग्राम कोहराना पहुंचेंगे। इनके अलावा केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री एवं सांसद अलवर भूपेंद्र यादव प्रस्तावित कार्यक्रम अनुसार 24 अगस्त को कोटपूतली-बहरोड़ जिले के दौरे पर रहेंगे। यादव दोपहर 12:20 बजे नीमराना के माजरी कलां में पहुंचकर स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होंगे एवं दोपहर 1:30 बजे माजरी कलां में सीएसआई के शिलान्यास कार्यक्रम में भाग लेंगे। साथ ही दोपहर 2:15 बजे बहरोड़ के कोहराना पहुंचेंगे।

फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स की कार्यप्रणाली जानी

कोटपूतली। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओमप्रकाश सहारण ने किया फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स वैन का निरीक्षण कर फूड जांच और वैन उपकरणों का जायजा लेकर दी जा रही सुविधाओं की जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश प्रदान किए. एडीएम ने बताया कि फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण का एक पहल है जिसमें खाद्य पदार्थों की जांच करने वाली मोबाइल इकाइयाँ होती हैं, जो दूध, पानी और तेल जैसे पदार्थों में मिलावट की जांच करती हैं और आम नागरिकों, खाद्य व्यवसायों और खाद्य संचालकों के बीच खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और स्वस्थ खान-पान की आदतों के बारे में जागरूकता फैलाती है। उन्होंने बताया कि यह दूर-दराज और पहुंच से बाहर के इलाकों में भी खाद्य सुरक्षा अधिकारियों को निगरानी गतिविधियां करने में मदद करती है। एडीएम ने बताया कि यह एक बहुउद्देशीय वाहन है जो उपकरणों से सुसज्जित है, जैसे मिल्क एनालाइजर, हॉट एयर ओवन, डिजिटल वेइंग स्केल आदि. यह दूर-दराज और पहुंच से बाहर के इलाकों में भी खाद्य सुरक्षा अधिकारियों को निगरानी गतिविधियां करने में मदद करता है।

कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन आज

फुलेरा। नगर कांग्रेस कमेटी फुलेरा के तत्वावधान में विशाल कार्यकर्ता सम्मेलन रविवार को समीपवर्ती आकोदा स्थित लगरिया टीबा पर आयोजित किया जा रहा है। संगठन महामंत्री शैलेंद्र शर्मा ने बताया कि कार्यकर्ता सम्मेलन में फुलेरा विधायक विद्याधर सिंह चौधरी मुख्य अतिथि रहेंगे और कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद करेंगे। अब्दुल लतीफ कुरेशी ने बताया कार्यक्रम सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक रहेगा, जिसमें कार्यकर्ता सम्मेलन, अल्पाहार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, विचार गोष्ठी और सामूहिक सहभोज भी होगा।

रक्तदान शिविर शुरु

भरतपुर (निस)। भरतपुर स्थित विश्व शांति भवन पर प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के तत्वावधान में राजयोगिनी ब्र. कु. कविता दीदी के निर्देशन में रक्तदान शिविर का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सुभाष गर्ग, विधायक, भरतपुर रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजयोगिनी ब्र. कु. बबीता दीदी, सह प्रभारी, भरतपुर ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में घनश्याम शर्मा (अतिरिक्त जिला कलेक्टर, भरतपुर), विष्णु सैनी अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद, डॉ. मीनाक्षी गुप्ता थी।

नम्बर मिलाइए
9587884433

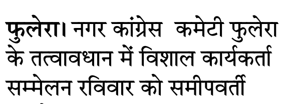

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

आरपीएफ महानिरीक्षक ज्योतिकुमार सतीजा की मौजूदगी में रेलवे सुरक्षा बल थाना व बैरक का निरीक्षण

फुलेरा। फुलेरा रेलवे सुरक्षा बल का सुरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सुरक्षा सम्मेलन को रेलवे सुरक्षा बल (उत्तर पश्चिम रेलवे) के महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त ज्योतिकुमार सतीजा तथा वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त जयपुर ओंकार सिंह ने सम्बोधित किया। महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त ज्योतिकुमार सतीजा ने रेलवे यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए, स्थानीय अधिकारियों व सुरक्षा बल के जवानों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

रेलवे सुरक्षा बल के सुरक्षा सम्मेलन में शिरकत करने के लिए रेलवे सुरक्षा बल (उत्तर पश्चिम रेलवे) के महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त ज्योतिकुमार सतीजा तथा वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त जयपुर ओंकार सिंह सुबह 10.50 बजे अरावली एक्सप्रेस ट्रेन से फुलेरा जंक्शन रेलवे स्टेशन पहुंचे, जहां रेलवे फुलेरा सुरक्षा बल थानाधिकारी विक्रम सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम ने अधिकारियों का स्वागत किया, उसके बाद रेल परिसर स्थित आरओएच कॉन्फ्रेंस हॉल में सुरक्षा सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें रेलवे सुरक्षा बल के अधिकारी, कर्मचारी मौजूद रहे। सम्मेलन के बाद महानिरीक्षक सतीजा ने आरपीएफ थाने व बैरक का विस्तृत निरीक्षण किया और थाने की व्यवस्थाओं का जायजा लिया, उसके बाद महिला बैरक में खाने की व्यवस्था की गई। उन्होंने इस अवसर पर मौजूद अधिकारियों को यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भी जारी किए। इस मौके पर फुलेरा आरपीएफ थाना प्रभारी एसआई विक्रमसिंह, एसआई राजेश सिंह, एसआई हरीश कनोडिया, एएसआई रामनाथ मीणा, एएसआईअशोक कुमार जरियाल, हेड कांस्टेबल दीपेंद्र सिंह शेखावत, गौरी शंकर, रविंद्र सिंह, ममता, सरोज भास्कर, सीमा शर्मा, सीताराम, कांस्टेबल महेंद्र पाल सहित अन्य स्टाफ मौजूद रहा। निरीक्षण के बाद महानिरीक्षक ज्योति कुमार सतीजा ने आरपीएफ थाना फुलेरा स्टाफ को 5000 हजार रुपए का ग्रुप रिवॉर्ड दिया गया।

फुलेरा में सुरक्षा सम्मेलन को महानिरीक्षक सतीजा ने सम्बोधित किया।

- निरीक्षण के बाद आरपीएफ थाना फुलेरा स्टाफ को 5000 हजार रुपए का ग्रुप रिवॉर्ड दिया गया

बैठक आयोजित

कोटपूतली। जिला कलक्टर के निर्देशानुसार वित्तीय समावेशन योजनाओं में शत-प्रतिशत संतृप्ति व पुन: सत्यापन के 90 दिवसीय कैंपेन के लिए बीएलबीसी बैठक का आयोजन सभी ब्लॉक में 20 से 22 अगस्त को किया गया। अग्रणी जिला प्रबंधक मोहन लाल मीना ने बताया कि बैठक का आयोजन प्रधानमंत्री जनधन योजना के तहत नये बचत खाते खोलने के साथ-साथ प्रधानमंत्री जनधन योजना में पूर्व में खुलें समस्त निष्क्रिय खातों को री केवाईसी के माध्यम से पुन: सत्यापन करके एक्टिवेट /संचालित करने, पीएमएसबीवाई, पीएमजेजेबीवाई और एपीवाई सहित अन्य वित्तीय समावेशन योजनाओं में वंचित व पात्र खाताधारकों का इनरोलमेंट अभियान 1 जुलाई से 30 सितंबर में आशानुरूप प्रगति लाने के लिए किया गया।

राज्य निर्वाचन आयोग निगम चुनाव के लिए तैयारी

- मतदाता सूचियों को लेकर विस्तृत दिशा निर्देश जारी कर दिए हैं।

शाहपुरा। पंचायतीराज संस्थाओं एवं नगरीय निकायों के चुनावों की तैयारी कर रहे जनप्रतिनिधियों के लिए खुशखबरी है। हाई कोर्ट के निर्णय के प्रदेश में पंचायतीराज संस्थाओं एवं नगरीय निकायों के चुनाव के इंतजार की घड़ियां जल्दी ही खत्म होने वाली है। इसके लिए राज्य निर्वाचन आयोग ने भी तैयारी कर ली है और शुक्रवार को मतदाता सूचियों को लेकर विस्तृत दिशा निर्देश जारी कर दिए है। सब कुछ ठीक रहा तो राज्य निर्वाचन आयोग अगले सप्ताह तक चुनाव का कार्यक्रम भी जारी कर सकता है। इस साल जनवरी में ही प्रदेश की अधिकांश ठाम पंचायतों, पंचायत समितियों एवं नगरीय निकायों का पांच साल का कार्यकाल पूरा हो चुका था। राज्य सरकार की ओर से परिसीमन की प्रक्रिया शुरू किए जाने के कारण इन संस्थाओं का कार्यकाल पूरा हो जाने के बावजूद इनमें प्रशासक नियुक्त किए थे लेकिन परिसीमन एवं पुर्नगठन का काम समय पर पूरा नही होने के कारण इनके चुनाव में छ: से भी ज्यादा की देरी हो गई है। 18 अगस्त को आए हाई कोर्ट के फैसले से प्रदेश में पंचायतों के चुनाव को लेकर विस्तृत दिशा निर्देश जारी कर दिए है। प्रदेश में पंचायतों के चुनाव के लिए राज्य निर्वाचन आयोग भी सक्रिय हो गया है। हाई कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि राज्य निर्वाचन आयोग छ: महिनों में चुनाव करवाए। इसलिए अब सरकार और निर्वाचन आयोग को जल्दी ही चुनाव भी करवाने होंगे लेकिन राज्य सरकार ने पिछले बजट में वन स्टेट वन इलेक्शन का फॉर्मूला लागू करने का निर्णय भी पूरा होता दिखाई नही दे रहा है। संविधान के अनुच्छेद 243(ई) में स्पष्ट प्रावधान है कि पंचायतीराज संस्थाओं का कार्यकाल पांच साल का होगा और अधिकतम छ:महीने तक बढाया जा सकता है तथा अनुच्छेद 243 (यू) में नगरीय निकायों का कार्यकाल भी पांच साल निर्धारित किया गया है। प्रदेश में बार बार चुनावों को लेकर लगने वाली आचार संहिता के कारण राज्य सरकार ने वन स्टेट वन इलेक्शन लागू करने की बात कही थी लेकिन मौजूदा हालात में वन स्टेट वन इलेक्शन की तर्ज पर चुनाव करवाया जाना संभव नही लग रहा है क्योंकि प्रदेश में कई ठाम पंचायत ऐसी है जिनका कार्यकाल इस साल जनवरी में ही पूरा हो गया और कई ठाम पंचायतों का कार्यकाल अगले साल अक्टूबर में पूरा होगा। सरकार ने भी कानून में कोई प्रावधान नही किया गया है। जिससे वन स्टेट वन इलेक्शन करवाया जाना संभव हो सके। हाई कोर्ट जयपुर के एडवोकेट एवं प्रदेश कांठोस कमेटी के प्रवक्ता संदीप कलवानिया ने बताया कि वर्ष 2022 में सुरेश महाजन बनाम मध्यप्रदेश एवं अन्य के मामलें तथा 11 नवंबर 2024 को स्टेट ऑफ पंजाब बनाम बेअंत कुमार एवं अन्य के मामलें में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पुर्नगठन एवं परिसीमन के नाम पर पंचायतों के चुनाव नही टाले जा सकते है।

शराब गोदाम पर आगजनी के मामले में तीन माह से फरार चल रहा अभियुक्त गिरफ्तार

कोटपूतली। निकटवर्ती ग्राम खरकडी मोड स्थित शराब गोदाम पर विगत 24 व 25 मई की मध्य रात्रि को हुई आगजनी के मामले में फरार चल रहे अभियुक्त नितिन उर्फ नाजिम को स्थानीय थाना पुलिस ने गिरफ्तार करने में सफलता हांसिल की है। एसएचओ राजेश शर्मा ने जानकारी देते हुये बताया कि विगत 25 मई को ग्राम पनियाला निवासी धर्मपाल गुर्जर ने दर्ज करवाया था कि खरकडी मोड स्थित शराब गोदाम पर पीडित व उसका साथी रंगलाल देखरेख का कार्य करते है। 24 मई की रात्रि को 11.30 बजे गोदाम में रंगलाल सो रहा था। तभी ग्राम गोपालपुरा निवासी नाजिम पुत्र श्योनारायण व धन्ना समेत तीन - चार लोग आये एवं 50 हजार रूपयों की फिरौती की मांग करते हुये गंदी गालियां बकने लगे। मना करने पर गोदाम में आग लगा दी, जिससे रंगलाल का चेहरा झुलस गया। जिसकी बडी मुश्किल से जान बचाई, इसके बाद वे रूपये तैयार रखने की बात कहकर दुबारा आने की धमकी देकर चले गये। इसके बाद रात्रि करीब 12.40 बजे बोलेरा गाडी में आकर दो-तीन राउंड फायर कर पुलिस में मुकदमा दर्ज करवाने पर अंजाम भुगतने की चेतावनी देकर चले गये। इसके अलावा विगत 22 मई को ठाम टापरी निवासी राजेश गुर्जर जो कि बहरोड़ स्थित एक निजी बैंक में लोन रिकवरी एजेंट का कार्य करता है। उक्त पीडित राजेश गुर्जर ठाम गोपालपुरा में अपने साथी बाला का नांगल निवासी महेश गुर्जर के साथ बाईक पर सवार होकर प्रीतम पुत्र ओमप्रकाश वाल्मिकी के घर लोन की किश्त वसूलने के लिये गया था। जहां उसका भाई धन्ना मौजूद था। प्रीतम के बारे में पूछने पर वह गुस्से में आकर कहने लगा कि तुम कौन होते हो हमारे घर आकर रूपये मांगने वाले। इसी दौरान मारपीट पर आमदा हो गया। दोनों व्यक्ति जब वापस जाने लगे तो धन्ना वाल्मिकी ने बैंककर्मी राजेश गुर्जर पर फायरिंग कर दी। एसएचओ राजेश शर्मा ने जानकारी देते हुये बताया कि उक्त अभियुक्त धन्ना वाल्मिकी को हथियार नितिन उर्फ नाजिम के द्वारा ही उपलब्ध करवाया गया था। पुलिस ने दोनों ही प्रकरणों में फरार चल रहे अभियुक्त नितिन उर्फ नाजिम (28) पुत्र श्योनारायण गुर्जर निवासी ठाम गोपालपुरा, कोटपूतली को गिरफ्तार कर लिया। आर्म्स एक्ट के प्रकरण में ही पुलिस द्वारा उसे पृथक से गिरफ्तार किया गया है। उक्त अभियुक्त नितिन उर्फ नाजिम हिस्ट्रीशीटर अपराधी है। जिस पर कोटपूतली, पनियाला, हरियाणा के नारनौल समेत अन्य थानों में गंभीर वारदात के करीब 15 प्रकरण दर्ज है।

कोटपूतली समेत आसपास के थानों में हिस्ट्रीशीटर अपराधी नितिन उर्फ नाजिम पर एक दर्जन से ज्यादा प्रकरण दर्ज हैं।

- खरकडी मोड स्थित शराब गोदाम पर गत 24 व 25 मई की मध्य रात्रि को की थी आगजनी

कलेक्टर ने बारिश के हालातों का जायजा लिया

टोंक जिले में हुई भारी बारिश के बीच कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने उपखंड टोंक, निवाई और उनियारा का दौरा किया।

- राहत एवं बचाव कार्यों की मॉनिटरिंग

टोंक। जिले में हुई भारी बारिश के बीच शनिवार को जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल एवं पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार मीना ने उपखंड टोंक, निवाई और उनियारा का दौरा कर जल भराव क्षेत्रों में चल रहे राहत एवं बचाव कार्यों का जायजा लिया। साथ ही ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को जलमग्न क्षेत्र में फंसे लोगों को निकालकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर एवं एसपी ने निवाई उपखंड के ग्राम वनस्थली में भारी बारिश के कारण जलमग्न हुए घरों एवं आम रास्तों का जेसीबी में बैठकर जायजा लिया, उन्होंने निवाई उपखंड अधिकारी रामकरण सिंह को एसडीआरएफ और सिविल डिफेंस की टीम की मदद से लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के निर्देश दिए। साथ ही उनके लिए चाय, बच्चों के लिए दूध,पीने के पानी और भोजन की व्यवस्था कर राहत पहुंचाने के लिए निर्देशित किया। इस दौरान लोगों ने जिला कलेक्टर से उनके घरों के सामान खराब होने के बारे में बताया।

अग्रसेन जयंती महोत्सव की तैयारी

कोटपूतली। कस्बे के अग्रसेन भवन में अग्रवाल समाज समिति की बैठक अध्यक्ष एड. योगेश शरण बंसल की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसमें श्री अग्रसेन जयंती महोत्सव पर होने वाले सात्पाहिक विभिन्न कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गई एवं कार्यक्रमों के स्वरूप को अंतिम रूप दिया गया। मीडिया प्रभारी हेमंत मोरीजावाला ने बताया की 17 से 20 सितंबर तक चार दिवसीय कार्यक्रम व प्रतियोगितायें महिला मंडल के द्वारा अग्रसेन भवन में आयोजित की जायेगी। जिसमें 17 सितम्बर को रंगोली व पोस्टर मेकिंग (13 से 18 वर्ष के बालक बालिकाओं के लिये) व नॉन फायर कुकिंग (10 से 18 वर्ष के बालक बालिकाओं के लिये), 18 सितम्बर को फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता (02 से 05 व 06 से 10 वर्ष के बालक बालिकाओं) व डांस कम्पीटिशन (05 से 11 व 12 से 18 वर्ष के बालक बालिकाओं) एवं एक मिनट गेम (06 से 12 वर्ष के बच्चों के लिये) 19 सितम्बर को एक मिनट गेम, म्यूजिकल चेयर (18 वर्ष से अधिक) अनुपयोगी सामान से उपयोगी सामान वस्तु बनाना (10 से 15 वर्ष के बच्चों के लिये) फैसी पैकिंग (13 वर्ष से अधिक महिलाओं व बालिकाओं के लिये) निबंध प्रतियोगिता (06 से 12 वर्ष के बच्चों के लिये) 20 सितम्बर को भव्य अठा मेला, डांडिया (18 वर्ष से अधिक की महिलाओं के लिये) व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता होगी। 21 सितम्बर को समाज का वार्षिक अधिवेशन व प्रतिभा सम्मान समारोह होगा एवं श्री अग्रसेन जयंती की पूर्व संध्या पर सायं 07:15 बजे से एक शाम (महाराज श्री अग्रसेन जी के नाम) नृत्यमयी व संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन अग्रवाल समाज समिति द्वारा अठासेन तिराहा पर किया जायेगा। 22 सितम्बर को श्री अग्रसेन जी महाराज की विशाल शोभायात्रा श्री अग्रसेन भवन से प्रारंभ होकर नगर के विभिन्न मार्गो से होती हुई अग्रसेन मंदिर अग्रसेन कटला में पहुंचेगी, जहां महाआरती होगी। इसके उपरांत शोभायात्रा आजाद चौक होते हुए अग्रसेन तिराहा पर पहुंचेगी, जहां भव्य आतिशबाजी का प्रदर्शन किया जायेगा तथा श्री अग्रसेन महाराज की आरती की जायेगी।

सार-समाचार

गणेश मेला महोत्सव शुरु

राजगढ़। कस्बे के गणेश पोल स्थित रिद्धि सिद्धि गणेश मंदिर में ध्वज यात्रा के साथ पांच दिवसीय गणेश मेला महोत्सव का शनिवार को आस्था एवं विश्वास के साथ शुभारंभ हुआ। ध्वजा रैली को अध्यक्ष बसंत गुप्ता एवं स्कूली बच्चों ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर संपूर्ण माहौल गणेश भक्ति से ओतप्रोत जय गणेश के नारों से गूंज उठा। उत्साह एवं उल्लास से लवरेज सैकडो स्कूली छात्र छात्राओं ने हाथों में ध्वज लेकर प्रमुख बाजारों से रैली निकाली। पंडित अजय शर्मा ने बताया कि पांच दिवसीय गणेश महोत्सव में 25 अगस्त को प्रात: 7:15 बजे रामायण पाठ का शुभारंभ, 26 अगस्त को हवन पूजा, गणेश जी का अभिषेक, 27 अगस्त को भव्य श्रृंगार, भव्य आरती, भव्य झांकियां एवं महा आरती सहित अनेक कार्यक्रम होंगे। गणेश मेला महोत्सव के दौरान आसपास के क्षेत्र में विशेष रंगीन रोशनी एवं सजावट प्रमुख आकर्षण होगी। इस अवसर पर विशाल मेले का आयोजन होगा। इस अवसर पर पंडित अजय शर्मा, राहुल शर्मा सहित अन्य प्रमुख लोग मौजूद रहे।

जलदाय विभाग आत्मनिर्भर के बजाय बीसलपुर पर ही निर्भर

सांभरझील, (निसं)। इस बार मानसून ने खुलकर मेहरबानी दिखाई है। जिन कुओं का जलस्तर पूरी तरह से घट गया था उनका लेवल 40 से 50 फीट ऊपर आ गया है। बारिश से भारी पानी की आवक होने के कारण आसपास के क्षेत्र के कुओं का जिस प्रकार जल स्तर बढा है उसकी वजह से किसानों के चेहरे खिले हुए है। ठाम सिवानिया में विभाग के करीब 20 और सांभर क्षेत्र में स्थित करीब 8 सरकारी कुओं में जिस हिसाब से जबरदस्त पानी की मात्रा बढी है वह क्षेत्र के लोगों की प्यास बुझाने के लिए 2 साल से भी अधिक समय तक पर्याप्त है। सूत्र बताते हैं कि यदि 24 घंटे भी पेयजल सप्लाई की जाए तो भी कुओं का जलस्तर अच्छी स्थिति में बना रहेगा। सूत्र बताते हैं कि निवर्तमान अशोक गहलोत की सरकार के कार्यकाल के दौरान करीब 4 साल पहले इन कुओं की स्थिति को बेहतर बनाने व पानी के लिए बल्लियां व अन्य कार्य के लिए करीब 50 लाख रुपए मंजूर किए गए थे, उस दौरान कितना काम हुआ यह तो विभाग ही जाने लेकिन इतना जरूर है कि जिस काम के लिए सरकारी धनराशि मंजूर की थी।

वाटर कूलर लगाया

भरतपुर (निस)। अलायंस क्लब भरतपुर प्रान्त 120एन भरतपुर द्वारा धौरमुई पेट्रोल पम्प पर वाटर कूलर लगाया गया।

कृत्रिम अंग उपकरण चिन्हिकरण शिविर 10 को

फुलेरा। राज्य सरकार की बजट घोषणा एवं राष्ट्रीय वयोश्री योजना तथा एडीप योजना के अन्तर्गत सक्षम जयपुर अभियान का आयोजन फुलेरा नगर पालिका परिसर में 10 सितम्बर को किया जायेगा। पालिका ईओ सूर्यकांत शर्मा ने बताया कि शिविर में 60 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धजन तथा 40 प्रतिशत से अधिक विकलांगता से ग्रसित विशेष योग्यजनों को उनकी आवश्यकता एवं पात्रता अनुसार कृत्रिम अंग / सहायक उपकरण (ट्राई साईकिल, व्हीलचेयर, कैलिपर, वॉकिंग स्टीक, कमर की बैल्ट, सवाईकल कॉलर, बैशाखी, वॉकर, ट्राईपोड, श्रवण यंत्र, कृत्रिम डेन्चर और चश्में) एवं अन्य उपकरण करवाने के लिए नगर पालिका परिसर में शिविर का आयोजन किया जा रहा है। 60 वर्ष या अधिक उम्र के वृद्धजन हेतु आवश्यक दस्तावेज पैंशन स्वीकृति आदेश की स्वप्रमाणित प्रति या 15000/-मासिक से अनधिक का आय प्रमाण पत्र फोटोयुक्त पहचान पत्र, आधार कार्ड एवं वोटर आईडी या राशनकार्ड विशेष योग्यजन हेतु आवश्यक दस्तावेज 40 प्रतिशत या अधिक का डिजिटल दिव्यांग प्रमाण पत्र/यूडीआईडी कार्ड फोटोयुक्त पहचान पत्र, आधार कार्ड या वोटर आईडी आय प्रमाण पत्र/पेंशन स्वीकृति आदेश की कापी आवश्यक है।

सार्वजनिक सूचना जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर

क्रमांक:-जविप्रा/उपा/जोन-13/2025 राजकाज-05989/डी-1897 दि. 22.08.2025

आवेदक श्री प्रभूदयाल पुत्र गणेश लाल मीणा, जरिये मुख्त्यारआम सुनील कुमार टोलिया पुत्र श्री भीम कुमार टोलिया, निवास- प्लॉट नं. एस-1, सुभाष मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर द्वारा राजस्व ग्राम बिलपुर, तहसील आमेर के खसरा नम्बर 733, 734, 736/ 932, 803, 818/ 952, 820/951 कुल किता 6 कुल रकबा 2.15 हैक्टेयर 90ए शुदा भूमि पर फार्म हाउस प्रयोजनार्थ एकल पट्टा मानचित्र अनुमोदन करने हेतु आवेदन किया गया है। जिसके क्रम में प्राधिकरण की बी.पी.सी. (एल. पी.) समिति की 394वीं बैठक दिनांक 06.05.2025 में अधिसूचना दिनांक 10.08.2020 की पालना में आवेदित भूमि के लगते हुए सड़क का मार्गाधिकार जो कि जयपुर से चन्दवाजी हाईवे से ग्राम बीलपुर को जोडती है को 18 मीटर कायम किये जाने का निर्णय लिया गया है। यदि उक्त निर्णय पर किसी को कोई आपत्ति हो तो इस विज्ञप्ति प्रकाशन के 10 दिवस की अवधि में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय जोन-13, जविप्रा में अपने दस्तावेजों सहित आपत्ति प्रस्तुत करें। उक्त कालावधि में आपत्ति/ सुझाव प्राप्त नही होने पर नियमानुसार आगामी कार्यवाही अमल में लायी जावेगी। सूचित रहे। यह विज्ञप्ति आज दिनांक 22.08.25 को जारी की गई है। उपायुक्त जोन-13, जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर

क्रमांक-6516 दिनांक-21/08/2025

जाहिर आम-सूचना राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना मे आवास संख्या 76/295 (MIG-A), (एरिया 72.000 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री हरवंस सिंहगील पुत्र श्री पूरण चन्द्र गील को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 1683 दिनांक 14.05.2013 एवं संशोधित आवंटन पत्र क्रमांक 9685 दिनांक 04.12.2014 को जारी किया गया। श्री हरवंस सिंहगील द्वारा श्री दिनेश मित्तल पुत्र श्री प्रेमचन्द मित्तल को दिनांक 11.02.2015 को मुख्त्यारनामा आम धारक नियुक्त किया गया। श्री दिनेश मित्तल के द्वारा मुख्त्यारनामा आम की हैसियत से श्री हरवंस सिंहगील के पक्ष मे पंजीयन प्रपत्र उप पंजीयक, सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहाँ दिनांक 15.05.2015 को पंजीकृत करवाये गये। श्री दिनेश मित्तल द्वारा मुख्त्यारनामा आम की हैसियत से उक्त आवास को दिनांक 01.06.2015 के द्वारा श्री कैलाश गुप्ता पुत्र स्व. श्री भगवान सहाय को विक्रय कर उप पंजीयक सांगानेर-द्वितीय, जयपुर के यहां विक्रय पत्र पंजीकृत करवाया गया। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपत्ती हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय मे 7 दिवस मे अपनी आपत्ति प्रस्तुत करे अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड मे नाम दर्ज करने मे किसी को कोई आपत्ति नही है, श्री कैलाश गुप्ता पुत्र स्व. श्री भगवान सहाय का नाम मण्डल रिकॉर्ड मे दर्ज कर दिया जावेगा।

सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त-प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

खोया पाया

प्लॉट नंबर 14 रत्न सागर ग्राम बलरामपुर उर्फ खेजड़ो का बास तहसील सांगानेर का मूल जेडीए पट्टा .मूल विक्रय पत्र दिनांक 8 2.2019 , मूल विक्रय पत्र दिनांक 16.6 2022 रूप रजतडेवलपर्स एलएलपी जरिए पार्टनर अशोक कुमार जैन के नाम से एसएमएस हॉस्पिटल के पास गिर गए है मिलने पर सूचित करें अशोक कुमार जैन मोबाइल नंबर 91164 699 99

मेरे भूखण्ड सं- 67 जे.डी.ए. की योजना डेरी फार्म सूरजपुरा भट्टावाला जयपुर का जे.डी.ए. से जारी मूल आवंटन-पत्र कहीं गुम हो गया है सूचित करेः जगदीश चौधरी मो- 9829281824

नाम परिवर्तन

मैंने मेरा नाम हिना अलीम (Hina Aleem) पत्नी नईमुद्दीन से बदलकर हिना नईम (Henna Naim) रख लिया है भविष्य में मुझे हिना नईम (Henna Naim) के नाम से जाना जावे। पता- 755 कैप्टन फेज मोहम्मद की गली, बिसातियो का मोहल्ला, रामगंज, जयपुर

मैंने अपना नाम वैभव गुप्ता से बदलकर वैभव कुमार गुप्ता रख दिया है भविष्य में मुझे वैभव कुमार गुप्ता के नाम से जाना जावे। उपरोक्त दोनों नाम मेरे स्वयं के ही हैं। A-36 मालवीय नगर जयपुर

I Mithun Sharma S/o Mr. Ravi Kumar Sharma resident of Ravi Vilas, Harbaksh Mohalla, Alwar, Rajasthan that I have changed my name from Mithun Kumar Sharma to Mithun Sharma. In future called me my name Mithun Sharma for all purposes

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर

राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस

समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को

मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2025/535

चूंकि प्रार्थी श्री AMIT SHARMA, DEVIPURA BALAJI MANDIR KE PASS, SIKAR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत प्रन्यास रामायण विहार संस्थान, PINKCITY COLLEGE OF NURSING, NEAR PAL WALE BALAJI, DHAKA NAGAR, SIRSI ROAD, JAIPUR, RAJASTHAN-302041 के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।

अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।

और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।

आज दिनांक 19.08.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।

आइदा तारीख पेशी 28.10.2025

मोहर अदालत

सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)

व्यवहार मिश्रित (मुत्तफरिक) वाद सं. 03/ 25

विषय- उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र।

प्रार्थी नाम सत्यनारायण शर्मा पुत्र चांदमल शर्मा जाति ब्राह्मण

विवाद स्थान ग्राम-देवथला, पुलिस थाना गोविन्दगढ, तह. चौमू

मृतक तीजा देवी की सम्पत्ति के विषय में।

पेशी दिनांक- 27.08.2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम तीजा देवी पत्नि स्व.श्री चांदमल शर्मा जाति ब्राह्मण निवासी देवथला तह. चौमू का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र, प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रिेशन, प्रदान किया जावें।

अतः उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 27 माह 08 सन् 2025 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।

आज दिनांक... माह... सन्... को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।

मोहर अदालत

आज्ञा से-अपर जिला न्यायाधीश
चौमूँ-जयपुर, जिला-जयपुर

विश्वविद्यालय महारानी महाविद्यालय

रामसिंह रोड, जयपुर, दूरभाष: 2373628, फैक्स: 2371918 ई-मेल : maharanicollegejaipur@gmail.com

क्रमांक :- विविमम/2025/733 दिनांक :- 21/08/2025

कैंटीन एवं वाहन पार्किंग संचालन हेतु निविदा

विश्वविद्यालय महारानी महाविद्यालय में कैटीन एंव पार्किंग के संचालन हेतु मोहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती है कैटीन एवं पार्किंग संचालन हेतु इच्छुक फर्म / व्यक्ति निविदा प्रपत्र राशि रूपयें 500/- चालान के माध्यम से जमा करवाकर सरकारी व विश्वविद्यालय की वेबसाईट से 28.08.2025 तक प्राप्त कर सकते है। निविदा प्रपत्र धरोहर राशि रू. 10,000/- (प्रत्येक निविदा हेतु) प्राचार्या, विश्वविद्यालय महारानी महाविद्यालय, जयपुर के नाम से बैंक ड्राफ्ट सहित दिनांक 29.08.2025 दोपहर 12.00 बजे तक महाविद्यालय में प्रस्तुत कर सकते है। उपरोक्त निविदाएँ दिनाक 29.08.2025 को दोपहर 2.30 बजे उपस्थित आवेदकों के समक्ष खोली जायेगी। बिना धरोहर राशि के निविदाओं पर विचार नहीं किया जाएगा। अन्तिम निर्णय महाविद्यालय प्रशासन का होगा।

NIB Code : UDA2526A0024
UBN : URA2526SSOB00062 (Parking)
UBN : URA2526SSOB00063 (Canteen)

राज.संवाद/सी/25/8629 प्राचार्या

लोगों से अपहरण-मारपीट कर नकदी छीनने वाली गैंग पुलिस के हत्थे चढ़ी

पुलिस ने गिरोह में शामिल फेक गर्लफ्रेंड व कार ड्राइवर को दबोचा

गलता गेट थाना पुलिस ने अपहरण और मारपीट कर रुपये छीनने वाली गैंग का पर्दाफाश किया।

जयपुर (कासं)। गलता गेट थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अपहरण और मारपीट कर रुपये छीनने वाली गैंग का भंड़ाफोड़ किया है। पुलिस ने गैंग में शामिल फेक गर्लफ्रेंड व कार ड्राइवर को गिरफ्तार किया है।

पुलिस जांच में सामने आया कि

■ **गलता गेट पुलिस इस मामले में फरार बदमाशों की तलाश में दबिश दे रही है**

गर्लफ्रेंड बनवाकर अपहरण कर लूट की योजना उसके साले ने की थी। मारपीट कर साले ने अपने साथियों के साथ मिलकर ऑनलाइन रुपए ट्रांसफर करवाए और फिर झूठे मामले में फंसाने की धमकी दी। वहीं पुलिस इस मामले में फरार बदमाशों की तलाश में दबिश दे रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) करन शर्मा ने बताया कि गलतागेट थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अपहरण और मारपीट कर रूपये छीनने वाली गैंग की फेक गर्लफ्रेंड दर्शिका कुमारी बैरवा (23) निवासी सपोटरा जिला करौली हाल लालकोठी स्कीम ज्योति नगर और कार ड्राइवर वी.पी सिंह गुर्जर (22) निवासी बामणवास जिला सवाईमाधोपुर हाल थड़ी मार्केट मानसरोवर को गिरफ्तार किया है। पकडी गई आरोपितफेक गर्लफ्रेंड दर्शिका कुमारी ने योजना के तहत बातचीत कर पीड़ित से दोस्ती की और मिलने के बहाने बुलाकर पीड़ित को धोखे से कार में बैठाकर ड्राइवर वी.पी सिंह के साथ मिलकर अपहरण किया था। इस मामले में मास्टर माइंड साले रविन्द्र और उसके साथियों की तलाश की जा रही है।

थानाधिकारी उदय सिंह ने बताया कि 19 अगस्त को मालपुरा गेट निवासी युवक ने मामला दर्ज करवाया था कि 18 अगस्त को दशु नाम की लड़की ने कॉल कर मिलने के लिए डब्ल्यूटीपी बुलाया। जहां कार में बैठी मिली लड़की ने उसकी बाइक को पार्किंग में खड़ा करवा दिया और कार में उसे साथ में बैठाकर ड्राइवर को खोले के हनुमानजी चलने की कहा। दर्शन कर वापस लौटते समय कुछ ही दूरी पर चार-पांच लड़कों ने उनकी कार रोक ली। उसमें उसका साला रविन्द्र भी था, जिसने सिर पर तौलिया डाल रखा था। दोनों तरफ के गेट खोलकर उसके मुंह में कपड़ा ठूंसकर कार में ही डालकर उसका अपहरण कर लिया। साले रविन्द्र ने पिस्तौल तानकर जान से मारने की धमकी दी। मारपीट कर लड़की के मोबाइल नंबर पर ऑनलाइन रुपए ट्रांसफर करवा लिए। दूसरी गाड़ी में पटककर उसे बसवा के पास पहाड़ियों में ले गए। मारपीट कर लड़की के साथ आपत्तिजनक फोटो खींच झूठे केस में फंसाने की धमकी दी। जहां मौका पाकर भागकर ट्रेन में बैठकर जयपुर आया और पुलिस को जानकारी दी।

"काव्य कथा" में सुप्रसिद्ध नृत्यांगना पद्मश्री गीता चंद्रन बांधेंगी समां

जयपुर । राजधानी जयपुर में 25 अगस्त को संगीत, भाव और कहानियों से भरी एक खास शाम का गवाह बनेगा। सुप्रसिद्ध नृत्यांगना पद्मश्री गीता चंद्रन सोमवार को शाम 6:30 बजे राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर के तत्वावधान में आयोजित होने वाले 'काव्य कथा' में नाट्यय वृक्ष डांस कलेक्टिव के साथ भरतनाट्ययम प्रस्तुतियां देंगी।

राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर के मुख्य सभागार में आयोजित होने वाली काव्य कथा में दर्शकों को शिव स्तुति, गोविंद वंदना, ओंकारा करिणी, कृष्ण को सुनाई जाने वाली लोरी के रूप में रामायण की पुर्नकथा, तिलाना एवं वनमाली सरीखी बेजोड़ प्रस्तुतियां देखने का अद्वितीय अवसर मिलेगा। पद्मश्री गीता चंद्रन के साथ नाट्यय वृक्ष डांस कलेक्टिव की नृत्यांगनाएं राधिका कथल, मधुरा भ्रुशुंडी, सौम्यलक्ष्मी नारायणन और यादवी शकदर मेनन भी प्रस्तुतियां देंगीं। लंबे समय से साथ सीखने और अभ्यास करने के कारण गहरी समझ और भरोसे के साथ इन कहानियों को मंच पर सजीव करेंगी।

"जयपुर-खाटूश्यामजी" रूट पर चल रही अवैध बसों पर शिकंजा

प्रादेशिक परिवहन विभाग द्वितीय ने दो दिन कार्रवाई कर 10 लाख रु. जुर्माना वसूला, 26 बसें जब्त कीं

जयपुर (कासं)। प्रादेशिक परिवहन विभाग द्वितीय ने जयपुर -खाटू श्यामजी मार्ग पर चल रहीं अवैध बस संचालकों के खिलाफ दो दिवसीय विशेष प्रवर्तन अभियान के तहत कार्रवाई करते हुए 26 बसों को जब्त कर 10 लाख रुपए का जुर्माना वसूला। अवैध बस संचालन के विरुद्ध विशेष प्रवर्तन अभियान की कार्यवाही सचिव, परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग, सुची त्यागी के निर्देशन पर की गई।26 बसों को बिना परमिट संचालन, कर चोरी, अधिक सवारी, अनधिकृत बॉडी परिवर्तन, बीमा और फिटनेस के अभाव में जब्त किया गया है और 10 लाख से अधिक कर एवं जुर्माना वसूला गया।

इस प्रवर्तन अभियान की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि पहली बार जब्त वाहनों के यात्रियों को तुरंत ही आरक्षित बसों में स्थानांतरित करने की सुव्यवस्थित प्रक्रिया अपनाई गई।

प्रादेशिक परिवहन विभाग की टीम ने जयपुर -खाटू श्यामजी मार्ग पर अवैध बस संचालकों पर कार्रवाई की।

जब्त वाहनों में बैठे यात्रियों को तत्काल आरक्षित बसों में बैठा कर उनके गंतव्य तक पहुँचाया गया। इस प्रक्रिया में जब्त वाहनों के स्वामियों से शासन द्वारा अधिसूचित दरों पर किराया वसूल कर सीधे आरक्षित बसों के स्वामियों को दिलाया गया। इस कदम से यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई और मौके पर अव्यवस्था या विरोध की संभावना पूरी तरह समाप्त हो गई।

दुपहिया वाहन चोर गिरफ्तार

जयपुर । श्याम नगर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले एक वाहन चोर को गिरफ्तार किया है और जो एक पीजी हॉस्टल में छिपा था। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की एक बाइक भी बरामद की है। पुलिस जानकारी में आया कि गिरफ्तार आरोपित धौलपुर में अवैध हथियार से फायरिंग मामले में वांछित है और उस पर पांच हजार रुपये का इनाम भी घोषित है। जो फरारी काटने के दौरान बाइक चोरी कर बेचने का काम कर रहा था। थानाधिकारी दलबीर सिंह ने बताया कि दुपहिया वाहन (बाइक) चोरी में आरोपित लवकुश गुर्जर उर्फ काना (22) निवासी कंचनपुर जिला धौलपुर को गिरफ्तार किया है।

सार-समाचार

कबीर कुरैशी निर्विरोध निर्वाचित

जयपुर (कासं)। राजस्थान राज्य मंत्रालयिक कर्मचारी महासंघ, जिला शाखा जयपुर के अधीन विभागीय समिति, निदेशालय रोजगार सेवा राजस्थान, जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए सम्पन्न हुए चुनाव में कबीर कुरैशी निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए। निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश सैनी ने निर्वाचन परिणाम की औपचारिक घोषणा करते हुए कहा कि समिति को एक ऊर्जावान एवं अनुभवी नेतृत्व प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर राजस्थान राज्य मंत्रालयिक कर्मचारी महासंघ, जिला शाखा जयपुर के समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने कुरैशी को बधाई एवं शुभकामनाएँ दी।

दो दिवसीय गणपति महोत्सव 26 से

जयपुर । दिल्ली रोड स्थित बंगाली बाबा आत्माराम ब्रह्मचारी गणेश मंदिर में श्री महागणपति महोत्सव आगामी 26 व 27 अगस्त को धूमधाम से मनाया जाएगा। इस दौरान दुग्धाभिषेक, श्रृंगार, पंचामृत अभिषेक, आरती व भजन संध्या के सहित कई धार्मिक आयोजन होंगे। महोत्सव की तैयारियां जोर-शोरो से चल रही है। मंदिर प्रबंध समिति के संरक्षक रघुवीर शरण अग्रवाल,अध्यक्ष नारायण लाल अग्रवाल व उपाध्यक्ष व संयोजक संजय पतंगवाला ने बताया कि महोत्सव के एक दिन पूर्व 25 अगस्त को सुबह 9 बजे ध्वजा अर्पण के साथ श्री महागणपति महोत्सव की शुरुआत होगी। उन्होंने बताया कि महोत्सव के तहत 26 अगस्त को सुबह 9 बजे प्रथम पूज्य का पंचामृत अभिषेक किया जाएगा। इसके बाद सिंजारा पर्व मनाया जाएगा। इस मौके पर सौभाग्य देवी पूजन,चन्द्रार्चन व मेहंदी,सौभाग्य सामग्री का अर्पण किया जाएगा। इस मौके पर करीब 60 के आसपास मेहंदी कलाकार दिन भर में करीब 900 के महिलाओं को मेहंदी लगाएगी। इस अवसर पर भक्तों को मेहंदी वितरित की जाएगी। महामंत्री गजेन्द्र लूणी वाल व कोषाध्यक्ष विष्णु कुमार अग्रवाल ने बताया कि गणेश चतुर्थी 27 अगस्त को मनाई जाएगी। इस मौके पर सुबह 5 बजे मोदक अर्पण के बाद दोपहर 1 बजे महाआरती व बैंड वादन के बाद शाम को 6 बजे भजन संध्या का आयोजन होगा। इस अवसर पर स्थानीय कलाकार भजनों की प्रस्तुति देंगे। इस मौके पर भक्तों के लिए प्रसादी तैयार की जा रही है जिसमें 900 किलो चीनी,300 किलो के आसपास बेसन व 30 पीपी घी का उपयोग किया जाएगा।

दो चेन स्नैचर पुलिस के हत्थे चढ़े

जयपुर । जवाहर सर्किल थाना पुलिस ने शहर में चेन स्नेचिंग की वारदातों को अंजाम देने वाले दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित स्नेचिंग की वारदात को अंजाम देने से पहले बाइक चोरी करते थे और फिर पुलिस को गुमराह करने के लिए ओएलएक्स पर देखकर फेक नंबर प्लेट चोरी की बाइक पर लगाते थे। पुलिस फिलहाल गिरफ्तार दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (पूर्व) संजीव नैन ने बताया कि जवाहर सर्किल थाना पुलिस ने शहर में दो चेन स्नेचिंग की वारदातों को अंजाम देने वाले अजीत मीणा उर्फ छोटु उर्फ चिलवा उर्फ अमन (21) निवासी बाड़ी सदर धौलपुर हाल सदर करौली और अरबाज उर्फ कीडा (21) निवासी कोतवाली धौलपुर को गिरफ्तार किया है।

"मां अन्नपूर्णा भंडारे" को 8 वर्ष पूर्ण हुए

जयपुर । वीकेआई रोड नंबर 5 स्थित श्री विश्वेश्वर महादेव मंदिर में हरि ओम जन सेवा समिति द्वारा संचालित मां अन्नपूर्णा दैनिक भंडारे को चलते हुए 23 अगस्त को आठ साल पूर्ण हुए। इस उपलक्ष्य में समिति के संरक्षक और संस्थापक राजेन्द्र सदानंद महाराज के सान्निध्य में विशाल भजन , सम्मान समारोह और प्रसादी का आयोजन किया गया। मनोज शर्मा , शंकर शर्मा एवं विकास सैनी साथी कलाकारों के साथ भजनों की स्वर लहरियां बिखेरी। इस मौके पर भंडारा संचालन में सहयोग करने वाले भामाशाहों और सहयोगियों का सम्मान किया गया। इस दौरान समिति संस्थापक राजेंद्र सदानंद, भामाशाह पुरुषोत्तम बंसल, समिति अध्यक्ष पंकज गोयल, समिति के महासचिव रणजीत सिंह, कोषाध्यक्ष महेश शर्मा मौजूद थे।

ट्रेन की चपेट में आने से युवक की दर्दनाक मौत

सवाई माधोपुर रेलवे लाइन के पास पड़ा मिला शव, शिनाख्तगी के प्रयास जारी

जयपुर । मालपुरा गेट थाना इलाके में एक युवक की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। रेलवे ट्रेक पर युवक का शव पड़ा देख लोगों में सनसनी फैल गई। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के महात्मा गांधी अस्पताल के मुर्दाघर में भिजवाया।

■ **ज्योति नगर इलाके में भी रेलवे ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत**

पुलिस ने बताया कि शनिवार को सवाईमाधोपुर रेलवे लाइन के पिलर नंबर - 117 के पास एक युवक का शव पड़ा होने की सूचना मिली थी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर आसपास के लोगों से पूछताछ कर उसकी शिनाख्तगी के प्रयास किए। लेकिन फिलहाल पुलिस के हाथ कोई सफलता नहीं लगी। पुलिस ने बताया कि मृक की उम्र करीब 40 साल के आसपास है और रंग गोरा है। शरीर दुबला-पतला है और उसने नीले रंग की पेंट और सफेद लाइन दार शर्ट पहन रखी है। पुलिस हुलिए और गुमशुदगी के आधार पर मृतक की शिनाख्तगी के प्रयास करने में लगी है।

वहीं ज्योति नगर थाना इलाके में स्थित रेलवे ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से एक युवक मौत हो गई। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर एसएमएस अस्पताल के मुर्दाघर में भिजवाया। जहां से पुलिस ने मृतक की शिनाख्तगी के प्रयास किए। लेकिन पुलिस के हाथ कोई सफलता नहीं लगी। पुलिस ने बताया कि पिलर संख्या 236 /48 रेल्वे पाटक ज्योति नगर पर युवक रेलवे ट्रैक पार रहा था। इसी दौरान ट्रेन की चपेट में आ गया। ट्रेन की टक्कर इतनी जबरदस्त थी की युवक उछलकर दूर जाकर गिरा। जिससे उसका सिर फट गया और शरीर पर जगह-जगह गंभीर चोट आई ।

कलक्टर सोनी के निर्देश पर फील्ड में उतरे अधिकारी

जयपुर । लगातार हो रही बारिश के चलते शहर के कई इलाके प्रभावित हुए हैं। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देश पर शनिवार को प्रशासनिक अधिकारियों की टीम ने वर्षा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर हालात का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने जर्जर भवनों, जलभराव और बारिश से हुए अन्य नुकसान की स्थिति का आकलन किया तथा आमजन से संवाद कर समस्याएं जानीं।

कलक्टर डॉ. सोनी ने स्वयं भी वर्षा प्रभावित एवं जलभराव वाले निचले इलाकों का दौरा कर स्थिति की जानकारी ली और स्थानीय नागरिकों से मुलाकात की। उन्होंने संबंधित विभागों को तत्काल राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। मौसम विभाग के अनुसार आगामी दिनों में भी बारिश की संभावना को देखते हुए डूब क्षेत्र में रहने वाले लोगों को सतर्क रहने एवं आवश्यकता पड़ने पर नजदीकी नियंत्रण कक्ष से तुरंत संपर्क करने की अपील की। जिला कलक्टर डॉ. सोनी ने अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि जल निकासी व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए, जहां आवश्यक हो वहाँ मड पंप लगाकर पानी की निकासी सुनिश्चित की जाए।

कैनवास पर सजी 300 से ज़्यादा कलाकृतियां

जयपुर । प्रकृति, मनुष्य के भाव, आंतरिक मन और शहरी जीवन की आपा-धापी को कैनवास पर उकेरा, मौका था आईसीए आर्ट गैलरी की ओर से अपने आप में अनोखी ग्रुप एग्ज़ीबिशन का। इस प्रदर्शनी में देशभर से 44 प्रख्यात कलाकार एक ही छत के नीचे अपनी कला का अद्भुत संगम लेकर आए हैं। ऐसा पहली बार होगा जहां सभी 300 से अधिक कृतियां विशिष्ट रूप से 12 गुणा 12 इंच के कैनवास पर तैयार की गई है।

आर्ट प्रशंसक सुधीर कासलीवाल, दुष्यंत सिंह नायला, विजेंद्र बंसल, आर्टिस्ट विनय शर्मा द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। इस दौरान मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, रांची, लखनऊ, हैदराबाद, जयपुर और देश के अन्य प्रमुख महानगरों से आए कलाकारों ने अपनी श्रेष्ठ कृतियां प्रस्तुत किया। जहां भारत के कुछ सर्वाधिक चर्चित समकालीन कलाकारों ने, जिनमें विद्या सागर उपाध्याय, विनय शर्मा, मीनू श्रीवास्तव, मनीष शर्मा, श्वेत गोयल, शीतल चैतलंग्या, रवि ठाकुर, श्यामल मुखर्जी, चंदना भट्टाचार्जी और भास्कर राव बोट्चा सहित कई अन्य प्रतिष्ठित नाम शामिल हैं। प्रदर्शनी का कॉन्सेप्ट क्यूरेशन हेम राणा और अमित शर्मा ने किया, जिसमें कला की विविधता को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्रकृति, नारीवाद, शहरी जीवन, सामाजिक संदेश, अध्यात्म और वाइल्डलाइफ़ जैसे थीम आकर्षण का केंद्र बने हैं। कृतियों को कैनवास, कपड़े और विभिन्न प्रकार के पेपर्स पर विविध आर्ट स्टाइल्स में तैयार किया गया है, जो क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत कलाकारों की कला-यात्रा को दर्शाता है।

'1 गुणा 1' की संकल्पना पर बोलते हुए आईसीए आर्ट गैलरी के अभिनव बंसल ने कहा कि जयपुर के कला-प्रेमियों को विभिन्न शैलियों का संगम एक ही स्थान पर देखने का अवसर मिले। साथ ही यह आर्ट स्टूडेंट्स के लिए भी किसी संस्थान से कम नहीं है, जहां वे देशभर के ख्यातिप्राप्त कलाकारों की कृतियों को बारीकी से समझ सकेंगे। ये प्रदर्शनी कल्पनाशीलता, धरोहर और समकालीन कला का उत्सव है, जो कलेक्टर्स, कला-प्रेमियों और जानकारों के लिए न भूलने योग्य अनुभव साबित होगा।

किन्नर बनकर पर्यटकों को लूटने वाला युवक गिरफ्तार

जयपुर । सिंधी कैंप थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए किन्नर बनकर पर्यटकों को लूटने वाले युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपित शराब के पैसों के लिए पर्यटकों से लड़ने के लिए होटल तक पहुंच गया।पुलिस जानकारी में सामने आया कि गिरफ्तार आरोपित कुछ दिन पहले एक डॉक्टर और होटल स्टाफ को भी मारपीट कर लूट चुका है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम हनुमान प्रसाद मीणा ने बताया कि सिंधी कैंप थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए किन्नर बनकर पर्यटकों को लूटने वाले शहदाब अली उर्फ कमना उर्फ आशु (24) निवासी शेखों का मोहल्ला पुरानी टोंक जिला टोंक हाल आरएसी गेट के पास नागतलाई आमेर को गिरफ्तार किया। आरोपित रात को किन्नरों का वेश धारण कर लूटपाट की वारदात करता है। जो वास्तव में पुरुष है। जो फर्जी किन्नर बन कर लोगों के साथ मारपीट कर रुपए छीन लेता है। एसआई श्याम सुन्दर शर्मा ने बताया कि 23 अगस्त को मुंबई से जयपुर घूमने आए एक पर्यटक के साथ लूट की वारदात हुई थी। इसकी शिकायत पीड़ित स्वप्निल पोटले की ओर से सिंधी कैम्प थाने में दी गई कि वह मुम्बई से जयपुर घूमने आए हैं। होटल चन्द्रगुप्त में ठहरे हुए हैं। रात के समय होटल से बाहर निकले तो सामने से एक किन्नर हमारे पास आया और पैसे मांगने लगा। जिस पर खुशी से उसको 150 रुपए दिए। जिस पर आरोपित ने कहा कि उसे शराब पीनी है और ज्यादा पैसे दो। नहीं तो वह उन्हे जान से मार देगी। रुपए देने से मना किया तो वह अपने कपड़े उतारकर दी गालियां देने लग गया। बैग में से कुछ लोहे की चाबी जैसा निकाल कर डराने लगा। किन्नर को हिंसक होता देखकर साथियों के साथ होटल में घुस गए। आरोपित होटल वाले के साथ भी गाली गलोच कर झगड़ा करने लगा। होटल के अन्दर भी घुस कर पर्यटकों से मारपीट करने लगा।

गिरफ्तार आरोपी शहदाब अली

जयपुर पुलिस ने सैकड़ों बच्चियों व महिलाओं को बनाया सुरक्षा वॉरियर

जयपुर। राजस्थान पुलिस महानिदेशक राजीव शर्मा के निर्देशन में जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ के नेतृत्व में पुलिस का शहर में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित एवं प्रभावी करने का जन चेतना अभियान सशक्त नारी, जिम्मेदारी हमारी के तहत महिला पुलिस अधिकारी शहर के विभिन्न इलाकों में जाकर महिलाओं को उनके कानूनों की जानकारी देकर उन्हें अपने अधिकारों के बारे में जागरूक कर रही हैं। जयपुर पुलिस पिछले चार दिनों में शहर की 20 स्कूल एवं कॉलेज में जाकर हजारो बालिकाओं को उनके अधिकारों एवं कानूनों बारे में बता कर जागरूक किया। सैकड़ों बालिकाओं को सुरक्षा वॉरियर के रूप में भी चयन किया साथ ही उन्होंने महिला सुरक्षा कानूनों के प्रति जागरूक रहने की शपथ दिलायी। कार्यक्रम में उपस्थित बालिकाओं को सेफ्टी वॉरियर बैज का वितरण किया एवं राजकोप व नीड हेल्प एप की भी जानकारी दी।

कार में लिफ्ट देने का झांसा देकर युवक का अपहरण

जयपुर (कासं)। बस्सी थाना इलाके में कार सवार कुछ बदमाशों ने लिफ्ट देने के बहाने एक युवक को कार में बैठा लिया और सुनसान जगह ले जाकर उसके साथ मारपीट करते हुए उसके साथ लूटपाट की। जिसके बाद अज्ञात कार सवार बदमाशों ने उसे चलती कार से बाहर फेंक दिया। जिससे पीड़ित युवक गंभीर रुप से घायल हो गया। वारदात को अंजाम देने के बाद कार सवार बदमाश फरार हो गए।

जांच अधिकारी एसआई सुरेंद्र ने बताया कि दौसा स्थित सिकराय,भंडारी गांव निवासी राजेश कुमार (40) 21 अगस्त की रात करीब 8:30 बजे वे बस्सी थाना इलाके में चुंगी आगरा रोड पर सिकंदरा जाने के लिए बस का इंतजार कर रहे थे। तभी एक सफेद रंग की स्विफ्ट गाड़ी उनके पास आकर रुकी। कार में सवार युवकों ने उनसे गंतव्य पूछा और सिकंदरा जाने की बात सुनकर उन्हें गाड़ी में बिठा लिया और कानोता पहुंचने पर कार में सवार चार बदमाशों ने राजेश को दबोच लिया और उसकी जेब से 1450 रुपए छीन लिए। इसके बाद भी अज्ञात बदमाशो ने पीड़ित के साथ जमकर मारपीट की। बदमाशों ने पीड़ित का मोबाइल फोन छिन कर उसके पासवर्ड लिए और खाते से ऑन लाइन 40 हजार रुपए ट्रांसफर कर लिए। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात कार सवार बदमाशों के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है।

स्वास्थ्य सेवा की जवाबदेही, रोगी अधिकारों व नैतिक प्रथाओं पर चर्चा

जयपुर (कासं)। नारायणा अस्पताल और सेंटवेव संस्था के सहयोग से एक विचारोत्तेजक पैनल चर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया। इसका उद्देश्य चिकित्सा क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा की जवाबदेही, रोगी अधिकारों और नैतिक प्रथाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रम दो आकर्षक सत्रों में आयोजित किया गया था, जिसमें कानूनी और नैदानिक/रोगविषयक दोनों दृष्टिकोणों पर प्रकाश डाला गया। प्रतिष्ठित पैनलिस्टों में नारायणा अस्पताल के सुविधा निदेशक बलविंदर सिंह वालिया और क्लिनिकल निदेशक, विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ सलाहकार डॉ. प्रदीप कुमार गोयल शामिल थे।

न्यायमूर्ति जे.के. रांका और न्यायमूर्ति अतुल कुमार जैन ने न्यायिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हुए सभा को संबोधित किया। फोरेंसिक वैज्ञानिक और डीएनए विशेषज्ञ, पूर्व अतिरिक्त निदेशक, आरएफएसएल, प्रो. जी.के. माथुर ने फोरेंसिक विशेषज्ञता साझा की। डॉ. राकेश चितौड़ा, निदेशक एवं कार्डियोलॉजी इकाई प्रमुख, और डॉ. विजय कपूर, अध्यक्ष, निजी अस्पताल एवं नर्सिंग एसोसिएशन द्वारा कार्डियोलॉजी और स्वास्थ्य सेवा प्रशासन पर विशेष विचार प्रस्तुत किए गए। डॉ. संजुला थानवी, एसोसिएट प्रोफेसर एवं डीन, विधि संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने शैक्षिणक और कानूनी दृष्टिकोण प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में सेंटवेव संगठन की निदेशक शिवाली गुप्ता और प्रो. (डॉ.) आराधना परमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सत्र का समापन रोगी देखभाल प्रणालियों को मजबूत करने, डॉक्टरों और नागरिकों के बीच विश्वास को बढ़ावा देने और चिकित्सा, कानूनी और शैक्षिणक विशेषज्ञों के बीच रचनात्मक संवाद के साथ हुई।

नारायणा अस्पताल और सेंटवेव संस्था की ओर से विचारोत्तेजक पैनल चर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सर्वाधिक नुकसान वाले सब डिविजनों में "क्रॉस वेरीफिकेशन"

जयपुर । जयपुर डिस्कॉम सर्वाधिक वितरण हानियों वाले अपने सब डिवीजनों में विद्युत तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए किये जा रहे कार्यों का क्रॉस वेरीफिकेशन कराएगा। चेयरमैन डिस्कॉम्स एवं जयपुर विद्युत वितरण निगम की प्रबंध निदेशक आरती डोगरा ने इस संबंध में निर्देश दिए हैं।

डोगरा ने इन सब डिविजनों में वितरण हानियों को कम करने के लिए किए जा रहे कार्यों की शनिवार को विद्युत भवन में संबंधित सहायक अभियंताओं के साथ समीक्षा की। निर्देश दिए कि विगत दो माह में इन सब डिवीजनों में लॉसेज कम करने के लिए जो कार्य किये गए हैं उनका मुख्यालय से अधिशाषी अभियंताओं की टीम द्वारा निरीक्षण कराकर क्रॉस वेरिफिकेशन कराया जाए। डोगरा ने निर्देश दिए कि अभियंता योजनाबद्ध रूप से लॉसेज दूर करने के प्रभावी उपाय सुनिश्चित करें। पैरेलल, कटी हुई तथा क्षितग्रस्त सर्विस लाइनें बदल कर उन क्षेत्रों में नए विद्युत कनेक्शन जारी करने पर फोकस किया जाए। पचास हजार से अधिक बकाया वाले विद्युत उपभोक्ताओं से वसूली बढाकर राजस्व अर्जन पर जोर दिया जाए। अधिक लोड वाले सब स्टेशन एवं फीडरों में सुधार, समय पर डिफेक्टिव मीटर बदलने, अवैध ट्रांसफार्मर जब्त करने तथा सतर्कता गतिविधयों को बढ़ाने आदि के सम्बन्ध में उन्होंने और अधिक गहनता से कार्य करने के निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि जयपुर डिस्कॉम ने 30 प्रतिशत से अधिक वितरण हानियों वाले 18 सब डिविजनों को चिन्हित कर इनमें विद्युत तंत्र में सुधार पर फोकस किया है। इन सब डिविजनों में डिस्ट्रिब्यूशन लॉस दूर करने के लिए किए जा रहे उपायों की प्रतिमाह मुख्यालय पर उच्च स्तरीय समीक्षा होती है। संबंधित क्षेत्रों के अधीक्षण अभियंता वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से जुड़े।

यह हैं सर्वाधिक वितरण हानियों वाले सब डिविजन

बसेड़ी, धौलपुर (ए-प्रथम), डीग, कुम्हेर, कामां, सीकरी, नगर, पहाड़ी, बगड़मेव, मनोहरपुर, महुवा, बारां (ए-प्रथम), मासलपुर, झालावाड़ (शहर), बहरोड़ (शहर), बहरोड़ (ग्रामीण), पावटा, टोंक (ए-प्रथम)

ARBIT
it happens here...

राष्ट्रदूत
SUNDAY
24 August 2025
A-B

Waffle Wonders

Observed on August 24th, National Waffle Day pays tribute to one of the world's most beloved breakfast staples. The day marks the anniversary of the first U.S. waffle iron patent, granted in 1869. From crispy Belgian waffles to soft, buttery classics topped with fruit, syrup, or whipped cream, waffles have evolved into a versatile treat enjoyed at any time of day. Celebrations often include waffle-themed brunches, creative toppings, and even waffle-making competitions. Whether sweet or savory, National Waffle Day is the perfect excuse to indulge in this golden, grid-patterned delight that continues to warm hearts and plates alike.

#MEDICINE

Bees And Cancer

Bee Venom cures Breast Cancer: A Natural Breakthrough in Modern Medicine

In a remarkable fusion of natural biology and cutting-edge science, researchers have uncovered a stunning potential cancer treatment, bee venom. In laboratory studies, scientists found that venom from honeybees can eliminate 100% of aggressive breast cancer cells in under 60 minutes, offering a promising glimpse into a new class of cancer-fighting therapies.

At the heart of this discovery is melittin, a potent natural compound found in bee venom. Melittin works by targeting the membranes of cancer cells, punching holes in them and effectively stopping their growth and survival, without causing significant harm to surrounding healthy cells. This precise mechanism makes it especially intriguing for treating aggressive subtypes of breast cancer, including triple-negative breast cancer (TNBC), which is notoriously difficult to treat with current therapies.

"Melittin acts incredibly fast," noted one of the lead researchers. "It attacks cancer cell membranes within minutes and disrupts key signaling pathways that help tumors grow." What sets this research apart is its potential to lead to targeted cancer therapies that are not only more effective but also less toxic than conventional treatments like chemotherapy or radiation. While current methods often harm healthy tissue, melittin-based therapies could focus on malignant cells with greater precision.

It's important to note that this research is still in early experimental stages. The findings were conducted in controlled lab settings using cell cultures, and more studies, including clinical trials, are needed before bee venom-based treatments can be safely used in humans.

Still, the implications are exciting. This discovery adds to a growing body of evidence suggesting that nature holds untapped solutions to some of medicine's most complex challenges. From rainforest plants to oceanic microbes, and now, the humble honeybee, the natural world continues to inspire innovative approaches to health and healing.

One day, the sting of a bee may no longer symbolize pain or fear, but rather, hope, resilience, and recovery in the ongoing fight against cancer.

Volodymyr Zelenskyy Authenticity and performance

That Zelenskyy managed to both capture this genre and break certain of its norms, appearing consistently in profiles across outlets for a sustained period of months, is thanks in part to his self-made social media content released in the days and weeks following the invasion, which quickly went viral online. Just weeks after the invasion began, TikTok hashtags related to Zelenskyy already had over 350 million combined views, and one of his own videos, posted to Telegram, garnered over 5 million views in the span of one week. Almost unanimously, the profile pieces in mainstream news outlets cite Zelenskyy's own self-produced content, not just the journalists' observations and reporting, from the time immediately following Russia's invasion as evidence for the (laudatory) story they tell. Emphasizing Zelenskyy's savvy leadership and strong resolve as key reasons why Ukraine remains standing despite expert estimations tell that the Ukrainian capital Kyiv would fall immediately upon Russia's invasion, the profiles act not as a check to his online virility, but as fuel for its fire.

Anjali Sharma
Senior Journalist & Wildlife Enthusiast

The Russian audience has an opinion about their opponent, and it would be predictable also, interesting to know it in fact. Some ascorbic contents are here for us to read from a news read, read on.

A close reading of Ukrainian President Volodymyr Zelenskyy's self-produced social media content alongside Western news outlets' profiles of Zelenskyy from the first months of the Russian invasion of Ukraine in 2022 illuminates a symbiotic relationship of drama-making that is mutually beneficial for Zelenskyy's military and the West's journalistic interests. Performing as a scrappy underdog turned brilliant military mind, Zelenskyy provides the Western press with an authentic protagonist figure, who makes ideal fodder for a Western news style steeped in drama-making and a natural fit for the individualized storytelling core to the genre of the profile piece. While genre is an aesthetic categorizing tool, it is also a signal of the sociohistorical conditions of texts' production and circulation. Thus, taken as products of their moment, the profile pieces and their interplay with Zelenskyy's short form, seemingly grassroots social media videos are revealing of the value system underpinning journalism in the West, and the society it reflects.

Zelenskyy, capturing (journalists') hearts and minds

With Ukraine an increasingly partisan issue for the US, and a significantly less visible one, taking a backseat against the unfolding crisis in the Middle East, it might be hard to remember back the early days of Russia's invasion in spring 2022 when the country was ubiquitous in mainstream Western news. In those months, it was nearly impossible to follow the news without seeing similar stories across outlets: 'How Zelenskyy Found His Roar' (The Economist Staff) or 'How Volodymyr Zelenskyy Defended Ukraine and United the World' (Shuster), detailing Ukrainian President Volodymyr Zelenskyy's response to Russia's invasion of Ukraine. A major shift in the global order, in which war came to Europe's doorstep for the first time in decades, it makes sense that the invasion of Ukraine made headline news in Western markets. However, the sheer volume of coverage trained on not just the country, but specifically its leader, raises questions about what makes Zelenskyy, the man, the leader and the citizen, such a keen object of interest for journalists and why Western news outlets thoroughly strapped for resources and time would cover the same man, in the same way, so many times.

The genre of the 'profile piece' emerges as a meaningful site of inquiry for understanding what it is about Zelenskyy that captured the hearts and minds of Western journalists (and publics) in those early days. Following the logic of journalistic 'scoop,' profiles are often proprietary; in other words, while celebrities and politicians might receive profiles in different outlets throughout their lifetimes, it is rare to see the same person profiled simultaneously across outlets. However, breaking this norm, Zelenskyy enjoyed appearances in profile stories in nearly every major Western media outlet since rising to global consciousness in February 2022. The omnipresence of these pieces warrants close attention, standing separate and apart from the (albeit widespread) breaking news/political coverage of the events in Ukraine.

That Zelenskyy managed to both capture this genre and break certain of its norms, appearing consistently in profiles across outlets for a sustained period of months, is thanks in part to his self-made social media content released in the days and weeks following the invasion, which quickly went viral online. Just weeks after the invasion began, TikTok hashtags related to Zelenskyy already had over 350 million combined views, and one of his own videos, posted to Telegram, garnered over 5 million views in the span of one week. Almost unanimously, the profile pieces in mainstream news outlets cite Zelenskyy's own self-produced content, not just the journalists' observations and reporting, from the time immediately following Russia's invasion as evidence for the (laudatory) story they tell. Emphasizing Zelenskyy's savvy leadership and strong resolve as key reasons why Ukraine remains standing despite expert estimations tell that the Ukrainian capital Kyiv would fall immediately upon Russia's invasion, the profiles act not as a check to his online virility, but as fuel for its fire.

#PERSONA

Theoretical framework and methodological approach

News, according to Schechner, is as constructed and scripted as a play or movie, and Zelenskyy's persona as president-turned-everyman provides Western news with exactly the kind of drama on which it thrives. Zelenskyy's self-produced content engages, strategically, in 'impression management' to craft the persona that has afforded him and his country a measure of legibility in Western media, so crucial in the early days of the invasion. Zelenskyy and Western media should be understood, then, as engaged in a symbiotic relationship of drama-making that is mutually beneficial for their respective military and journalistic interests. Performance allows us to see that as much as Western news has made a drama of President Zelenskyy, Zelenskyy, too, has made a drama of Western news.

At stake here is not whether it is 'true' that Zelenskyy is a formidable leader, or even what makes him so, but rather the kinds of values and norms Western journalism is uncritically privileging by identifying Zelenskyy, over and over again, as the intrepid leader and fighter he claims to be. Meanwhile, highlighting Zelenskyy's authenticity allows mainstream news to give its readers the story it presumes they crave, potentially gaining eyeballs and dollars. In short, through a performance of authenticity, Zelenskyy enacts the exact story Western news wants to tell, the sheer number of profile pieces emerging in such a truncated period, suggesting that the story Zelenskyy provides is a marketable one. Performing as a scrappy underdog turned brilliant military mind, Zelenskyy provides the Western press with a bildungsroman-style protagonist figure who makes ideal fodder for a Western news style steeped in drama-making. Zelenskyy is not a 'traditional' Western leader: his country has long existed on the margins of the West, as its struggle to join NATO, especially since the invasion has made clear. Zelenskyy is also in an unusual position as a Jewish leader of a majority Christian country; he is from a working-class family, several members of which tragically died in the Holocaust. And his background as a comedian and actor is atypical (though perhaps not to the US, which has seen the likes of Ronald Reagan, Arnold Schwarzenegger and Donald Trump rise to the highest offices in the land). However, far from disqualifying, the factors that distinguish Zelenskyy are also part of what make him so enticing to Western news, unusual enough to be eye-catching, but proximate enough to Western myths of bootstrap social climbing and intrepid male heroism to be extraordinarily digestible. Zelenskyy's authenticity is complex, yet nearly perfectly suited (or intentionally tailored) to Western news audiences for the way it engages Western society's deepest held myths.

This institutionalization allows certain experiences, bodies, language and ways of thinking/knowing the world to emerge as dominant, and it is through this default, or unmarked, state that I understand 'mainstream.' It is to Zelenskyy's performances that serve as fodder for these mainstream Western media texts that I turn below.

Zelenskyy profiles: Authenticating authenticity

As The Economist Staff writes: Mr. Zelenskyy was born in 1978 in Kryvyi Rih, a Soviet-looking, industrial city in the south-east of Ukraine, a centre of iron mining and metallurgy. His favourite film was 'Once Upon a Time in America.' To survive among the town's knife-wielding gangs, you had to have a sense of humour, chutzpah and a posse that had your back. Mr. Zelenskyy had all of these things, in abundance.

The piece highlights the aspects of Zelenskyy's biography that ring true to its audiences: a humble, working-class background, a pull towards the aspiration of the West and a charisma that allowed him to overcome life's challenges. Explicitly encouraging us to understand Zelenskyy's biography as a metonym for the crisis in Ukraine, the piece continues: "Like the country he leads, Mr. Zelenskyy is far from perfect and he is often frustrating."

Standing outside the House with Chimaeras on that bright morning, with the blue sky behind him, Mr. Zelenskyy again sounded a defiant note: "We will be defending our country, because our weapon is truth, and our truth is that this is our land, our country, our children, and we will defend all of this." If fortune favours Mr. Zelenskyy, it is because he carries the virtue that Mr. Putin lacks: he speaks the truth for his people.

TIME's Simon Shuster, for example, 'proves' Zelenskyy's performance of authenticity is genuine by taking an apprehensive stance early in the profile, before revealing his ultimate belief in Zelenskyy's claims. He writes, "this trip to the front lines last April was the first time I'd seen him (Zelenskyy) with his troops - the former actor playing the part of the generalissimo. It was not entirely convincing." He even reports that his closest aides recognize an actor's 'malady' in Zelenskyy, trying to keep him away from social media because he becomes 'depressed' when he sees negative comments.

This story arc, from doubt to belief, echoes throughout the Zelenskyy profiles, a repeated narrative that sutures Zelenskyy's authenticity as 'true.' Echoing Shuster's display of distant skeptic turned believer, Robin Givhan begins her column for the Washington Post by signaling that she sees Zelenskyy's performance as exactly that: a highly honed skillset from a man who has 'mastered' the art of the 'direct appeal.' However, by the end of her piece, she is receptive to the appeal. Her analysis becomes enmeshed with Zelenskyy's own performance, her final paragraph invoking Zelenskyy's words from an earlier video: "The president was here. And he was still working."

Zelenskyy's authenticity as brand lies in his affective resonance with his audience, a 'charm' that enables proximity (Sonnevend) by connecting on a core level with the largely Eurocentric, anti-Russian (anti-communist more broadly), ruggedly individualistic, patriarchal society of the West. Zelenskyy's embrace of the 'dirty work' of war signals a conventional masculinity that Western culture has long privileged, one, again, that the West's arch enemy Vladimir Putin has eschewed (Litvinova). In fact, much about Zelenskyy's authenticity operates as a direct foil to Vladimir Putin's perceived elitism and inaccessibility. While Zelenskyy embodies the traditional nuclear family model, with a (conventionally attractive) wife and children, the couple was even featured in Vogue, Putin is a notorious 'playboy.' Zelenskyy's home is in the middle of a war-torn city, whereas Putin's permanent residence remains a mystery, while rumors have swirled about numerous homes, including one that's allegedly worth US$1 billion (Impelli). Zelenskyy is regularly pictured in his signature green t-shirt alongside scrappy Ukrainian troops fighting for the country's freedom, meanwhile the image arguably, most associated with Putin, is a caricature of macho masculinity: Putin horseback-riding shirtless through the mountains of the Siberian Tyva region of Russia (Druzhinin). The comparison has been acknowledged directly in Zelenskyy profile news coverage, with Atlantic staff writer Megan Garber noting, "Zelenskyy's latest videos frame him in stark contrast to Ukraine's aggressor: Here is Zelenskyy, on the streets and in danger; there is Vladimir Putin, pulling history's levers from afar, removed from the violence and unaccountable for it."

The stakes of symbiosis

If authenticity as 'symbolic construct' has 'cultural value in how we understand our moral frameworks and ourselves, and more generally how we make decisions about how to live our lives,' what does it mean for Western profile news to authorize and amplify Zelenskyy's performance of authenticity? For whom, if anyone, is this kind of authenticity, and the visibility it accrued, also accessible? Who else can perform it, and who cannot, and at what cost? Against a glut of existential crises for self-determination and democracy across the globe, Zelenskyy's emergence as a singular protagonist figure in Western news suggests that it is not simply his dogged determination on behalf of his country, but his particular brand of dogged determination that has won the hearts and minds of Western journalists. His ubiquity in Western news profile pieces cannot be disentangled from his mastery of self-branding via social media, nor from the logics of the profile genre, which rely on the kind of personal, individually focused narrative storytelling that his social media performance provides. A confluence of form and subjecthood help to explain Zelenskyy's resonant authenticity; the symbiosis of Zelenskyy's performance on social media and the Western profiles is rooted in Zelenskyy's believability as an authentic storyteller.

rajeshsharma1049@gmail.com

Zelenskyy's content: A masterful performance of authenticity

When Russia invaded Ukraine on 24 February 2022, experts in the region gave Kyiv only a matter of hours before falling to Putin's troops. While Ukraine's forces were far stronger than expected, it was clear in the early days of the attack that they would not be able to sustain their hold on the country without outside support, Ukraine being a small country about the size of the US state of Texas and Russia a powerhouse. To put a finer point on the kind of support Ukraine requires, since the invasion, the US has appropriated more than $175 billion in aid to the country, the large majority of which supports military efforts. This context helps to explain Zelenskyy's instantaneous transformation into character, what we might also think of as the launch of his 'charm offensive,' as Ukraine's rugged, tireless, and fearless leader. 'Instantaneous' is not an exaggeration; in fact, as of early February 2022, Zelenskyy presented as one would expect the leader of a country to look, his X profile picturing him in a sharp pressed suit, shaking hands with other world leaders, and attending 'official' events. However, as soon as the invasion began, Zelenskyy's posts shifted in tone, picturing him in his now infamous green t-shirt, seated behind his desk, poring over his computer or bundled in rugged outerwear surveying the state of Ukraine's capital, Kyiv.

At a moment when the fate of his country was hanging in the balance, Zelenskyy's rapid transformation can be understood as an attempt to secure the support of the Western world in Ukraine's favour. Zelenskyy's rapid change into character can be read as impression management, in this case rooted in an attempt to secure international, financial, military, and moral support for Ukraine's fight against Russia. The logic might go: if Zelenskyy appears disheveled but dogged in his commitment to fight Russia, dressing in military attire and staying alongside his countrymen, perhaps, global leaders would take the situation as seriously as he does.

In a video from the day after the invasion began, Zelenskyy now-famously addressed Ukrainians and the world in a quick announcement recorded from his cellphone: "Good morning to all Ukrainians! There are a lot of fakes out there . .. but I am here." From his (purposefully) disheveled look to his scorn for those who are 'fake,' Zelenskyy tells his viewers that he is to be believed because he is 'real' while others are not.

Internet influencers are a helpful comparison here, fostering a sense of intimacy that creates (artificial) closeness with their followers. For Zelenskyy, the cultivation of this closeness started immediately when the invasion began. On the night of Russia's advance, President Zelenskyy and members of his cabinet posted a video from the governmental district of Kyiv, in which Zelenskyy repeatedly named members of his cabinet followed by the declaration 'here' (0:03-0:22), confirming that the Ukrainian government remained standing. In the video, Zelenskyy appears to hold his cell phone out in front of him to record the video, the other government officials gathered closely around him. They are all wearing rugged cold-weather gear. His colleagues appear serious, but Zelenskyy is smirking slightly, appearing proud and defiant. Standing in sharp contrast to highly polished, public relations-approved materials one is used to seeing from a politician, the shaky-cam quality of the video, the leaders' casual dress, and the fact that Zelenskyy was clearly filming the video as a 'selfie' gives viewers the impression of a backstage moment.

No doubt, familiar with the dynamics of front and backstage, it matters that Zelenskyy is a professionally trained and experienced actor, in addition to President of Ukraine, not because it explains why he is so adept at performing this particular authenticity, but because it lends credence to others' interpretations of his behaviour as authentic, describes this phenomenon, in which theater and life appear indistinguishable, arguing:

"So, there is theater in the theater; theater in ordinary life; events in ordinary life that can be interpreted as theater; events from ordinary life that can be brought into the theater where they exist both as theater and as continuations of ordinary life . . . For some, drama is the motor underlying social processes and crisis management. For others, like Goffman, all human behaviour has a strong performative quality."

THE WALL

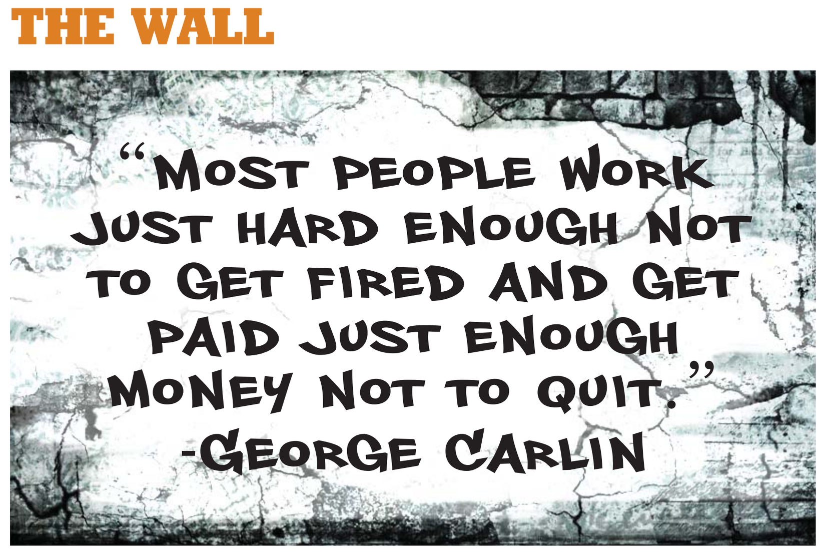

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

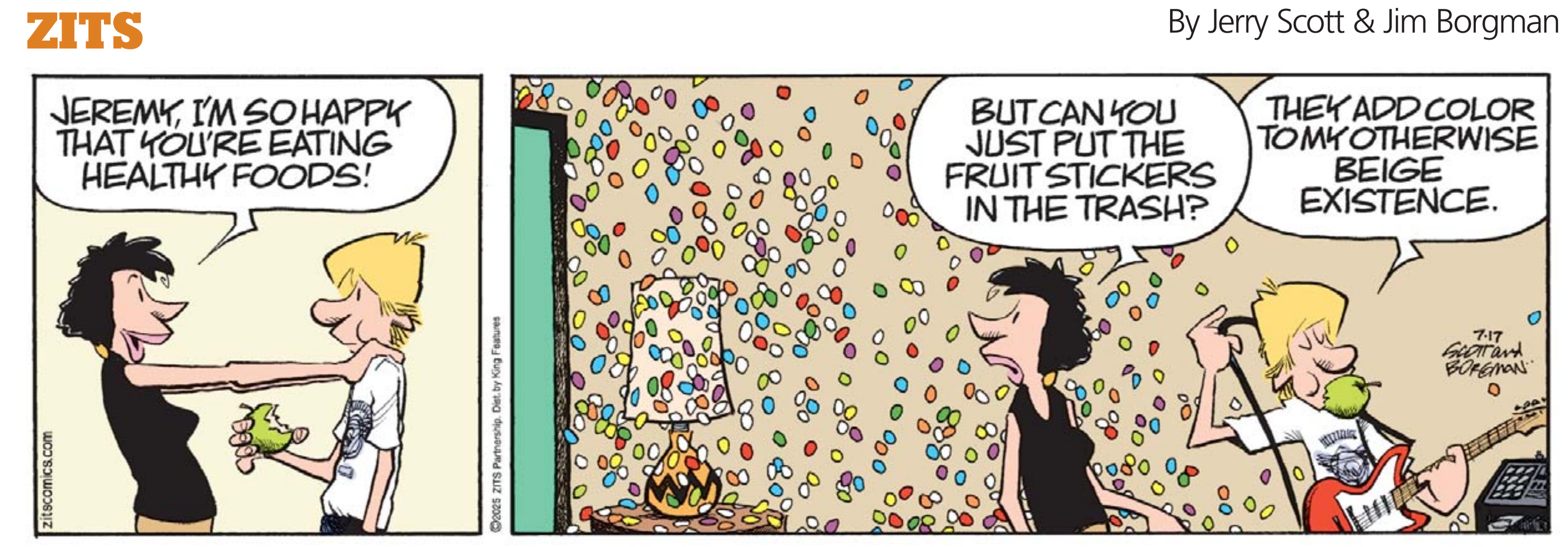

रोडवेज बस और बोलेरो कार में भिड़ंत, तीन महिलाओं सहित चार की मौत

बोलेरो सवार एक व्यक्ति गंभीर घायल, रोडवेज बस के यात्रियों को भी चोटें आईं

हादसे में बोलेरा कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई।

- हादसा इतना भीषण था कि बोलेरो के परखच्चे उड़ गए और मृतकों के शव उसमें फंस गए, कड़ी मशक्कत के बाद शवों को निकाला
- बोलेरो में सवार सभी लोग एक ही परिवार के थे और सभी चूरू जिले के राजलदेसर और मौमासर के निवासी थे जो पुष्कर जा रहे थे

डीडवाना/नागौर, (निसं)। डीडवाना-कुचामन जिले के जसवंतगढ़ के पास शनिवार को सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। इस हादसे में रोडवेज की बस और एक बोलेरो कार में जबरदस्त भिड़ंत हो गई, जिसमें चार जनों की मौत हो गई, वहीं चार जने गंभीर रूप से घायल हो गए। मृतकों में तीन महिलाएं व एक पुरुष शामिल है। हादसा इतना भीषण था कि बोलेरो के परखच्चे उड़ गए और मृतकों के शव उसमें फंस गए। बाद में मौके पर पहुंची पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद मृतकों व घायलों को गाड़ी से बाहर निकालकर लाडनूं के सरकारी अस्पताल पहुंचाया।

जानकारी के अनुसार बोलेरो में सवार सभी लोग एक ही परिवार के थे और सभी चूरू जिले के राजलदेसर और मौमासर के निवासी थे। वे लोग बोलेरो में सवार होकर पुष्कर जा रहे थे। इसी दौरान जसवंतगढ़ के पास लाडनूं से सुजानगढ़ जा रही सीकर डिपो की रोडवेज बस से बोलेरो कार की टक्कर हो गई। बताया जा रहा है कि गौवंश के अचानक सामने आने से दोनों वाहनों में टक्कर हो गई। हादसा इतना भीषण था कि बोलेरो बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। वहीं रोडवेज बस को भी नुकसान पहुंचा। हादसे की सूचना के बाद जसवंगतगढ़ पुलिस मौके पर पहुंची और क्रेन व जेसीबी की मदद से बोलेरो में फंसे लोगों को बाहर निकाला। मृतकों व घायलों को अस्पताल पहुंचाया, लेकिन तेज बारिश के कारण बचाव कार्य में भारी परेशानी उठानी पड़ी। अस्पताल में डॉक्टरों ने तीन महिलाओं व एक पुरुष को मृत घोषित कर दिया, जबकि चार घायलों का अस्पताल में उपचार जारी है। वहीं हादसे के बाद हाईवे पर भारी जाम लग गया, जिसके बाद पुलिस ने क्रेन की सहायता से दोनों वाहनों को सड़क से हटाया, तब जाकर यातायात सुचारू हो सका।

मृतकों में शारदा देवी (50), तुलसी देवी (42), लिछमा देवी (70) और ओमसिंह (बोलेरो चालक) शामिल हैं। रूपा (45), भोजराज (17), मुरली (11) और ममता (15) को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अलवर में युवक ने 10वीं बार आत्महत्या की कोशिश की

युवक ने ट्रांसफॉर्मर को पकड़ लिया, करंट से झुलसा

- घायल की पत्नी ने बताया कि युवक 10 बार सुसाइड अटेम्ट कर चुका है

अलवर, (निसं)। कहते हैं जाको राखे साईयां मार सके ना कोई जब तक भगवान के घर से बुलावा नहीं आता तब तक कोई कितना ही चाहे उसकी जान चली जाए, लेकिन ऐसा होता नहीं। ऐसा ही एक मामला अलवर में घटित हो चुका है। एक युवक अपनी जीवनलीला समाप्त करना चाहता है। उसने दस बार आत्महत्या के प्रयास किए, लेकिन वह सभी असफल साबित हुए हैं। युवक की इन हरकतों से परिवार वाले काफी परेशान और सदा भयभीत रहते हैं।

अलवर शहर के सैयद खेड़ली गांव में शराब के नशे में युवक ने ट्रांसफॉर्मर को पकड़ लिया। करंट से घायल हो गया। युवक जिला अस्पताल में भर्ती है। घायल की पत्नी ने बताया कि युवक 10 बार सुसाइड अटेम्ट कर चुका है। घायल की पत्नी धनबाई ने बताया कि उसका पति राजू जाटव शराब ज्यादा पीता है। आए दिन मेरे साथ मारपीट करता है। वह खुद बेलदारी कर परिवार चलाती है। राजू नाई का काम करता है। पहले तीन बार फांसी लगाने का प्रयास कर चुका है। एक बार जहर भी खा लिया था। दो-तीन बार एक्सीडेंट होते-होते बचा है। दो बार बिजली के तारों को को पहले भी पकड़ चुका है। तब भी झुलस गया था। धनबाई ने बताया कि अब ट्रांसफॉर्मर पर चढ़ गया। इससे करंट से झुलस गया। परिवार उसकी हरकतों से परेशान हैं, दो बच्चे हैं। पुलिस को शिकायत देने के बावजूद भी कोई समाधान नहीं निकला है।

तीन भर्ती परीक्षाओं की मॉडल आंसर की जारी

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा असिस्टेंट फिशरीज डेवलपमेंट ऑफिसर ग्रुप इंस्ट्रक्टर, सर्वेयर, असिस्टेंट अप्रेंटिसशिप एडवाइजर, वाइस प्रिंसिपल, सुपरिटेंडेंट आईटीआई भर्ती 2024 परीक्षा की मॉडल आंसर की शनिवार को जारी कर दी।

इन परीक्षाओं का आयोजन 29 से 30 जुलाई 2025 तक किया गया था। विषय परीक्षा से संबंधित अभ्यर्थी इन मॉडल उत्तर कुंजियों पर आपत्ति निर्धारित शुल्क के साथ 25 अगस्त रात्रि 12 बजे तक ऑनलाईन दर्ज करवा सकता है।

आयोग के मुख्य परीक्षा नियंत्रक आशुतोष गुप्ता ने बताया कि आपत्तियां आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध मॉडल प्रश्न पत्र के क्रम अनुसार ही प्रविष्ट करनी होगी। इन परीक्षाओं के मॉडल प्रश्न पत्र आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। आपत्ति प्रामाणिक स्टैंडर्ड, ऑथेंटिक पुस्तकों के प्रमाण सहित ऑनलाइन ही प्रविष्ट करनी होगी। वांछित प्रमाण संलग्न नहीं होने की स्थिति में आपत्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा, कोई अन्य व्यक्ति आपत्ति दर्ज नहीं करा सकता। उन्होंने बताया कि हर प्रश्न के लिए आपत्ति शुल्क 100 रुपए सेवा शुल्क अतिरिक्त निर्धारित किया गया है। अभ्यर्थी एसएसओ पोर्टल पर लॉगिन कर रिक्रूटमेंट पोर्टल का चयन कर उक्त परीक्षा के लिए उपलब्ध लिंक (क्वेश्चन ऑब्जेक्शन) पर क्लिक कर प्रश्नों पर आपत्तियां दर्ज करानी होगी। आयोग द्वारा शुल्क वापस लौटाने का प्रावधान नहीं है। शुल्क के अभाव में आपत्तियां स्वीकार नहीं की जाएगी।

बीसलपुर बांध के फिर छह गेट खोले, ईसरदा बांध भी भरा

प्रति सैकंड लगभग 60 हजार क्यूसेक पानी बनास नदी में छोड़ा जा रहा है

अजमेर, (कासं)। जल संसाधन विभाग ने शनिवार सुबह बीसलपुर बांध के छह चैनल गेट खोलकर पानी की निकासी की।

जल संसाधन विभाग के एक्सईएन मनीष बंसल ने बताया कि बीसलपुर बांध में लगातार हो रही पानी की आवक के चलते दो गेट एक-एक मीटर तथा 4 गेट दो-दो मीटर खोले गए हैं, जिससे प्रति सैकंड लगभग 60 हजार क्यूसेक पानी बनास नदी में छोड़ा जा रहा है। विशेषज्ञों ने बताया कि बांध इस साल 24 जुलाई को ही ओवरफ्लो हो गया था, तब से 20 दिन में 26 टीएमसी, यानी भराव क्षमता का 70 फीसदी पानी की निकासी की जा चुकी है। यह पानी अजमेर, टोंक और जयपुर के लगभग एक करोड़ निवासियों की दस महीने की पेयजल जरूरत पूरी करने के बराबर है। बीसलपुर का जल टोंक जिले में सिंचाई के लिए भी अहम है। बांध की अधिकतम जलस्तर क्षमता 315.50 मीटर है। लगातार वर्षा ने जलस्तर को सीमा से ऊपर बनाए रखा, जिसके कारण विभाग को गेट खोलने की अवधि बढ़ानी पड़ी।

ईसरदा बांध भी भरा : ईसरदा में लक्षित 253 आरएल भराव स्तर पूरा हो चुका, इसलिए वहां से भी निरंतर बहाव छोड़ा जा रहा है। जल संसाधन विभाग ने कई बस्तियों तथा नदी किनारे कृषि भूमि पर रहने वालों को सतर्क रहने की अपील की है। स्थानीय प्रशासन ने संभावित बाढ़ मार्गों पर निगरानी दल तैनात किए हैं और आवश्यकता पड़ने पर सीमित रिलीफ शिफ्टिंग की योजना तैयार रखी है।

के.के. गुप्ता और परिवार द्वारा रानी सती दादी मंगल पाठ का आयोजन

उदयपुर, (निसं)। उदयपुर संभाग के प्रमुख उद्योगपति और समाजसेवी के. के. गुप्ता और उनके परिवार द्वारा रानी सती दादी मंगल पाठ का आयोजन शनिवार को मरुधर भवन सेक्टर 11 उदयपुर में किया गया। मंगल पाठ का वाचन गोपाल वर्मा ब्यावर द्वारा किया गया। इस अवसर पर हाईकोर्ट जोधपुर के न्यायाधिपति मनोज गर्ग और न्यायाधिपति विनीत माथुर सहित जिला एवं सेशन न्यायाधीश उदयपुर ज्ञान चंद गुप्ता, जिला एवं सेशन न्यायाधीश राजसमंद, महेंद्र सिंह सिसोदिया जिला एवं शासन न्यायाधीश चित्तौड़ भी मंगल पाठ में सम्मिलित हुए और पुण्य लाभ प्राप्त किया।

इस अवसर अतिथियों ने कहा कि गुप्ता और परिवार द्वारा इस मंगल पाठ के आयोजन के लिए बहुत-बहुत साधुवाद देते हैं कि धर्म का संरक्षण और सनातन संस्कृति को जीवित रखने और उसे अन्य सनातन धर्म प्रेमियों में प्रचारित करने का कार्य किया जा रहा है। रानी सती दादी का मंगल पाठ एक धार्मिक अनुष्ठान है, जिसमें भक्त रानी सती दादी के जीवन और उनके सतीत्व की कहानी का पाठ करते हैं। यह पाठ विशेष रूप से भक्तों द्वारा सुख, समृद्धि और उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। कार्यक्रम में उदयपुर शहर के सैकड़ों गणमान्य नागरिक सहित अग्रवाल समाज के प्रमुख लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। डूंगरपुर चेंबर ऑफ कॉमर्स के पदाधिकारी प्रभुलाल पटेल, चिराग व्यास, पंकज नवकार, राजेश डेंडू, मुकेश श्रीमाल, गोपाल मराठा, प्रवीण श्रीमाल, निलेश पंचाल, अमित टेलर सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। इससे पूर्व दोनों न्यायाधिपति गर्ग और माथुर ने उदयपुर में विराजित राष्ट्रीय संत पुलक सागर महाराज का आशीर्वाद लिया।

उदयपुर में विराजित राष्ट्रीय संत पुलक सागर महाराज का के. के. गुप्ता ने आशीर्वाद लिया।

जेवर चोरी करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। सोने-चांदी की दुकान से जेवर चोरी करने के मामले में दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। प्रकरण के अनुसार राजेश पंचाल निवासी वाकला आम्बा कल्याणपुर ने रिपोर्ट दी। उसने बताया कि 13 अगस्त सवेरे बस स्टेण्ड वाकला आम्बा स्थित दुकान पर आया तो पिछे का दरवाजा खुला हुआ था एवं शटर कटा हुआ था। तलाशी करने पर डेढ़ तोले चांदी की मूर्तियां तीन, चांदी के ढोथेले सात, स्केप तथा दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे चुरा ले गए। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, पुलिस उप अधीक्षक राजीव राहर के सुपरविजन में कल्याणपुर थानाधिकारी राजेश कुमार के नेतृत्व में गठित दल ने कार्यवाही करते हुए पप्पु उर्फ पपला पुत्र बाबरू निवासी आडावेला लसाडिया सलूम्बर तथा कमलेश पुत्र मन्ना निवासी राजपुरा सलूम्बर को गिरफ्तार किया।

बांसवाड़ा क्षेत्रीय वन अधिकारी व वनपाल बीस हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। एसीबी बांसवाड़ा की टीम ने बीस हजार रूपये की रिश्वत लेते बांसवाड़ा क्षैत्रीय वन अधिकारी एवं वनपाल को रंगे हाथों गिरफ्तार किया।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी बांसवाड़ा को शिकायत मिली कि परिवादी की फर्म द्वारा वन रेंज में नर्सरी सुधारीणकरण व अन्य मरम्मत कार्यो के बील पास करने के लिए उक्त बिलों का 15 प्रतिशत कमीशन राशि 80 हजार रूपये की मांग कर परेशान किया जा रहा था। जिस पर 22 अगस्त को रिश्वत राशि मांग का सत्यापन कराया गया। जिसमें आरोपी लाडजी गरासिया वनपाल ने परिवादी से बिलों का भुगतान करने के एवज में अग्रिम 20 हजार रूपये आरोपी शांतिलाल चावला क्षैत्रीय वन अधिकारी प्रथम के लिए लेने हेते सहमत हुआ। जिस पर एसीबी उदयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक प्रहलादसिंह कृष्णिया के सुपवरविजन में एसीबी बांसवाड़ा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ऋषिकेश के नेतृत्व में गठित दल ने ट्रेक कार्यवाही कर लाडजी गरासिया वनपाल को 20 हजार रूपये रिश्वत लेते गिरफ्तार किया तथा शांतिलाल चावला क्षैत्रीय वन अधिकारी प्रथम की भी उक्त रिश्वत लेने देन मामले में संलिप्तता होने से उसे भी गिरफ्तार किया। ब्यूरो की टीम क्षैत्रीय वन अधिकारी शांतिलाल चावला के हिरणमगरी सेक्टर 14 स्थित निवास व वन रेंज डूंगरा के परिसार में स्थित निवास एवं लाडजी गरासिया के वन रेंज डूंगरा के परिसर में स्थित निवास की तलशी की जा रही है।

सहायक उपनिरीक्षक रिश्वत लेते गिरफ्तार

- पुत्र के विरूद्ध दर्ज प्रकरण में मदद करने की एवज में रिश्वत मांगी

उदयपुर, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो चित्तौड़गढ़ की टीम ने पुलिस थाना चन्देरिया जिला चित्तौड़गढ़ के एसआई सुभाषचन्द्र यादव को 9 हजार रूपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी चित्तौड़गढ़ को एक शिकायत मिली कि पुलिस थाना चन्देरिया के सहायक उप निरीक्षक सुभाषचन्द्र यादव द्वारा परिवादी के पुत्र के विरूद्ध दर्ज प्रकरण में मदद करने की एवज में 9 हजार रूपये रिश्वत की मांग कर परेशान किया जा रहा है। इस पर एसीबी रेंज उदयपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस प्रहलादसिंह कृष्णिया के सुपरविजन में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो चित्तौड़गढ़ के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रमसिंह के नेतृत्व में गठित दल ने ट्रेप कार्यवाही करते हुए आरोपीर सुभाषचन्द्र यादव हॉल सहायक उप निरीक्षक पुलिस थाना चन्देरिया को नौ हजार रूपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया।

आवेदन में संशोधन का अवसर

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग हेतु विज्ञापित की गई सहायक सांख्यिकी अधिकारी पदों की परीक्षाओं में अभ्यर्थी का नाम, पिता का नाम, फोटो, जन्म तिथि व जेंडर के अतिरिक्त अन्य संशोधन ऑनलाइन करने का अवसर दिया गया है। ऑनलाइन संशोधन 25 से 31 अगस्त तक किए जा सकेंगे। इस संबंध में विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। आयोग सचिव ने बताया कि उक्त परीक्षा का आयोजन 12 अक्टूबर 2025 को निर्धारित कार्यक्रमानुसार किया जाना प्रस्तावित है।

दुकान से सोना लेकर फरार हुये दो जने गिरफ्तार

कोटपूतली पुलिस ने सोना लेकर फरार होने के प्रकरण में दो अभियुक्तों को गिरफ्तार किया।

कोटपूतली, (निसं)। स्थानीय थाना पुलिस ने एक सुनार की दुकान से 50 ग्राम सोना लेकर फरार होने के प्रकरण में दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर सोना बरामद किया है।

एसएचओ राजेश शर्मा ने बताया कि गत 16 अगस्त को कस्बे के सराय मौहल्ला निवासी मुकेश सोनी ने दर्ज करवाया था कि उसकी सोनी मार्केट में स्वर्णकार की दुकान है। साथ ही पन्नालाल उर्फ पवन पुत्र मदनदास घडसी का बाड़ा वाले ने भी सोनी मार्केट में ही सुनार की दुकान कर रखी हैं। जिस पर कुछ दिनों पूर्व सुनील सिंघाना वाले को काम पर रखा था। उक्त कारीगर सुनील सिंघाना वाले से परिवादी मुकेश सोनी कई बार अपना काम भी करवाता था। कई बार कारीगर सुनील पीड़ित मुकेश की दुकान से सोना ले जाकर काम करके वापस दे जाया करता था। गत 6 अगस्त को पीड़ित मुकेश ने कारीगर सुनील को फोन करके सोने का काम करने के लिये बुलाया। जिसके बाद वह करीब 50 ग्राम सोना लेकर अपनी दुकान पर काम करने के लिये चला गया। लगभग दो घण्टे बीत जाने के बाद भी कारीगर सुनील सोने का काम करके वापस नहीं लौटा तो पीड़ित ने उसके मोबाइल पर फोन किया जो कि बंद आ रहा था।

इस पर दुकान मालिक पन्नालाल उर्फ पवन को फोन किया तो उसने कहा कि मुझे नहीं पता कि सुनील कहां गया, मैं अभी बाहर आया हूं एवं फोन काट दिया। इस पर कार्यवाही करते हुये स्थानीय थाना पुलिस ने सोना लेकर फरार हुये मुख्य अभियुक्त सुनील उर्फ श्याम (22) पुत्र मनोहर लाल भाट निवासी सांवलता कला, थाना रोहट (पाली) व उसके सहयोगी लक्ष्मण दास उर्फ कालू दास (33) पुत्र सज्जन दास वैष्णव निवासी अरटिया, थाना रोहट (पाली) को गिरफ्तार कर उनके पास से चोरी किया गया 50 ग्राम सोना बरामद कर लिया।

विवाहिता की मौत पर निजी अस्पताल में परिजनों का हंगामा, पुलिस से धक्का-मुक्की भी हुई

महिला की मौत के बाद अस्पताल के बाहर जुटे परिजन व पुलिस-परिजन के बीच धक्का-मुक्की हो गई।

- परिजन का आरोप है कि बीपी लो में महिला का ऑपरेशन किया, गलत इंजेक्शन लगाया

अजमेर, (कासं)। अजमेर के पुष्कर रोड स्थित एक निजी अस्पताल में विवाहिता की मौत होने पर परिजनों ने हंगामा खड़ा कर दिया। परिवार के लोगों का आरोप है कि ऑपरेशन से पहले महिला बिल्कुल सही थी, बातचीत कर रही थी। ऑपरेशन के बाद गलत इलाज और मेडिसिन के कारण उसकी मौत हो गई। मौत की खबर से अस्पताल पहुंचे परिजन व रिश्तेदारों ने अस्पताल में घुसने की कोशिश की। वहीं मौके पर तैनात पुलिस ने उन्हें अंदर घुसने से रोका जिससे पुलिस परिजन के बीच धक्का-मुक्की हो गई। मौके पर पहुंचे पुलिस के आला अधिकारियों की समझाइश के बाद मामला शांत हुआ और परिजन मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम के लिए तैयार हुए। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

पुष्कर रोड स्थित निजी हॉस्पिटल में 23 वर्षीया नीतू कंवर की उपचार के दौरान मौत हो गई। सूचना मिलते ही पीहर व ससुराल पक्ष के लोग शनिवार तड़के अस्पताल पहुंच गए और डॉक्टरों पर गलत इंजेक्शन लगाने व बीपी कम रहने पर भी ऑपरेशन करने का आरोप लगाया। मृतका के परिजन 50 लाख रुपए मुआवजे, संबंधित चिकित्सकों का लाइसेंस रद्द करने तथा अस्पताल को बंद करने की मांग पर धरने पर बैठ गए। हंगामे की सूचना पर सीओ दक्षिण रुद्रप्रकाश शर्मा के साथ सिविल लाइंस, हरिभाऊ उपाध्याय नगर, क्रिश्चियन गंज और गंज के चार थानों के प्रभारी सहित अतिरिक्त जाब्ता मौके पर पहुंचा। पुलिस ने सुरक्षा कारणों से हॉस्पिटल के मुख्य प्रवेश द्वार को बंद किया, मगर आक्रोशित परिजन जबरन भीतर घुसने की कोशिश करते रहे। इस दौरान धक्का-मुक्की भी हुई और कुछ मिनटों तक अफरा-तफरी का माहौल बन गया। एएसपी सिटी हिमांशु जांगिड़ ने मौके पर पहुंच कर हस्तक्षेप करना पड़ा। उन्होंने परिजनों को आश्वस्त किया कि शिकायत मिलने पर नियमानुसार प्रकरण दर्ज कर जांच कराई जाएगी। पुलिस की समझाइश के बाद शव एम्बुलेंस से जेएलएन मेडिकल अस्पताल की मोर्चरी भेजा गया, जहां तीन सदस्यीय मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

फागी निवासी मृतका के भाई गिरधर सिंह ने बताया कि नीतू की शादी तीन वर्ष पहले थांवला (परबतसर) निवासी रामसिंह राठौड़ से हुई थी तथा उसकी दो वर्ष की पुत्री भी है। 20 अगस्त को जांघ में गांठ के उपचार के लिए नीतू को हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। डॉक्टरों ने दो दिन इंजेक्शन से इलाज का भरोसा दिया, लेकिन 22 अगस्त की रात 9 बजे अचानक ऑपरेशन की बात कही, जिससे उसका बीपी लो हो गया। बावजूद इसके ओटी में ले जाकर ऑपरेशन कर दिया। सुबह चार बजे हमें कार्डियक अरेस्ट बताकर मौत की सूचना दी गई। मृतका की जेठानी मीना कंवर ने कहा कि ऑपरेशन थिएटर में डॉक्टरों के बीच विवाद हुआ और गलत इंजेक्शन से नीतू की जान चली गई।

महावीर शर्मा, थाना प्रभारी हरिभाऊ उपाध्याय नगर का कहना है कि मृतका के परिजन की शिकायत मिलने पर नियमानुसार कार्यवाही अमल में लाई जाएगी। मुकदमा दर्ज के बाद मृतका से संबंधित इलाज का रिकॉर्ड लिया जाएगा। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी। अस्पताल के बाहर देर शाम तक पुलिस तैनाती रही, फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है।

शराब के नशे में पीट-पीटकर दोस्त की हत्या, आरोपी गिरफ्तार

विवाद होने पर सिर दीवार पर दे मारा था, वारदात के बाद दोस्त फरार हो गया था

बीकानेर, (निसं)। रामपुरा बाइपास क्षेत्र में शराब के नशे में दो युवक आपस में झगड़ पड़े। इस दौरान एक ने दूसरे को इतना पीटा कि उसकी मौत हो गई। शव को वहीं छोड़कर शराबी दोस्त फरार हो गया। हालांकि पुलिस ने अब गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ में स्पष्ट हुआ है कि दोनों शराब के नशे में धुत्त थे।

सीओ सिटी श्रवणदास संत ने बताया कि रामपुरा बाइपास पर दो दोस्त सर्वोदय बस्ती निवासी चांदरतन नायक और सुनील नायक रंगरोगन का काम करते थे। दोनों ने ठेकेदार से एक हजार रुपए एडवांस लिए। फिर महादेव नगर स्थित सुनील के घर में शराब पीने पहुंच गए। नॉन वेज के साथ दोनों ने शराब पार्टी की। देर रात दोनों के बीच विवाद हो गया। शराब के नशे में दोनों झगड़ने लगे। इस दौरान सुनील ने चांदरतन से मारपीट की। उसका सिर पानी के कुंड की दीवार से मार दी, जिससे सिर पर गहरी चोट लगी और चांदरतन की वहीं मौत हो गई। सुबह वारदात का पता चलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। शव को पीबीएम अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया, जहां पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया। चांदरतन के बेटे सन्नी की रिपोर्ट पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया। उधर, पुलिस ने शुक्रवार को ही सुनील को हिरासत में ले लिया। पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया है।

करौली क्षेत्र में बारिश से हालात बिगड़े, पांचना बांध के चार गेट खोले

करौली और मध्य प्रदेश को जोड़ने वाली चंबल नदी भी पूरे उफान पर है

करौली, (निसं)। करौली जिला मुख्यालय सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में शुक्रवार रात्रि से हो रही झमाझम बारिश से हालत बिगड़ते नजर आ रहे हैं। वहीं करौली जिले के सबसे बड़े पांचना बांध के चार गेट खोलकर लगातार पानी की निकासी की जा रही है। वहीं क्षेत्र में हो रही लगातार बरसात के चलते करौली और मध्य प्रदेश को जोड़ने वाली चंबल नदी भी इस समय पूरे उफान पर है। चंबल नदी के खतरे का निशान 165 मीटर है और लगातार पानी की आवक के चलते इस समय चंबल नदी की स्थिति 164 मीटर पर पहुंच गई है। जिसको देखते हुए करौली जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सैना, पुलिस अधीक्षक लोकेश सोनवाल सहित जल संसाधन विभाग के अधिकारी पुरी निगरानी बनाए हुए हैं।

करौली के सबसे बड़े पांचना बांध के चार गेट खोलकर लगातार पानी की निकासी की जा रही है।

- पांचना बांध के चार गेट खोलकर 26233 क्यूसेक पानी की निकासी की गई

करौली जिला मुख्यालय पर शुक्रवार और शनिवार को दोपहर तक घने काले बादल छाए रहे, लेकिन शनिवार को दोपहर आधा घंटा जमकर वर्षा होने से सड़कों पर पानी बह निकला। व्करौली जिले के सबसे बड़े पांचना बांध में भारी पानी की आवक के चलते शनिवार को चार गेट खोलकर 26233 क्यूसेक पानी की निकासी शुरू की गई। इस मानसून सीजन में पहली बार एक साथ चार गेट खोले गए हैं। जल संसाधन विभाग ने डाउनस्ट्रीम क्षेत्र में अलर्ट जारी करते हुए लोगों से सावधानी बरतने और मवेशी नहीं भेजने की अपील की है। जानकारी के अनुसार गेट नंबर 2, 3, 4 और 6 को डेढ़-डेढ़ मीटर तक खोला गया है। बांध का जल स्तर 258.30 मीटर तक पहुंच गया है, जबकि बांध में वर्तमान में 26,233 क्यूसेक पानी की आवक दर्ज की जा रही है। इससे पहले 11 अगस्त को जल स्तर 257.95 मीटर होने पर गेट बंद कर दिए गए थे। इस मानसून सीजन में अब तक सात बार बांध के गेट खोले जा चुके हैं। शुक्रवार की रात करीब 11:30 बजे बांध के दो गेट खोल पानी की निकासी शुरू की थी, लेकिन बाद में पानी की आवक बढ़ने पर रात करीब 2:00 बजे तीसरा गेट भी खोल दिया था और प्रातः करीब 5:30 बजे गेटों की संख्या बढ़ाकर चार कर दी तथा मात्रा बढ़ाकर 26 हजार क्यूसेक की गई। बांध की स्थिति पर अधिशासी अभियंता सुशील कुमार गुप्ता, सहायक अभियंता वीर सिंह और कनिष्ठ अभियंता भवानी सिंह लगातार नजर रखे हुए हैं।

अधिशासी अभियंता ने बताया कि बीते 24 घंटों में जिले में कई स्थानों पर भारी बारिश दर्ज की गई। उन्होंने बताया कि कालीसिल बांध पर 8 फीट से अधिक, मामचारी बांध पर 1 फीट 4 इंच और नींदर बांध पर 1 फीट 5 इंच की चादर चल रही है।

इसके अलावा सपोटरा-कुडगांव सड़क मार्ग पर स्थित लूलोज नदी की पुलिया पर तेज-बहाव से 4 फीट से अधिक पानी बह रहा था। पुलिया पार करते समय बस का पहिया नीचे उतरने से बस पलट गई इस दौरान बस में बैठे लोगों की चीख पुकार मच गई। आसपास के ग्रामीणों ने मौके पर पहुंचकर बस में सवार लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला और ट्रैक्टर जेसीबी की मदद से बस को पानी से बाहर निकाल लिया। वहीं क्षेत्र में गोरे हर बनास एवं मोरल नदी भी उफान पर चल रही है। इसके अलावा लागरा क्षेत्र के बुगडार गांव का युवक वीर सिंह पुत्र राम सिंह अपना स्वास्थ्य खराब होने के कारण करौली की और आ रहा था। रास्ते में पड़ने वाली पुलिया पार करते समय बहते पानी में फिसल गया जिसकी सूचना मिलते ही थाना अधिकारी वासुदेव बासवाल पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों की मदद से युवक की तलाश की जा रही है।

टोंक जिले में कई जगह बाढ़ के हालात

टोंक जिले में हो रही तेज बारिश से कई जगह जलभराव के हालात बन गए।

- उनियारा से गलवा बांध के पास चार परिवारों के 22 सदस्यों को रेस्क्यू किया, कई इलाकों के लगभग 50 लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया
- पीपलू क्षेत्र में एक अध्यापक व उसकी बाइक बही, अध्यापक ने जैसे-तेसे अपनी जान बचाई
- पीपलू क्षेत्र के मोहिनी से लावा मार्ग रपटे पर तेज बहाव के चलते पशुपालक की 30-40 भेड़ें बह गई

टोंक, (निसं)। टोंक जिले में दो दिन से हो रही तेज बारिश से बाढ़ जैसे हालात हो गए हैं। शनिवार को कई जगह हालात जलभराव के बन गए। वनस्थली गांव में तीन से चार फीट पानी घरों में भर गया तथा स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी गई है।

एसडीआरएफ व सिविल डिफेंस की टीमें जलभराव में फंसे लोगों को बाहर निकालकर सुरक्षित स्थान पर छोड़ रही है। इसी प्रकार उनियारा से गलवा बांध के पास चार परिवारों के 22 सदस्यों को रेस्क्यू किया गया। वहीं इलाकों के लगभग 50 लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है। पीपलू क्षेत्र में एक अध्यापक व उसकी बाइक बह गई है। अध्यापक ने जैसे-तेसे करके अपनी जान बचाई। इसी क्रम में शनिवार को बीसलपुर बांध के चार गेट खोले गए हैं, ऐसे में वर्तमान में छह गेटों से दो-दो मीटर खोलकर प्रति सैकेंड 72120 क्यूसेक पानी की निकासी बनास नदी में की जा रही है। नासिरदा और उसके आसपास के इलाकों में पांच इंच बारिश हुई है, जिसके चलते थाना परिसर में भी पानी भर गया है तथा सभी नदी-नाले उफान पर है, सड़कों पर पानी बह रहा है। वहीं हमीरपुर में भी बाढ़ जैसे हालात हो गए हैं। इसी प्रकार पीपलू क्षेत्र के मोहिनी से लावा मार्ग रपटे पर पशुपालक अपनी भेड़ों को पानी से निकलने की कोशिश कर रहा था, तभी तेज बहाव के चलते 30-40 भेड़ें पानी में बह गई।

अलवर में तेज बारिश, सिलीसेढ़ बांध ओवरफ्लो हुआ

अलवर, (निसं)। अलवर में तेज बारिश ने शनिवार को अलवर प्रशासन और नगर परिषद की पोल खोल कर रख दी है। पहली बार बस स्टैंड रोड पर इतना पानी जमा हो गया कि लोग तैरने लगे। शहर की दुकानों में पानी भर गया।

- ग्राम कोटा खुर्द में पुराने मकान का बरामदा ढह गया, हादसे में नीचे सो रहे परिवार के सात सदस्य दबकर घायल हो गए
- पहली बार बस स्टैंड रोड पर इतना पानी जमा हो गया कि लोग तैरने लगे, दुकानों में भी पानी भर गया

रामगढ़ उपखंड के ग्राम कोटा खुर्द में पुराने मकान का बरामदा ढह गया।

जानकारी के अनुसार अलवर में शनिवार शाम को जोरदार बारिश हुई। बस स्टैंड के बाहर मुख्य रोड पर तीन फीट तक पानी भर गया। एक युवक तो रोड पर भरे पानी में तैराकी करने लगा। पानी में आस-पास दुकानों के आगे खड़े वाहन डूब गए। पुरानी कॉलोनियों में भारी भर गया। ये ही हालात अंबेडकर सर्किल, जिला हॉस्पिटल और पुलिस कंट्रोल रूम के सामने भी देखे गए। कई वाहन पानी में बंद हो गए। लंबा जाम लगने से भी वाहन चालक परेशान हुए। वहीं दो दिन की बरसात से सिलीसेढ़ बांध ओवरफ्लो हो गया। दो इंच से अधिक ऊपरा चल रही है। अब इसके बढ़ने के आसार हैं। दिन में भी रुक-रुककर कई बार बारिश हुई है, लेकिन शाम के समय करीब 30 मिनट तक अच्छी बारिश होने से शहर में पानी भर गया। अलवर में तेज बारिश के चलते रामगढ़ उपखंड के ग्राम कोटा खुर्द में एक हादसा हो गया। गांव में पुराने मकान पर निर्माण कार्य के दौरान अचानक बरामदा ढह गया। हादसे में नीचे सो रहे एक ही परिवार के सात सदस्य दब गए और घायल हो गए। हादसे में पीड़ित परिवार का बेटा, बहू, पोता और पोती समेत सात लोग चोटिल हुए। सभी घायलों को तत्काल ग्रामीणों की मदद से रामगढ़ अस्पताल ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार दिया गया। गंभीर रूप से घायल एक बालिका को बेहतर इलाज के लिए अलवर रेफर कर दिया गया।

गंगापुर सिटी में बारिश, सड़कों पर पानी भरा

गंगापुर सिटी, (निसं)। प्रदेश में मानसून ने एक बार फिर रफ्तार पकड़ ली है। शहर में बारिश के कारण जगह-जगह सड़कों पर पानी भर गया। शनिवार को भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की विदाई जोरदार बारिश के साथ हुई। दोपहर करीब एक बजे गरज के साथ बारिश शुरू हुई। तीन सप्ताह से कमजोर चल रहे मानसून की इस वापसी से शहर के कई हिस्सों में जलभराव हो गया। उपखण्ड क्षेत्र में पिछले 24 घंटें में 80 मिमी बारिश हो चुकी है। इलाके में शुक्रवार देर रात से बारिश का दौर शुरू हुआ जो शनिवार तक जारी रहा।

लगातार बारिश से निचली बस्तियां जलमग्न हो गई। शनिवार की बरसात में मिनी सचिवालय, पावर हाउस, एडीएम बंगले में पानी भर गया। बारिश के दौरान स्कूली बच्चे घर लौटते समय भीगते नजर आए। तेज हवाओं के कारण मौसम में ठंडक बढ़ी और तापमान में 2-3 डिग्री की गिरावट दर्ज की गई। शनिवार को दो घंटे से अधिक समय तक हुई बारिश से नया बाजार, नेहरू बाजार, कचहरी रोड की कई दुकानों में पानी घुस गया, जिससे दुकानदारों का लाखों रूपए का सामान खराब हो गया। कई दुपहिया वाहनों में पानी चले जाने से वाहनों का घसीटना पड़ा। वहीं कचहरी रोड पर लग रही पेड पोधों की दुकान पानी के तेज बहाव में बह गई, जिससे नर्सरी संचालक का हजारो रूपए का नुकसान हो गया।

गंगापुर सिटी में कचहरी रोड व फव्वारा चौक पर पानी भर गया।

बीकानेर में बारिश

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर में हुई मध्यम दर्जे की बारिश ने रामदेवरा पैदल जा रहे पदयात्रियों को रुकने के लिए मजबूर कर दिया, वहीं देशनोक में खेजड़ी पूजने जा रही महिलाओं को दो-दो फीट पानी से भरी सड़कों से गुजरना पड़ा। बारिश का दौर अभी जारी है और मौसम विभाग ने येलो अलर्ट जारी कर दिया है। उधर, शहर में जर्जर मकानों को लेकर नगर निगम ने सौ से ज्यादा घरों पर बैनर टांग दिए हैं।

बीकानेर शहर में सुबह से बादलवाही को देखते हुए बारिश की उम्मीद की जा रही थी, इस बीच लूणकरनसर में बारिश शुरू हो गई। लूणकरनसर के मुख्य मार्गों पर बारिश के कारण भारी वाहनों के पहिए भी एक बार थम गए। तेज बारिश से मुख्य मार्ग पर पानी एकत्र हो गया। देशनोक में तेज बारिश के कारण पालिका कार्यालय के पास ही भारी मात्रा में पानी एकत्र हो गया। करीब दो फीट पानी से होकर यहां से महिलाओं को निकलना पड़ा। खेजड़ी पेड़ की पूजा के लिए जा रही महिलाओं को पानी से भरी सड़क पार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। देशनोक में जगह-जगह पानी एकत्र होने से घरों को भी नुकसान हो रहा है। बीकानेर शहर में करीब आधा घंटे की रिमझिम बारिश ने ही मौसम सुहाना कर दिया। एक बार तो झमाझम बारिश की उम्मीद बंधी थी लेकिन कुछ देर की रिमझिम बारिश के बाद मौसम सुहाना हो गया। फिलहाल बरसात का सिलसिला थम गया है लेकिन आसमान में बादल कभी भी तेज बारिश कर सकते हैं। मौसम विभाग ने बीकानेर के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। उम्मीद की जा रही है कि शाम तक बारिश के एक-दो राउंड और हो सकते हैं। पिछले कई दिनों से बारिश को तरस रहे बीकानेर के किसान भी तेज बरसात का इंतजार कर रहे हैं।

जनुभाई के बताये रास्ते एवं उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लें : प्रो. सारंगदेवोत

राजस्थान विद्यापीठ के 89वें स्थापना दिवस पर पंडित जनार्दराय नागर की प्रतिमा का लोकार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान विद्यापीठ के 89वें स्थापना दिवस पर श्रमजीवी महाविद्यालय परिसर में कुलाधिपति भंवरलाल गुर्जर, कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, पीठ स्थविर कौशल नागदा, पूर्व कुलपति प्रो. दिव्यप्रभा नागर, प्रफुल्ल नागर ने संस्थापक मनीषी पंडित जनार्दराय नागर की प्रतिमा का लोकार्पण कर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धाभाव के साथ उन्हें नमन किया। अनावरण पंडित लोकेश पालीवाल के नेतृत्व में 11 पंडितों ने मंत्रोच्चारण के साथ आयोजन किया गया।

प्रारंभ में कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि पंडित जनार्दन राय नागर, जिन्हें जनू भाई के नाम से भी जाना जाता है, ने अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को शिक्षित करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया। उनका संघर्ष, मानवीय दृष्टिकोण, सामाजिक और सामुदायिक सरोकार आज भी प्रेरणा स्त्रोत हैं। उन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों को सर्वोपरि मानते हुए शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि आजादी के 10 वर्ष पूर्व 1937 में जो पौधा रोपित किया था वह आज वटवृक्ष बन गया है। अब इसकी हिफाजत करना, इसकी गरिमा बनाये रखना व इसकी और अधिक उन्नति करने का दायित्व विद्यापीठ के सभी कार्यकर्ताओं का है।

राजस्थान विद्यापीठ के स्थापना दिवस कार्यक्रम में प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत, पीठ स्थविर कौशल नागदा, पूर्व कुलपति प्रो. दिव्यप्रभा नागर, प्रफुल्ल नागर आदि मौजूद रहे।

उन्होंने कहा कि जनुभाई की प्रतिमा को देखने से हमें एक नई उर्जा मिलती है, एक नया संदेश मिलता है और जब संकट में होते है तो उस समय हमें ऐसा लगता है कि जनुभाई हमारे साथ हैं। उन्होंने कहा कि आज हमें सकल्प के साथ विद्यापीठ का आत्मसात करने की जरूरत है। जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र कठिनाईयों से जूझता है और इसे अवसर में बदलने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि आज संस्थान में 200 से अधिक पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं, सभी कोर्स यूजीसी एवं सम्बंधित काउंसिल से मान्यता प्राप्त है। तीन रूपये से शुरू इस संस्थान का वर्तमान में 70 करोड़ का वार्षिक बजट है जो अपने आप में एक कीर्तिमान स्थापित करता है।

कुलाधिपति भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि यह दिवस बीतें वर्षो में किए कार्यों का मूल्यांकन तथा नवीन दायित्व बोध का है। नई पीढ़ी से मेवाड़ के ग्रामीण समुदाय के काम हाथ मे लेते हुए जनुभाई के सपनों का पूरा करने की बात कही। आयोजित समारोह से पूर्व विद्यापीठ के प्रतापनगर परिसर में स्थापित जनुभाई की आदमकद प्रतिमा पर विद्यापीठ के तीनों परिसर के कार्यकर्ताओं ने पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

इस अवसर पर पीठ स्थविर डॉ. कौशल नागदा, कुलाधिपति भंवर लाल गुर्जर, कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने विद्यापीठ के झण्डे का झण्डारोहण कर संस्थान गीत का गायन किया। पीठ स्थविर डॉ. कौशल नागदा ने सभी कार्यकर्ताओं को साथ लेकर विद्यापीठ को ओर अधिक उंचाईयों पर ले जाने का संकल्प दिलाया। मुख्य अतिथि डॉ. प्रफुल्ल नागर ने कहा कि पंडित नागर की शिक्षा के प्रति दूरदृष्टि को आगे बढ़ाते हुए यदि वर्तमान और भावी पीढ़ी शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक प्रयास करें, तो उनके विचार चिरकाल तक जीवित रहेंगे। पूर्व कुलपति प्रो. दिव्य प्रभा नगर ने कहा कि पंडित नगर का व्यक्तित्व शिक्षा, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए समर्पित था। संचालन रजिस्ट्रार डॉ. तरूण श्रीमाली, डॉ. हेमेन्द्र चौधरी, आभार प्रो. मलय पानेरी ने जताया।

इस अवसर पर शिक्षाविद् प्रो. एमपी शर्मा, प्रो. पीआर व्यास, डॉ. पंकज चैधरी, प्रो. शशि चितौडा, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, डॉ. भवानीपाल सिंह, पुरूषोतम शर्मा, योगेश सक्सेना, शर्वांश नागर, सक्सेना, डॉ. कला मुणेत, प्रो. सरोज गर्ग, प्रो. जीवन सिंह खरकवाल, प्रो. गजेन्द्र माथुर, डॉ. एसबी नागर, डॉ. मंजु मांडोत, डॉ. बबीता रसीद, डॉ. शैलेन्द्र मेहता, डॉ. धमेन्द्र राजौरा, डॉ. दिलीप सिंह चौहान, डॉ. सपना श्रीमाली, डॉ. हीना खान, डॉ. नीरू राठौड़, डॉ. सुनिता मुर्डिया, डॉ. अवनीश नागर, डॉ. राजन सुद, डॉ. अपर्णा श्रीवास्तव, डॉ. अलक नंदा, डॉ. बलिदान जैन, डॉ. ओम पारीख, डॉ. विजय दलाल, उदय भान सिंह सहित विद्यापीठ के डीन, डायरेक्टर एवं शहर के गणमान्य नागरिकों ने जनुभाई की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया।

सेना भर्ती में दौड़ते युवक को हार्ट अटैक आया, मौत

फिनिशिंग लाइन से पहले बेहोश होकर गिर गया था, हॉस्पिटल में दम तोड़ा

बीकानेर, (निसं)। जोधपुर में सेना भर्ती में दौड़ते हुए 22 साल के युवक को साइलेंट अटैक आ गया। इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) का रहने वाला मुन्नीराम 21 अगस्त को मंडोर के सीमा सुरक्षा बल के कैंपस में पहुंचा था। हादसे के बाद उसे मथुरा दास माथुर हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया था। शुक्रवार (22 अगस्त) सुबह चार बजे उसकी मौत हो गई।

- श्रीडूंगरगढ़ का रहने वाला मुन्नीराम मंडोर के सीमा सुरक्षा बल के कैंपस पहुंचा था

मुन्नीराम के भाई रामनिवास ने बताया कि दौड़ के दौरान वो पहले फिनिशिंग लाइन के पास गिर गया। इसके बाद फिर दौड़ने की कोशिश की, लेकिन बेहोश होकर गिर गया। इसके बाद वह उठ नहीं पाया। उसे पहले मंडोर के हॉस्पिटल ले जाया गया था। वहां से उसे एमडीएम में रेफर किया गया था, जहां उसकी 22 अगस्त को मौत हो गई। सेना भर्ती में युवक को हार्टअटैक की घटना ने सभी को चौंकाया है। मुन्नीराम को जब एमडीएम लाया गया था तो उसकी सभी जांच हुई थी। उसके शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं थे। किसी दूसरी बीमारी के भी कोई सिम्पटम्स नहीं नजर आए, इसलिए आशंका है कि उसे साइलेंट अटैक आया था। रामनिवास ने बताया कि पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट आने के बाद वे आगे की कार्रवाई करेंगे। परिवार के अनुसार बीकानेर के कल्याणसर का रहने वाला मुन्नीराम बीकानेर में कॉम्पिटिशन एग्जाम के लिए कोचिंग कर रहा था। उसके पिता का देहांत हो चुका है। उसके परिवार में मां और दो बड़े भाई हैं।

होटल से गिरने पर युवक की मौत : उदयपुर शहर के अम्बामाता थाना क्षेत्र बड़ी में निर्माणाधीन होटल की दूसरी मंजिल से गिरने पर युवक की मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार शहर के अम्बामाता थाना क्षेत्र में बड़ी में निर्माणाधीन होटल की दूसरी मंजिल से गिरने पर स्वामीनगर टेकरी रोड हिरणमगरी निवासी पुरूषोतम गोराणा की मौत हो गई। सूचना मिलने पर एएसआई नरेन्द्रसिंह ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। वहीं गत दिनों शहर के हिरणमगरी थाना क्षेत्र पावर हाउस क्रोसिंग के समीप बाइक की टक्कर से बाइक चालक शांतिनगर (70) सविना निवासी चुन्नीलाल पुत्र गिरधारीलाल गलरानी गंभीर घायल हो गया, जिसे चिकित्सालय में भर्ती करवाया जहां उसकी मौत हो गई।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

वर्ष 2026 हेतु ऑनलाईन परीक्षा आवेदन-पत्र भरने की तिथियों में संशोधन की सूचना

वर्ष 2026 की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले समस्त नियमित एवं स्वयंपाठी परीक्षार्थियों के ऑनलाईन परीक्षा आवेदन-पत्र भरने एवं शुल्क जमा कराने की अन्तिम तिथियों में निम्नानुसार संशोधन किया गया हैः-

परीक्षा शुल्क	आवेदन पत्र भरने की आरम्भ तिथि	आवेदन पत्र भरने एवं चालान मुद्रित करने की अंतिम तिथि	परीक्षा शुल्क बैंक में जमा कराने की अंतिम तिथि	आवेदन पत्र एवं चालान नोडल केन्द्र पर जमा कराने की अंतिम तिथि
सामान्य परीक्षा शुल्क से	24.07.2025	03.09.2025	10.09.2025	18.09.2025
एक अतिरिक्त परीक्षा शुल्क सहित	04.09.2025	10.09.2025	15.09.2025	18.09.2025
असाधारण परीक्षा शुल्क (केवल स्वयंपाठी हेतु) जिला मुख्यालयों पर	11.09.2025	25.09.2025	04.10.2025	सीधे बोर्ड कार्यालय में

1. आवेदन पत्र भरने से संबंधित अन्य प्रक्रिया/शुल्क पूर्व की भांति यथावत रहेंगे।
2. आवश्यक निर्देश बोर्ड की वेबसाइट https://rajeduboard.rajasthan.gov.in पर देखे।

सचिव

मुख्यमंत्री ने बालिकाओं और कामकाजी महिलाओं को वितरित की ई-साइकिल

''ई-साइकिल वितरण समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा, ''बेटियों की मुस्कान ही हमारी ताकत है''

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार बालिका शिक्षा, महिला सुरक्षा, महिला सशक्तीकरण और महिला उत्थान को प्राथमिकता मानते हुए काम कर रही है। उन्होंने कहा कि बेटियों की मुस्कान ही हमारी ताकत है तथा हम प्रदेश की महिला शक्ति के उत्थान के लिए तत्पर हैं। महिलाओं और बेटियों के शिक्षित और सशक्त होने से ही देश और समाज सशक्त होगा। शर्मा शनिवार को मुख्यमंत्री निवास पर बालिकाओं को ई-साइकिल वितरण समारोह के अवसर पर संबोधित कर रहे थे।

भजनलाल शर्मा ने कहा कि माताएं-बहनें हमारी संस्कृति एवं संस्कारों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाती हैं। मातृशक्ति समाज और परिवार में बच्चों के पालन से लेकर बुजुर्गों की सेवा तक विभिन्न भूमिकाओं का बखूबी निर्वहन करती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का मूलमंत्र देकर लिंगानुपात में सुधार तथा बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिया। उन्होंने कहा कि इसी दिशा में राज्य सरकार का प्रयास है कि कोई भी बेटी शिक्षा से वंचित न रहे। राज्य सरकार द्वारा गार्गी पुरस्कार योजना के तहत 3.90 लाख बालिकाओं एवं बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के तहत लगभग 2 लाख बालिकाओं को प्रोत्साहन दिया गया है। उन्होंने कहा कि लाडो प्रोत्साहन योजना के तहत गरीब परिवारों को बालिकाओं के जन्म पर 1 लाख 50 हजार रुपये का सेविंग बॉन्ड मिल रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने अब तक विभिन्न योजनाओं में लगभग 11 लाख से अधिक छात्राओं को साइकिल प्रदान की है। मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि प्रदेश में महिला सशक्तीकरण की दिशा में मुख्यमंत्री नारी शक्ति उद्यम प्रोत्साहन योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना एवं मुख्यमंत्री मातृत्व पोषण योजना संचालित की जा रही हैं। राज्य सरकार ने प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में प्रोत्साहन राशि को बढ़ाकर 6 हजार 500 रुपये किया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पांच साल में चार लाख सरकारी एवं निजी क्षेत्र में 6 लाख नौकरियों के संकल्प को पूरा करेगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को निज निवास पर बालिकाओं को ई-साइकिल वितरित की और उनसे संवाद किया।

■ भजनलाल शर्मा ने कहा कि ''बालिका शिक्षा, महिला सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण और महिला उत्थान राज्यसरकार की प्राथमिकता है।

मुख्यमंत्री ने बालिकाओं से आत्मीयता से संवाद करते हुए उनकी जिज्ञासाओं को पूरा किया। छात्रा सीमा यादव ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ई-साइकिल से सपनों को नई उडान मिलेगी। वहीं, छात्रा अभिनीति ने कहा कि ई-साइकिल से आवागमन में होने वाली पैसे की बचत से वह कम्प्यूटर की पढ़ाई कर सकेंगी।

इसी तरह, छात्रा विनीता गोठवाल के साइकिल चलाने के सवाल पर मुख्यमंत्री ने आत्मीयता से कहा कि उनके छात्र जीवन में स्कूल जाने के लिए वे साइकिल का उपयोग करते थे। संवाद के दौरान निजी क्षेत्र में कार्यरत लाभार्थी आशा ने मुख्यमंत्री से कहा कि ई-साइकिल के मिलने से उनको आवागमन में सुविधा मिलेगी तथा समय व पैसे की बचत होगी और वह फिट इंडिया मुहिम का हिस्सा भी बन सकेंगी। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाली छात्रा रितिका ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा जारी भर्ती परीक्षाओं का कैलेण्डर जारी करने से बेहतर तैयारी हो पा रही है तथा पेपरलीक जैसी घटनाओं पर अंकुश लगने से उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है। उन्होंने आभार जताते हुए कहा कि उनके पिता विशेष योग्यजन हैं तथा मुख्यमंत्री को देखकर उन्हें परिवार के सदस्य जैसा प्रतीत होता है जिन्होंने ई-साइकिल का उपहार दिया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर आ ान किया कि वे सभी दृढ़ निश्चय एवं कड़ी मेहनत के साथ अपने सपनों को पूरा करें। राज्य सरकार बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए उनके साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री ने इस दौरान बालिकाओं एवं कामकाजी महिलाओं को ई-साइकिल वितरित की। कार्यक्रम में ईईएसएल की ई-बाईसाइकिल प्रोग्राम हैड रितु सिंह सहित बड़ी संख्या में लाभार्थी बालिकाएं एवं कामकाजी महिलाएं उपस्थित रहीं।

साथिन-आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने जताया उपमुख्यमंत्री का आभार

साथिन और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने शनिवार को उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी से मुलाकात कर राजस्थान सरकार के हालिया फैसलों के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उनका आभार जताया।

जयपुर । साथिन और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने राजस्थान सरकार के हालिया फैसलों के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी का आभार व्यक्त किया।

कार्यकर्ताओं ने कहा कि ग्राम पंचायतों के नगर पालिकाओं में विलय के बाद उन्हें मानदेय सेवा से हटा दिया गया था, लेकिन सरकार ने बड़ा निर्णय लेकर सभी को फिर से मानदेय सेवा में बहाल किया और आज वे ऑन ड्यूटी है।

कार्यकर्ताओं ने उल्लेख किया कि उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी के नेतृत्व और संवेदनशीलता के कारण ही यह निर्णय संभव हो सका। उन्होंने हमेशा महिला सशक्तिकरण और साथिन-आंगनबाड़ी कर्मियों के हितों के लिए आवाज उठाई है। इसके अलावा उन्होंने रक्षा बंधन पर मिली 501 रुपये की राशि, 1 किलो मिठाई और छाता वितरण के लिए भी सरकार का धन्यवाद किया। साथ ही 463 महिलाओं को महिला पर्यवेक्षक पद देने, ग्रेच्युटी की बजट घोषणा और दो साल में 10 प्रतिशत मानदेय बढ़ोतरी के लिए भी आभार जताया। कार्यकर्ताओं ने कहा कि राज्य सरकार के इन फैसलों से उनका मनोबल बढ़ा है और वे और अधिक समर्पण के साथ काम करेंगी।

सप्त शक्ति कमान ने मनाया आवा दिवस

जयपुर। सप्त शक्ति आवा ने 23 अगस्त को सप्त शक्ति ऑडिटोरियम में बड़े ही गर्व और उत्साह के साथ 59वां आवा दिवस मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आवा की क्षेत्रीय अध्यक्षा बरिंदर जीत कौर उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में वरिष्ठतम वेटरन लेडी , वीर नारियाँ तथा अन्य गणमान्य महिलाएँ भी सम्मिलित हुई। एडब्ल्यूडब्ल्यूए दिवस के अवसर पर, संगठन द्वारा कई सार्थक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में 19 और 20 अगस्त को जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों - मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा, एनीमिया, दृष्टि देखभाल और कैंसर (मैमोग्राफी और पैप स्मीयर) की व्यापक जाँच के लिए एक दो दिवसीय चिकित्सा शिविर आयोजित किया। सप्त शक्ति ऑडिटोरियम में एक मनमोहक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एडब्ल्यूडब्ल्यूए अध्यक्षा ने वीडियो संदेश के माध्यम से समस्त एडब्ल्यूडब्ल्यूए परिवार को बधाई और शुभकामनाएँ दीं। क्षेत्रीय अध्यक्षा ने भी एडब्ल्यूडब्ल्यूए के समस्त परिवार को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। आर्मी पब्लिक स्कूल जयपुर के छात्रों द्वारा प्रस्तुत जीवंत सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को और भी आकर्षक बना दिया। इस मौके पर फिक्की फ्लो, जयपुर चैप्टर और सप्त शक्ति एडब्ल्यूडब्ल्यूए के बीच एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। यह सहयोग कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता और उद्यिमता के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के साझा संकल्प का प्रतीक है, जो नए अवसर और प्रगति के मार्ग प्रशस्त करेगा। कार्यक्रम के दौरान सहयोगियों, आर्मी पब्लिक स्कूल के छात्रों तथा एडब्ल्यूडब्ल्यूए पुरस्कार विजेताओं को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित करने हेतु एक सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया।

वाइस प्रिंसिपल को पदावतन करने पर रोक, जवाब मांगा

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के वाइस प्रिंसिपल को पदावनत कर वापस व्याख्याता लगाने के आदेश पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव, कार्मिक सचिव और माध्यमिक शिक्षा निदेशक को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस महेन्द्र कुमार गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश सत्यनारायण की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता विजय पाठक ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता को 28 फरवरी, 2023 को व्याख्याता से वाइस प्रिंसिपल पद पर पदोन्नत किया गया था। तब से याचिकाकर्ता वाइस प्रिंसिपल पद का काम करता चला आ रहा है। इस दौरान विभाग ने जुलाई, 2024 में काउन्सलिंग कर उसे इस पद पर नियमित नियुक्ति देते हुए दूसरी स्कूल में कार्य ग्रहण करवा दिया।

वैश्विक महाशक्तियां स्वार्थों के कारण भारतीय आर्थिक हितों को नुकसान पहुँचा रही : सतीश कुमार

सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र में स्वदेशी सुरक्षा एवं स्वावलंबन अभियान के तहत उद्यमियों की बैठक

जयपुर। स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय सह-संगठक सतीश कुमार ने कहा है कि वैश्विक महाशक्तियां अपने स्वार्थों के कारण भारतीय आर्थिक हितों को नुकसान पहुँचा रही हैं।

अमेरिका लगातार टैरिफ बढ़ाकर भारत के हितों पर आघात कर रहा है और अपनी शर्तें भारत पर थोपना चाहता है, जो देशहित में स्वीकार्य नहीं है। वे स्वदेशी जागरण मंच जयपुर प्रांत की ओर से स्वदेशी सुरक्षा एवं स्वावलंबन अभियान के अंतर्गत सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र स्थित फरिश्ता एक्सपोर्ट्स में उद्यिमयों की महत्वपूर्ण बैठक को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि एक जिम्मेदार भारतीय नागरिक होने के नाते हमें दैनिक जीवन की वस्तुओं की सूची बनाकर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना होगा और स्वदेशी उत्पादों को अपनाना होगा। जहां तक संभव हो, उद्योग-धंधों में भी स्वदेशी मशीनों एवं उपकरणों का प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि स्थानीय उत्पादों और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से ही देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी तथा विदेशी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर निर्भरता घटेगी।

सतीश कुमार ने कहा कि अमेरिका, चीन, तुर्की और अजैरबान जैसे देशों का रवैया कभी भारत समर्थक नहीं रहा है।

इन देशों ने आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान का समर्थन किया है, इसलिए इनको आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से दंडित करना आवश्यक है। इसका एकमात्र विकल्प स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और खरीद-फरोख्त को बढ़ावा देना है।

स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय सह-संगठक सतीश कुमार ने सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र में उद्यामियों से बातचीत की।

प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. धर्मवीर चंदेल ने बताया कि अभियान का मुख्य उद्देश्य भारतीयों द्वारा स्वदेशी वस्तुओं का पूर्ण उपयोग, सम्मान और विदेशी कंपनियों के उत्पादों का परित्याग करना है।

बैठक में उद्यिमयों की प्रमुख समस्याओं पर चर्चा की गई और उनके समाधान के उपायों पर विचार-विमर्श हुआ। इस अवसर पर प्रांत संयोजक सुरेंद्र कुमार नामा, प्रांत समन्वयक लोकेन्द्र सिंह, प्रांत सह-समन्वयक दिनेश कुमार शर्मा, विभाग सह-संयोजक राम प्रसाद शर्मा, जयपुर महानगर संयोजक शंभू सिंह, सांगानेर महानगर संयोजक शेर सिंह सहित अनिरुद्ध जोशी, पुरुषोत्तम जोशी, महेश कालूवास तथा सीतापुरा इंडस्ट्रियल एरिया के 35 उद्यमी उपस्थित थे।

30 और 31 अगस्त को लिखित परीक्षा

जयपुर । पुलिस विभाग में पदोन्नित की राह देख रहे उप निरीक्षकों के लिए खुशखबरी है। पुलिस मुख्यालय, जयपुर ने उप निरीक्षक से पुलिस निरीक्षक (एपी/सीपी) पद पर पदोन्नित के लिए होने वाली योग्यात्मक परीक्षा 2022-23 की अस्थाई पात्रता-अपात्रता सूची जारी कर दी है। चयन समिति के सदस्य और पुलिस अधीक्षक सीआईडी सीबी लक्ष्मणदास द्वारा जारी पत्र के अनुसार जिन उम्मीदवारों को इस सूची में पात्र माना गया है, उनकी लिखित परीक्षा 30 और 31 अगस्त को जयपुर में आयोजित की जाएगी।

मोदी सरकार की ''विवाद से विश्वास'' योजना व्यापारियों-उद्यिमयों को दे रही राहत : मदन राठौड़

इस योजना के द्वितीय चरण में 4138 करोड़ की राशि का समाधान हुआ : भाजपा प्रदेशाध्यक्ष

जयपुर । भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई ''विवाद से विश्वास योजना'' का द्वितीय चरण करदाताओं को बड़ी राहत प्रदान कर रहा है। यह योजना मुख्य रूप से आयकर दाताओं के लंबित विवादों के समाधान के उद्देश्य से शुरू की गई है, जिससे करदाताओं को एक निर्धारित राशि का भुगतान कर अपने विवादों का त्वरित और न्यायपूर्ण निपटारा करने का अवसर मिल रहा है। राठौड ने बताया कि विवाद से विश्वास योजना-2 को 1 अक्टूबर, 2024 से लागू किया गया है। इसके अंतर्गत अब तक 1249 आवेदन/दावे प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 336 मामलों का समाधान सफलतापूर्वक किया जा चुका है। इस योजना का मुख्य फोकस सरकारी ई-मार्केटप्लेस और रेल मंत्रालय की गैर-जेम संविदाओं के अंतर्गत उत्पन्न विवादों के निपटान पर है।भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने बताया कि प्राप्त आंकड़ों के अनुसार इस योजना के तहत निपटाए गए विवादित मामलों की कुल राशि 5557 करोड़ रही है, जिसमें से अब तक 4138 करोड़ का समाधान किया जा चुका है। इसी प्रकार आईआरईपीएस और एमओआर पोर्टल के माध्यम से 553.64 करोड़ की विवादित राशि और 727.08 करोड़ के दावों का भी सफल निपटारा हुआ है। राठौड़ ने कहा कि यह उपलब्धि केंद्र सरकार की विवाद निपटान के प्रति गंभीरता और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। योजना पारदर्शिता और जवाबदेही के सिद्धांतों पर आधारित है, जिससे व्यापारियों और उद्यिमयों को राहत मिली है और राजस्व प्रक्रिया भी अधिक सरल हुई है।भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि इस प्रकार की योजनाएं न केवल सरकार की नीतिगत स्पष्टता को दर्शाती हैं, बल्कि करदाताओं को यह विश्वास भी देती हैं कि सरकार उनके हितों के प्रति संवेदनशील है और उनके विवादों का समाधान शीघ्रता से करने के लिए प्रतिबद्ध है। विवाद से विश्वास योजना को वित्त मंत्रालय द्वारा पुन: प्रारंभ किया गया है। इसका उद्देश्य लंबित प्रत्यक्ष कर विवादों को समाप्त करना है और कर, जुर्माना, ब्याज एवं शुल्क से संबंधित मुद्दों के त्वरित समाधान हेतु एक सरल और व्यावहारिक ढांचा प्रदान करना है। इस योजना के माध्यम से सरकार मुकदमेबाजी की प्रक्रिया को कम कर करदाताओं का समय और संसाधन बचा रही है। इससे सरकार और नागरिकों के बीच विश्वास की भावना को बल मिलता है।

सांसद खेल महोत्सव सभी लोकसभा क्षेत्रों में 29 अगस्त से

जयपुर । भारतीय जनता पार्टी 29 अगस्त से प्रदेश के सभी लोकसभा क्षेत्रों में 'सांसद खेल महोत्सव' का आयोजन करेगी। भाजपा प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक ने बताया कि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ के निर्देश पर खेल महोत्सव के सफल आयोजन के लिए पार्टी के 25 वरिष्ठ नेताओं एवं सांसदों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। पारीक ने बताया कि लोकसभा क्षेत्र श्रीगंगानगर में पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी, बीकानेर में केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल, चुरू में सांसद घनश्याम तिवाड़ी, झुंझुनूं में प्रदेश उपाध्यक्ष नारायण लाल पंचारिया, सीकर में पूर्व सांसद सुमेधानंद सरस्वती, जयपुर ग्रामीण में सांसद राव राजेंद्र सिंह, जयपुर शहर में सांसद मंजू शर्मा, अलवर में केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव, भरतपुर में पूर्व सांसद निहालचंद मेघवाल, करौली में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी, दौसा में पूर्व सांसद मनोज राजौरिया, टोंक-सवाई माधोपर में पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड, अजमेर में केंद्रीय राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, नागौर में सांसद राजेंद्र गहलोत, पाली में सांसद पीपी चौधरी, जोधपुर में केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को आयोजन की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

पुराने लंबित मुकदमों का निस्तारण करेंगे सेवानिवृत्त जज : केन्द्रीय विधि मंत्री

पूर्व न्यायाधीश गणपत सिंह भंडारी की ओर से लिखित पुस्तक ''तत्काल न्याय प्रदान करना: पूर्व जज की यादें'' का विमोचन

जयपुर । केंद्रीय विधि मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि अदालतों में लंबित मुकदमों का निस्तारण सेवानिवृत्त जजों के जरिए कराने पर प्रारंभिक रूप से सहमति बन गई है।

इसके लिए हाईकोर्ट प्रशासन की ओर से छंटनी कर शारीरिक रूप से सक्षम पूर्व न्यायाधीशों के नाम भेजे जाए। इसके साथ ही इवनिंग कोर्ट्स के संचालन को लेकर भी चर्चा की जा रही है। इस साल हाईकोर्ट में बड़ी संख्या में जजों की नियुक्ति की गई है। इससे मुकदमों के निस्तारण में सहायता मिलेगी।

केन्द्रीय विधि मंत्री मेघवाल ने यह विचार पूर्व न्यायाधीश गणपत सिंह भंडारी की ओर से लिखित पुस्तक तत्काल न्याय प्रदान करना: पूर्व जज की यादें के विमोचन समारोह में रखे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि जस्टिस संजीव प्रकाश शर्मा ने कहा कि जज की यह कोशिश रहती है कि केस के हर पहलू को देखकर मुकदमे का निस्तारण किया जाए। वकील को तारीख इसलिए दी जाती है कि वह केस से जुड़ा हर तथ्य सामने रख सके। जस्टिस शर्मा ने कहा कि मध्यस्थता के जरिए दोनों पक्षों की सहमति से मुकदमे का तत्काल निस्तारण किया जाता है।

केंद्रीय विधि मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने शनिवार को जयपुर में पूर्व न्यायाधीश गणपत सिंह भंडारी की पुस्तक ''तत्काल न्याय प्रदान करना: पूर्व जज की यादें'' का विमोचन किया। इस मौके पर जस्टिस अनुरूप सिंघी, पुस्तक के लेखक गणपत सिंह भंडारी, महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जीएस सिंघवी, जस्टिस एन.के. जैन, पूर्व लोकायुक्त एस.एस. कोठारी भी मौजूद थे।

पुस्तक के लेखक गणपत सिंह भंडारी ने बताया कि पुस्तक में तत्काल न्याय देने के अनुभवों के बारे में जानकारी दी गई है।

अपने सेवाकाल के बारे में बताते हुए भंडारी ने बताया की उन्होंने अपनी पूरी सेवा में कभी भी फैसला सुरक्षित नहीं रखा।

जिस दिन बहस पूरी होती थी, उसी दिन फैसला दिया जाता था। इसके अलावा बंटवारे सहित सिविल मुकदमों में मौके पर जाकर मुकदमों का निस्तारण किया जाता था।

कार्यक्रम में जस्टिस अनुरूप सिंघी, महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जीएस सिंघवी, जस्टिस एनके जैन, पूर्व लोकायुक्त एस.एस. कोठारी सहित विधि क्षेत्र से जुडे लोग मौजूद रहे।

फिट इंडिया मिशन के तहत राजस्थान पुलिस का फिटनेस डोज

■ ''संडेज ऑन साइकिल'' अभियान से जुड़ेंगे 17 हजार से अधिक लोग

जयपुर। फिट इंडिया मूवमेंट जिसकी शुरुआत प्रधानमंत्री द्वारा 2019 में की गई थी, का उद्देश्य फिटनेस को सभी नागरिकों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाना है। इसी पहल के अंतर्गत युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से राजस्थान पुलिस रविवार को ''संडेज ऑन साइकिल'' अभियान का एक विशेष संस्करण आयोजित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम राज्य के सभी जिला मुख्यालयों, पुलिस,आर्म्ड बटालियन, प्रशिक्षण संस्थानों और अन्य पुलिस इकाइयों में होगा। इस आयोजन में केवल साइकिलिंग ही नहीं बल्कि योग, ज़ुम्बा, रनिंग और रोप स्कीपिंग जैसी अन्य फिटनेस गतिविधियां भी शामिल होंगी। इन गतिविधियों का उद्देश्य आम जनता में उत्साह बढ़ाना है।

इस आयोजन का व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार किया जा रहा है ताकि पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ-साथ आम नागरिक, स्थानीय साइक्लिंग क्लब, स्कूल और कॉलेज के छात्र, एनजीओ और अन्य समूह भी इसमें शामिल हो सकें। इस पहल का मुख्य संदेश ''फिटनेस की डोज आधा घंटा रोज'' है, जिसे सभी तक पहुँचाया जाएगा। इस विशेष अभियान में विभिन्न जिलों और इकाइयों से लगभग 16 हजार 950 से अधिक लोगों के भाग लेने का अनुमान है। जयपुर शहर पुलिस लाईन में योगा और साइकिलिंग में 700 लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। आरपीए में योग, साइकिलिंग और रनिंग में 600 लोग भाग लेंगे। जोधपुर ग्रामीण पुलिस, प्रशिक्षण संस्थान और आरएसी की तरफ से होने वाले कार्यक्रम में लगभग 1 हजार 600 लोगों के हिस्सा लेने का अनुमान है। भरतपुर में पुलिस और आरएसी की तरफ से होने वाले योगा और साइकिलिंग कार्यक्रम में 500 लोग भाग ले सकते हैं। बूंदी में साइकिलिंग और रनिंग में 500 से अधिक लोगों के शामिल होने की संभावना है। कोटा सिटी पुलिस, ग्रामीण पुलिस और आरएसी में योग, साइकिलिंग और जुम्बा में 300 लोग भाग लेंगे। उदयपुर में फतेहसागर लेक पर योगा, साइकिलिंग और जुम्बा में 150 लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। यह अभियान फिटनेस को बढ़ावा देने और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

शिमकेंट में जारी चैंपियनशिप में भारत का मेडल टैली अब 11 हो गया है, जिसमें चार गोल्ड, एक सिल्वर और छह ब्रॉन्ज मेडल शामिल हैं।

एलावेनिल वलारिवन और अर्जुन बाबुता ने एशियन शूटिंग चैंपियनशिप में जीता गोल्ड मेडल।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — **जसप्रीत बुमराह**

आईसीसी पुरुष क्रिकेटर ऑफ द ईयर के लिए सर गारफील्ड सोबर्स पुरस्कार विजेता को सम्मानित किया गया।अभूतपूर्व प्रदर्शनों से भरे एक शानदार वर्ष ने आईसीसी पुरुष क्रिकेटर ऑफ द ईयर 2024 के लिए सर गारफील्ड सोबर्स पुरस्कार के भाग्य का फैसला कर दिया है। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को आईसीसी अवार्ड्स में आईसीसी पुरुष क्रिकेटर ऑफ द ईयर के लिए प्रतिष्ठित सर गारफील्ड सोबर्स पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, जिसमें उनके असाधारण 2024 को मान्यता दी गई है, जिसमें उन्होंने खेल के सबसे लंबे और सबसे छोटे प्रारूप में विरोधियों पर दबदबा बनाया।

क्या आप जानते हैं ?... टी20 इंटरनेशनल में सबसे तेज फिफ्टी जड़ने का रिकॉर्ड नेपाल केदीपेंद्र सिंह ऐरीके नाम दर्ज है। भारत की ओर से इस फॉर्मेट में सबसे कम गेंदों में फिफ्टी पूरी करने वाले प्लेयर युवराज सिंह हैं।

मानिनी कौशिक ने जीता एक और स्वर्ण पदक

जयपुर, 23 अगस्त। मानिनी कौशिक ने 2025 राज्य शूटिंग चैंपियनशिप में 50 मीटर राइफल 3पी स्पर्धा मे लगातार चौथे वर्ष स्वर्ण पदक जीता साथ ही प्रोन स्पर्धा में कांस्य पदक प्राप्त कर पिछली चार स्टेट चैंपियनशिप मे अपने कुल प्राप्त पदकों की संख्या आठ कर ली इसमें से सात स्वर्ण पदक हैं और एक कांस्य पदक है। मानिनी अभी एशियन चैंपियनशिप मे भाग लेने के लिए शिमकेंट कज़ाखस्तान गई हैं जहाँ वे 50 मीटर राइफल प्रोन इवेंट मे व्यक्तिगत एवम टीम स्पर्धा मे भाग लेंगी। मानिनी अगले माह वर्ल्ड चैंपियनशिप मे भाग लेने के लिये निंगबो चाइना जाएंगी जहाँ वे 50 मीटर 3 इवेंट मे हिस्सा लेंगी।

साउथ अफ्रीका में होंगे 2027 वनडे वर्ल्डकप के 44 मैच

नई दिल्ली, 23 अगस्त। क्रिकेट साउथ अफ्रीका ने शनिवार को 2027 में होने वाले वनडे वर्ल्ड कप के 8 वैन्यू डिसाइड कर दिए हैं। इसके अनुसार, वर्ल्ड कप के 44 मुकाबले साउथ अफ्रीका के 8 शहरों में खेले जाएंगे, जबकि 10 मैचों का आयोजन नामीबिया-जिम्बाब्वे में होगा। साउथ अफ्रीका में होने वाले मुकाबले जोहान्सबर्ग, प्रिटोरिया, केप टाउन, डरबन, ग्केबरहा, ब्लोएमफोंटेन, ईस्ट लंदन और पार्ल में खेले जाएंगे। टूर्नामेंट के आयोजन के लिए एक स्थानीय कमेटी का गठन भी किया है। वनडे वर्ल्ड कप का पिछला खिताब ऑस्ट्रेलिया ने जीता था। कंगारु टीम ने 19 नवंबर 2023 में अहमदाबाद में खेले गए फाइनल मुकाबले में मेजबान भारत को 6 विकेट से हराया था। 5 टूर्नामेंट होस्ट कर चुका है साउथ अफ्रीका साउथ अफ्रीका ने चैंपियंस ट्रॉफी 2009, पहला टी20 वर्ल्ड कप 2007 और 2003 में वनडे वर्ल्ड कप को होस्ट किया है। इसके अलावा, साउथ अफ्रीका ने दो महिला वर्ल्ड कप भी सफलतापूर्वक आयोजित किए हैं। 2005 का 50 ओवर वर्ल्ड कप और 2023 का टी20 वर्ल्ड कप, जिसमें प्रोटियाज टीम फाइनल तक पहुंची थी लेकिन ऑस्ट्रेलिया से हार गई थी। ने 2027 वर्ल्ड कप कमेटी बनाई साउथ अफ्रीका के पूर्व वित्त मंत्री ट्रेवर मैनुअल को 2027 क्रिकेट वर्ल्ड कप की लोकल ऑर्गनाइजिंग कमेटी का प्रमुख बनाया गया है। की चेयरपर्सन पर्ल माफोशे ने कहा, की सोच है कि हम एक ऐसा ग्लोबल और प्रेरणादायक इवेंट आयोजित करें, जो साउथ अफ्रीका की एकजुटता को दर्शाएगा। नामीबिया को जगह बनाने के लिए क्वालिफायर खेलना होगा साउथ अफ्रीका और जिम्बाब्वे की टीम मेजबान के तौर पर पहले से ही टूर्नामेंट के लिए क्वालिफाई कर चुके हैं, हालांकि नामीबिया को जगह बनाने के लिए अफ्रीकी क्वालिफायर से गुजरना होगा।

कोहली-रोहित के फेयरवेल की चिंता न करें, दोनों फिट हैं : राजीव शुक्ला

नई दिल्ली, 23 अगस्त। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ( ) के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने कहा, विराट कोहली और रोहित शर्मा पूरी तरह फिट हैं। वे अभी भी वनडे क्रिकेट खेल रहे हैं और अच्छे प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे में उनके फेयरवेल (विदाई मैच) की बात करना जल्दबाजी है।

कोहली और रोहित पहले ही टेस्ट क्रिकेट और टी-20 इंटरनेशनल से संन्यास ले चुके हैं। कुछ दिनों पहले मीडिया रिपोर्ट्स में उनके फेयरवेल मैचों को लेकर चर्चा शुरू हो गई थी। डोमेस्टिक टी-20 लीग यूपी टी-20 को शुक्रवार को दिए गए इंटरव्यू में राजीव ने यह बात कही।

फेयरवेल की चिंता करना गलत- राजीव राजीव शुक्ला से जब फेयरवेल मैच को लेकर सवाल किया गया, तब वे बोले

उन्होंने अभी तक संन्यास लिया है क्या? रोहित शर्मा और विराट कोहली दोनों वन-डे खेल रहे हैं। उन्होंने संन्यास नहीं लिया है, तो आप उनके फेयरवेल को लेकर क्यों बात और चिंता कर रहे हैं? की नीति बिल्कुल स्पष्ट है, हम किसी को भी संन्यास लेने के लिए नहीं कहेंगे, उन्हें खुद अपना निर्णय लेना होता है।

उन्होंने आगे कहा, फेयरवेल मैच के आयोजन के लिए जब समय आएगा, तब देखेंगे। आप पहले से ही उनका फेयरवेल आयोजित कर रहे हैं। विराट कोहली बहुत फिट हैं, और रोहित शर्मा बहुत अच्छा खेलते हैं।

टेस्ट और टी20 से संन्यास ले चुके हैं विराट कोहली और रोहित शर्मा टेस्ट और टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट से पहले ही संन्यास ले चुके हैं। उन्होंने 2024 टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद रिटायरमेंट का ऐलान किया था। इसके बाद 7 मई को रोहित और 12 मई को विराट ने टेस्ट क्रिकेट से भी संन्यास ले लिया था।

आखिरी बार चैंपियंस ट्रॉफी में साथ खेले आखिरी बार वनडे में विराट और रोहित चैंपियंस ट्रॉफी दुबई में साथ खेले थे, जहां कोहली ने पाकिस्तान के खिलाफ शतक जड़ा और रोहित ने फाइनल में अर्धशतक बनाया था। के बाद से दोनों ने कोई भी मैच नहीं खेला है। अगली वनडे सीरीज अक्टूबर में ऑस्ट्रेलिया में होनी हैं।

लियोनेल मेसी और अर्जेंटीना टीम नवंबर में केरल आएगी

ग्रीनफील्ड स्टेडियम में प्रदर्शनी मैच, फुटबॉल विकास कार्यक्रमों में भी एएफए मदद करेगा

नई दिल्ली, 23 अगस्त। फुटबॉल के दिग्गज खिलाड़ी लियोनेल मेसी और वर्ल्ड चैंपियन अर्जेंटीना राष्ट्रीय फुटबॉल टीम 10 से 18 नवंबर 2025 के बीच केरल का दौरा करेगी। अर्जेंटीना फुटबॉल एसोसिएशन (एएफए) ने इसकी आधिकारिक पुष्टि की है। मेसी और उनकी टीम तिरुवनंतपुरम के ग्रीनफील्ड स्टेडियम में एक प्रदर्शनी मैच खेलेंगे। इस आयोजन को केरल सरकार और रिपोर्लर ब्रॉडकास्टिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड मिलकर आयोजित कर रहे हैं। पहले खबरें आई थी, कि एएफए ने मना कर दिया है पहले खबरें आई थी कि अर्जेंटीना फुटबॉल एसोसिएशन ने भारत के दौरे पर आने से मना कर दिया है। मई 2025 में कुछ खबरों में दावा किया गया था कि फीफा के अंतरराष्ट्रीय मैच कैलेंडर के कारण अर्जेंटीना टीम केरल नहीं आएगी। लेकिन रिपोर्लर टीवी के प्रबंध निदेशक और संपादक एंटो ऑगस्टाइन ने इन अफवाहों को खारिज करते हुए कहा,एएफए ने कोई रद्दीकरण नहीं किया है। तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं, और हम लोगों से आग्रह करते हैं कि वे भ्रामक खबरें न फैलाएं।

केरल के फुटबॉल प्रेमी अर्जेंटीना को सपोर्ट करते हैं केरल के खेल मंत्री वी. अब्दुरहमान ने फेसबुक पर इसकी घोषणा करते हुए कहा,केरल के फुटबॉल प्रशंसकों का प्यार और समर्थन अर्जेंटीना की टीम के लिए अद्भुत रहा है। अर्जेंटीना की टीम अपने प्रशंसकों से मिलने के लिए उत्साहित है। शुरुआत में इस दौरे के लिए भारी खर्च की चिंता थी, लेकिन केरल सरकार ने एएफए को न्योता भेजा। ऑनलाइन चर्चाओं के बाद, एएफए ने केरल के साथ फुटबॉल विकास कार्यक्रमों के लिए सहयोग करने में भी रुचि दिखाई। प्रदर्शनी मैच 2026 वर्ल्ड कप की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण अर्जेंटीना की टीम 5 सितंबर को वेनेजुएला और 10 सितंबर को इक्वाडोर के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने के बाद सीधे केरल आएगी। ग्रीनफील्ड स्टेडियम में होने वाला यह प्रदर्शनी मैच 2026 वर्ल्ड कप की तैयारी के लिए अर्जेंटीना के लिए महत्वपूर्ण होगा। इस दौरे से केरल में फुटबॉल को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। एएफए के साथ सहयोग से राज्य में जमीनी स्तर पर फुटबॉल विकास, प्रशिक्षण शिविर और प्रतिभा खोज जैसे कार्यक्रम शुरू हो सकते हैं, जो लंबे समय तक प्रभाव छोड़ेंगे।

एशियन शूटिंग - एलावेनिल ने रिकॉर्ड के साथ गोल्ड जीता

जूनियर विमेंस टीम ने वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाकर 10 मीटर एयर राइफल में गोल्ड अपने नाम किया

नई दिल्ली, 23 अगस्त। भारत की दो बार की ओलिंपियन एलावेनिल वलारिवन ने कजाकिस्तान के शिमकेंट शूटिंग प्लाजा में आयोजित 16वें एशियाई शूटिंग चैंपियनशिप के पांचवें दिन महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल इवेंट में गोल्ड मेडल जीता। वहीं, जूनियर महिला टीम ने 10 मीटर एयर राइफल में वर्ल्ड रिकॉर्ड के साथ गोल्ड अपने नाम किया। एलावेनिल ने चीनी शूटर को हराया एलावेनिल ने 24 शॉट्स के फाइनल में चीन की 16 साल की पेंग शिनलू को कड़ी टक्कर देते हुए 253.6 का स्कोर बनाया, जो एक नया एशियाई फाइनल रिकॉर्ड है। पेंग 0.6 अंक पीछे रहकर सिल्वर मेडल जीता, जबकि कोरिया की क्वोन यूनजी ने ब्रॉन्ज मेडल हासिल किया।

एलावेनिल का यह इस इवेंट में दूसरा इंडिविजुअल गोल्ड मेडल है। इससे पहले उन्होंने 2019 में चीन के ताइयुआन में आयोजित एशियाई चैंपियनशिप में भी गोल्ड जीता था। उनकी साथी भारतीय निशानेबाज मेहुली घोष फाइनल में चौथे स्थान पर रहीं, जिनका स्कोर 208.9 रहा।

सिंगल्स शॉट्स में 10 से ऊपर स्कोर किया पहली सीरीज (पांच शॉट्स) के बाद एलावेनिल चौथे स्थान पर थीं। दूसरी सीरीज के बाद वे संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर रहीं। इसके बाद अगले 14 सिंगल्स शॉट्स में उन्होंने 10.5 से कम स्कोर नहीं किया। खास तौर पर 13वां शॉट 10.9 का रहा, जो परफेक्ट था।

कोरिया की क्वोन और चीन की पेंग ने उनका पीछा किया, लेकिन एलावेनिल ने लगातार बढ़त बनाए रखी। क्वोन का 22वां शॉट 9.9 रहा, जिसके कारण उनकी गोल्ड की उम्मीदें खत्म हो गईं। पेंग ने अंत तक हार नहीं मानी और 10.8 के साथ फाइनल शॉट लगाया, लेकिन एलावेनिल ने 10.6 और 10.7 के शॉट्स के साथ अपनी बढ़त बरकरार रखी और गोल्ड अपने नाम किया।

फाइनल के लिए एलावेनिल और मेहुली घोष ने क्वालिफाई किया फाइनल से पहले क्वालिफिकेशन राउंड में एलावेनिल ने 630.7 और मेहुली ने 630.3 का स्कोर बनाकर क्रमशः सातवां और आठवां स्थान हासिल किया। दोनों ने अनन्या नायडू (630.0) के साथ मिलकर 1891 के कुल स्कोर के साथ टीम ब्रॉन्ज मेडल जीता। इस इवेंट में चीन ने गोल्ड और कोरिया ने सिल्वर मेडल हासिल किया।

जूनियर महिलाओं की एयर राइफल में भारत का दबदबा जूनियर महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल में भारत की शम्भवी क्षीरसागर, हृदया श्री कोंडुर और ईशा अनिल टक्साले की तिकड़ी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 1896.2 के स्कोर के साथ टीम गोल्ड मेडल जीता। यह स्कोर वर्ल्ड और एशियाई रिकॉर्ड है, जो दूसरे स्थान पर रही चीनी टीम से 11.3 अंक बेहतर था। हालांकि,सिंगल्स फाइनल में शम्भवी 186.3 के साथ पांचवें, ईशा 165.2 के साथ छठे और हृदया 143.2 के साथ सातवें स्थान पर रहीं।

एशिया कप से पहले बीमार पड़े शुभमन गिल

नई दिल्ली, 23 अगस्त। भारतीय टेस्ट टीम के कप्तान शुभमन गिल का दलीप ट्रॉफी में खेलना मुश्किल नजर आ रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, गिल बीमार हो गए हैं जिस कारण वह 28 अगस्त से शुरू हो रहे इस टूर्नामेंट में नहीं खेल सकेंगे। गिल को दलीप ट्रॉफी में उत्तरी क्षेत्र की कप्तानी करनी थी, लेकिन उन्होंने ने हाल ही में टीम के फिजियोथेरेपिस्टों द्वारा चिकित्सा मूल्यांकन कराया था, जिसकी रिपोर्ट भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) को सौंप दी गई है।

कनाडा में भारतीय तीरंदाजों की स्वर्णिम चमक

अंडर 18 कंपाउंड टीम बनी विश्व विजेता

जयपुर, 23 अगस्त। कनाडा में चल रही यूथ वर्ल्ड आर्चरी चैंपियनशिप में भारत के युवा तीरंदाजों ने स्वर्णिम इतिहास रच दिया है। अंडर-18 कंपाउंड पुरुष टीम इवेंट के फाइनल मुकाबले में भारतीय टीम ने रोमांचक संघर्ष के बाद अमेरिका को 224-222 अंकों से हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

इस स्वर्ण पदक विजेता भारतीय टीम में तीन युवा तीरंदाज शामिल थे - मोहित दागर, योगेश जोशी और देवांश सिंह। राजस्थान तीरंदाजी संघ के महासचिव सुरेंद्र सिंह गुर्जर ने जानकारी दी कि इस टीम में राजस्थान के दो तीरंदाज, योगेश जोशी और देवांश सिंह, ने शानदार खेल दिखाते हुए भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई। भारतीय टीम के साथ कोच के रूप में भी राजस्थान का प्रतिनिधित्व रहा। अनुभवी कोच सुनील चौधरी ने खिलाड़ियों को मार्गदर्शन दिया और रणनीति के साथ टीम को फाइनल तक पहुंचाकर स्वर्ण पदक जिताने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एक ही टीम में दो खिलाड़ी और एक कोच का चयन होना राज्य के लिए गौरव की बात है। योगेश जोशी और देवांश सिंह ने दबाव भरे फाइनल में शानदार तीरंदाजी करते हुए भारत की जीत सुनिश्चित की। इस जीत ने भारत की तीरंदाजी को विश्व पटल पर नई ऊँचाइयाँ दी हैं और आने वाले अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट्स के लिए भारतीय युवा खिलाड़ियों का आत्मविश्वास दोगुना कर दिया है।

28 अगस्त तक फुटबॉल विवाद का समाधान निकालें : सुप्रीम कोर्ट

नेशनल फेडरेशन और स्पोर्ट्स डेवलपमेंट लिमिटेड के बीच राइट्स पर मतभेद

नई दिल्ली, 23 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन और फुटबॉल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट लिमिटेड से विवाद सुलझाने को कहा है। दोनों संस्थान के बीच मास्टर राइट्स एग्रीमेंट से जुड़ी समस्या चल रही हैं।

इसी वजह से इस सीजन इंडियन सुपर लीग अब तक नहीं खेली गई हैं। लीग के 11 क्लबों ने को लिखकर बताया है कि वे बंद होने की कगार पर हैं।

जस्टिस पी. एस. नरसिम्हा और जॉयमल्या बागची की बेंच ने शुक्रवार को इस मामले की सुनवाई करते हुए और को निर्देश दिया कि वे आपस में चर्चा करें और 28 अगस्त (अगली सुनवाई की तारीख) तक कोई समाधान निकालें।

और के बीच नया एग्रीमेंट नहीं हुआ के 2025-26 सीजन को इसलिए रोका गया है क्योंकि ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन और आयोजनकर्ता कंपनी फुटबॉल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट लिमिटेड के बीच मास्टर राइट्स एग्रीमेंट का नया एग्रीमेंट नहीं हुआ है।

2010 में 15 साल का एग्रीमेंट हुआ था और के बीच 15 साल का समझौता 2010 में हुआ था, जिसके तहत हर साल को 50 करोड़ रुपए देता है और बदले में उसे भारतीय फुटबॉल (और राष्ट्रीय टीम सहित) का प्रसारण, प्रबंधन और प्रचार का अधिकार मिला है।

क्लबों ने को चेतावनी दी 11 क्लबों ने को चेतावनी दी है कि अगर यह विवाद जल्द हल नहीं हुआ, तो वे पूरी तरह बंद होने की स्थिति में आ सकते हैं। क्लबों ने पिछले हफ्ते अध्यक्ष कल्याण चौबे को पत्र लिखकर कहा कि (मास्टर राइट्स एग्रीमेंट) के नवीनीकरण न होने से पैदा हुआ संकट ने भारत में प्रोफेशनल फुटबॉल को लगभग बंद करा दिया है।

क्लबों ने लिखा, पिछले 11 वर्षों में लगातार निवेश और संयुक्त प्रयास से क्लबों ने युवा विकास प्रणाली, ट्रेनिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर और प्रोफेशनल टीमें बनाई हैं, जिससे भारतीय फुटबॉल की साख देश और विदेश दोनों जगह बढ़ी है।

उन्होंने आगे कहा, अब यह डेवलपमेंट गिरने के खतरे में है। मौजूदा रुकावट ने गंभीर नतीजे दिए हैं। संचालन ठप है और लीग के जारी रहने की कोई गारंटी नहीं है, ऐसे में कई क्लब पूरी तरह बंद होने की कगार पर हैं।

बीसीसीआई का निर्देश नहीं मानेगा साउथ जोन : दलीप ट्रॉफी टीम में बदलाव नहीं

नई दिल्ली, 23 अगस्त। साउथ जोन के सिलेक्टर्स के निर्देश के बावजूद अपनी दलीप ट्रॉफी टीम में सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट में शामिल क्रिकेटर्स को शामिल नहीं करेंगे। बोर्ड ने एक ईमेल के जरिए सभी स्टेट एसोसिएशन्स को निर्देश दिए थे कि वे अपने-अपने जोन की टीमों में केंद्रीय अनुबंधित भारतीय खिलाड़ियों को भी शामिल करें। ये निर्देश तब जारी किए गए थे, जब साउथ जोन ने केएल राहुल, मोहम्मद सिराज, वाशिंगटन सुंदर, प्रसिद्ध कृष्णा और साई सुदर्शन जैसे बड़े खिलाड़ियों को अपनी दलीप ट्रॉफी की टीम में जगह नहीं दी थी। दलीप ट्रॉफी का आयोजन 28 अगस्त से बेंगलुरु में शुरू होने वाला है। बीसीसीआई के क्रिकेट ऑपरेशंस विभाग के जनरल मैनेजर अभय कुरुविला ने लिखा था। दलीप ट्रॉफी के रुतबे को बनाए रखने के लिए सभी उपलब्ध भारतीय खिलाड़ियों को जोनल टीमों में चुना जाना जरूरी है। ऐसे में सभी जोन के संयोजकों से अनुरोध है कि वे यह तय करें कि सभी उपलब्ध भारतीय खिलाड़ी दलीप ट्रॉफी के लिए चुने जाएं। साउथ जोन ने 26 दिन पहले 27 जुलाई को सबसे पहले दलीप ट्रॉफी के लिए टीम का ऐलान किया था। उस टीम में देवदत्त पड्डीकल इकलौते ऐसे खिलाड़ी थे, जो टेस्ट क्रिकेट खेल चुके हैं। के सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट में शामिल तिलक वर्मा को इस जोनल टीम का कप्तान बनाया गया था। हालांकि, जब साउथ जोन की टीम जारी हुई थी, तब के निर्देश नहीं आए थे।

एशिया कप 2025 : भारतीय क्रिकेटर ने चुनी स्पेशल टीम

नई दिल्ली, 23 अगस्त। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने मंगलवार को एशिया कप 2025 के लिए 15 सदस्यीय भारतीय टीम का एलान किया था। इस टीम में श्रेयस अय्यर और यशस्वी जायसवाल को जगह नहीं दी गई। अय्यर का नाम स्टैंड बाय में भी नहीं था। ऐसे में पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने एशिया कप के लिए अपनी वैकल्पिक टीम चुनी और अय्यर को टीम का कप्तान बनाया।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने मंगलवार, 19 अगस्त को एशिया कप 2025 के लिए भारतीय टीम का एलान किया। इस टीम में श्रेयस अय्यर को जगह नहीं दी गई। इतना ही अय्यर का नाम रिजर्व खिलाड़ियों की लिस्ट में भी नहीं था। ऐसे में पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने एशिया कप के लिए अपनी वैकल्पिक टीम चुनी और अय्यर को टीम का कप्तान बनाया। आकाश ने अपनी टीम में उन प्लेयर्स को जगह दी है, जिनका सेलेक्शन एशिया कप के लिए चुनी गई भारतीय टीम में नहीं हुआ है। आकाश चोपड़ा ने अपने यूट्यूब चैनल पर एक वीडियो में कहा, "शुरुआत करते हैं यशस्वी जायसवाल से। मुझे लगता है कि उनका नाम एशिया कप टीम में भी होना चाहिए था क्योंकि वह टी20 विश्व कप टीम का हिस्सा थे।

निजी आयोजकों ने स्टेडियम को बनाया महखाना

जयपुर, 23 अगस्त। सवाई मानसिंह स्टेडियम स्थित आरसीए क्रिकेट अकादमी पर स्पोर्ट्स काउंसिल द्वारा निजी आयोजकों को किराए पर क्रिकेट मैच के लिए दिया था लेकिन बरसात होने की वजह से क्रिकेट मैच नहीं खेला जा सका। लेकिन क्रिकेट मैच खेलने आए खिलाड़ियों द्वारा आरसीए अकादमी के बाहर शराब के दौर शुरू कर दिए गए। कार की डिग्गी में शराब के केन निकालकर रोड़ पर ही बरसात में शराब का आनंद लेते रहे। इस प्रकार की घटना का जिम्मेदार कौन है? शनिवार होने के कारण स्पोर्ट्स काउंसिल के दफ्तर की छुट्टी थी। स्पोर्ट्स काउंसिल अगर इसी तरह निजी आयोजकों को क्रिकेट अकादमी किराए पर देती रही तो आगे भी किराए के लालच में इसी घटनाएं होती रहेंगी।

सागरमल मेहता बैडमिंटन में जजों व वकीलों ने दिखाया दमखम

जयपुर, 23 अगस्त। सागरमल मेहता मेमोरियल बैडमिंटन टूर्नामेंट में आज मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधीश संजीव प्रकाश शर्मा ने सागरमल मेहता के चित्र को माल्या अर्पण व दीप प्रज्वलित कर व प्रथम शटल खेल प्रतियोगिता की शुरुआत की इस मौके पर न्यायाधीश अवनीश झींगन ,रवि चिरानिया, अनुरूप सिंघी ,संदीप तनेजा, मनीष शर्मा ,अनिल उपमन, पंकज भंडारी, आनंद शर्मा तथा आयोजक बार काउंसिल के अध्यक्ष महेंद्र शांडिल्य , रमीत पारीक वह कार्यक्रम के सहयोगी पूर्व उप महाअधिवक्ता अनिल मेहता तथा आर एस मेहता, सोनल मेहता, पल्लवी मेहता तथा वरिष्ठअधिवक्ता मौजूद रहे प्रारंभ में सीनियर एडवोकेट व न्यायाधीशोंके मध्यमैचखेले गए 40 आयु वर्ग क्वार्टर फाइनल मैच में संदीप खीची ने अमित पूनिया को हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया वहीं दूसरे क्वार्टर में बाबूलाल ने रवीन शर्मा को हरा सेमीफाइनल में प्रवेश किया एक अन्य क्वार्टर फाइनल में जवाहर सिंह ने भरत सिंह को क्वार्टर फाइनल में वॉकओवर दे दिया जिससे भरत सिंह सेमीफाइनल में पहुंचे चौथे क्वार्टर फाइनल में प्रदीप कुमार बोरा ने रजनीश सिंह को 15-10 ,15-9 से हरा सेमीफाइनल में प्रवेश किया महिलाओं के एकल में किंजल सुराणा ने प्रियंका पालीवाल को क्वार्टर फाइनल में हरा सेमीफाइनल में प्रवेश किया वहीं दूसरे क्वार्टर फाइनल में स्तुति भंसाली ने पूजा शर्मा को हरा सेमीफाइनल में प्रवेश किया तीसरे क्वार्टर फाइनल में भुवनेश्वरी ने एनिमा चतुर्वेदी को हरा सेमीफाइनल में प्रवेश किया

अध्यक्ष महेंद्र शांडिल्य के अनुसार मिक्स डबल, महिला डबल्स, तथा शेष रहे एकल मैच व फाइनल सभी मैच कल होंगे तथा शाम को परितोषित वितरण वह समापन समारोह होगा।

3 हजार 7 सौ करोड़ रु. की लागत से 95 एकड़ में बनेंगे राजस्थान मण्डपम् और जी.सी.सी.

राज्य मंत्रिमण्डल की बैठक में आर्थिक विकास को गति देने के लिए दो नई भूमि आवंटन नीतियों को मंजूरी

जयपुर, 23 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में शनिवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित मंत्रिमण्डल की बैठक में प्रदेश की आर्थिक समृद्धि, सतत् विकास एवं समावेशी प्रगति के विजन डॉक्यूमेंट 'विकसित राजस्थान/2047' एवं 2 नीतियों को मजूंरी दी गई। इसके साथ ही, आगामी विधानसभा सत्र को देखते हुए 3 विधेयकों के प्रारूप के अनुमोदन, परवन बांध डूब क्षेत्र के विस्थापितों को विशेष अनुग्रह राशि स्वीकृत करने तथा युवाओं में उद्यिमता को प्रोत्साहन देने से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले किए गए।

संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ तथा जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने पत्रकार वार्ता में बताया कि भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना के अनुरूप राज्य सरकार के 'विकसित राजस्थान/2047' विजन डॉक्यूमेंट का मंत्रिमण्डल द्वारा अनुमोदन किया गया।

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि इस विजन डॉक्यूमेंट में राजस्थान को वर्ष 2030 तक 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था और वर्ष 2047 तक 4.3 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा युवाओं को स्वावलंबी बनाने एवं रोजगार के नए अवसर उपलब्ध करने के उद्देश्य से विश्वकर्मा युवा उद्यमी प्रोत्साहन योजना को मंत्रिमंडल की बैठक में मंजूरी प्रदान की गई।

संसदीय कार्य मंत्री ने बताया कि राज्य में सार्वजनिक, सामाजिक, धार्मिक एवं चैरिटेबल संस्थाओं, ट्रस्ट, निजी निवेशकों, कम्पनियों तथा विभिन्न विभागों द्वारा शैक्षिणक, चिकित्सकीय, औद्योगिक, व्यावसायिक और पर्यटन इकाइयों आदि के लिए भूमि आवंटन प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी, एकरूप बनाने के उद्देश्य से 'नगरीय क्षेत्रों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए भूमि आवंटन नीति-2025' लाई जा रही है।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल ने ''विकसित राजस्थान/2047'' विज़न डॉक्यूमेंट का अनुमोदन किया। इसमें 2030 तक राजस्थान को 350 बिलियन डॉलर तथा 2047 तक 4.3 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा गया है।**
- **मंत्रिमंडल बैठक में एयरो स्पोर्ट्स गतिविधियों के लिए हवाई पट्टियां लीज़ आवंटन नीति को भी मंजूरी दी गई।**

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि राज्य में एयरो स्पोर्ट्स गतिविधियों को बढ़ावा देने, वर्तमान में कम उपयोग में आ रही हवाई पट्टियों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने और एडवेंचर ट्यूरिज्म को प्रोत्साहन देने के लिए एयरो स्पोर्ट्स गतिविधियों हेतु हवाई पट्टियों की भूमि लीज आवंटन नीति को मंजूरी दी गई है। इस नीति से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री ने बताया कि बी-2 बाईपास, जयपुर स्थित रीको की 95 एकड़ भूमि पर राजस्थान मण्डपम, ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर, आईटी टावर का निर्माण राजस्व सृजन सह विकास मॉडल के आधार पर एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड के माध्यम से कराये जाने के प्रस्ताव का कैबिनेट द्वारा अनुमोदन किया गया। इस भूमि पर राजस्थान मण्डपम, ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर/आईटी टावर, 5-स्टार होटल, 4-स्टार होटल, आवासीय एवं वाणिज्यिक टावरों का विकास किया जाएगा। परियोजना की कुल अनुमानित लागत लगभग 3700 करोड़ रुपए है, जिसमें 635 करोड़ रुपये की भरपाई राज्य सरकार द्वारा की जाएगी। परियोजना पूर्ण होने की अनुमानित अवधि 30 माह है। कैबिनेट की बैठक के बाद मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में राज्य मंत्रिपरिषद की बैठक आयोजित की गई। संसदीय कार्य मंत्री पटेल ने बताया कि राज्य सरकार वन स्टेट, वन इलेक्शन को लागू करने की दिशा में निरंतर जरूरी कदम उठा रही है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

उत्तराखंड के चमोली में बादल फटा, जान माल का भारी नुकसान

नयी दिल्ली, 23 अगस्त। उत्तराखंड के चमोली जिले के थराली में शुक्रवार देर रात बादल फटने की घटना में सगवाडा तोक के काफलतोली, थराली बाजार, कोटदीप और तहसील थराली परिसर में बारिश का पानी और मलबा घुसने से काफी नुकसान हो गया है और मलब में दबकर लड़की की मौत हो गयी तथा अन्य एक बुजर्ग अभी भी लापता है। इस प्राकृतिक आपदा की वजह से पूरे इलाके में तबाही मच गयी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार बादल फटने की घटना से थराली बाजार, कोटदीप, और तहसील थराली परिसर में भारी नुकसान हुआ है। तहसील परिसर में उपजिलाधिकारी का आवास और आसपास के कई घरों में भारी मात्रा में मलबा जमा हो गया। तहसील परिसर, रामलीला मैदान, कोट डीप, चेपड़ो सड़क पर खड़ी कुछ गाड़ियां भी मलबे में दब गये हैं तेज बहाव और मलबे के कारण कस्बे की सड़कें टूट गयी हैं।

- **मलबे में दबने से एक लड़की की मौत हो गई तथा एक बुजुर्ग लापता है।**

राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र से मिली जानकारी के अनुसार थराली में देर रात 12 बजकर 48 मिनट पर टुनरी गदेरे में पानी बढ़ ने के कारण तहसील परिसर एवं चेपड़ो बाजार, कोटद्वीप बाजार एवं कुछ घरों में मलबा घुस गया। कुछ वाहन भी मलबे में दब गये हैं। राजस्व उपनिरीक्षक, थराली द्वारा बताया गया है कि ग्राम सगवाडा में एक मकान में मलबा आने के कारण एक लड़की की मलबे में दबने से मौत हो गयी और एक अन्य बजुर्ग लापता है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने चमोली जनपद के जनप्रतिनिधियों से टेलीफोन पर वार्ता कर बादल फटने से हुए नुकसान की विस्तृत जानकारी ली।

कोटा संभाग शनिवार को भी बाढ़ ग्रस्त रहा

सेना, एसडीआरएफ व एनडीआरएफ ने 200 से अधिक लोगों को रैस्क्यू किया

कोटा संभाग में लगातार वर्षा होने से कोटा, बूंदी और बारां के कई इलाके बाढ़ग्रस्त हो गए। सेना, एसडीआरएफ व एनडीआरएफ ने 200 से ज्यादा लोगों का रेस्क्यू करने के लिए नौकाओं का इस्तेमाल किया।

कोटा, 23 अगस्त (निसं)। कोटा संभाग में वर्षा का क्रम शनिवार दोपहर तक जारी रहा। कोटा, बूंदी और बारां के कई इलाके बाढ़ ग्रस्त हो गए हैं। जहां पर 8 से 10 फीट पानी भर गया है। लगातार बारिश होने से पानी लगातार बढ़ रहा है।

संभाग में करीब एक दर्जन कच्चे मकान गिर गए हैं। तीन दर्जन के आसपास कच्चे-पक्के मकान में क्षतिग्रस्त हैं। इनमें बारां, बूंदी व और कोटा के मकान शामिल हैं। सेना, एसडीआरएफ व एनडीआरएफ ने यहां पर 200 से ज्यादा लोगों को रेस्क्यू किया है। पूरी रात इन इलाकों में सेना ने ऑपरेशन चलाया है। लोगों को रेस्क्यू करने के लिए नौकाओं का इस्तेमाल किया गया है।

इधर बूंदी जिले में जलप्रलय जैसे हालात हैं। नवलसागर और जैतसागर झीलें उफान पर हैं। झीलों से छोड़े गए हजारों क्यूसेक पानी ने शहर और गांवों में बाढ़ आ गई है।महावीर कॉलोनी, मजिस्ट्रेट कॉलोनी और देवपुरा जैसे इलाकों में घरों में भारी बारिश से नैनवां और देई कस्बे के आसपास के गांव जलमग्न हो गए। कलेक्टर अक्षय गोदारा, एसपी राजेंद्र कुमार मीणा खुद मौके पर डटे हैं, वहीं, सेना, एसडीआरएफ और सिविल डिफेंस की टीमें लगातार राहत और बचाव कार्य में लगी हुई हैं। लाखेरी पुलिस उपाधीक्षक नरेंद्र नागर ने बताया कि कस्बे की लालपुलिया और शिवनगर बस्तियों में फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए अभियान चलाया गया।

बूंदी पुलिस अधीक्षक राजेंद्र कुमार मीणा ने बताया कि सेना के साथ एसडीआरएफ लगातार रेस्क्यू चलाकर बाढ़ और जलभराव वाले इलाकों से लोगों को निकाल रही है। कई कस्बों और गांवों का मुख्यालय से संपर्क टूटा हुआ है। सेना, एसडीआरएफ लोगों को बचाने में जुटे हुए हैं।

- **बूंदी जिले के नैनवां व देई कस्बे के पास के गांव जलमग्न हो गये। कोटा जिले में दीगोद के निमोद हरिजी गांव व आसपास के इलाके में आज भी बाढ़ के हालात बने हुए हैं।**

दूसरी तरफ कोटा जिले के दीगोद के निमोद हरिजी गांव और आसपास के इलाके में आज भी बाढ़ जैसे हालात बने हैं। एसडीआरएफ के इंचार्ज अम्मी लाल ने बताया कि उन्होंने शुक्रवार सुबह से ही ऑपरेशन चलाया हुआ था। उनकी टीम सुल्तानपुर, कैथून, दीगोद, बूंदी के कापरेन सहित अलग-अलग गांव में तैनात हैं। लगातार बारिश भी हो रही है इसके चलते पानी नहीं उतर रहा है। दीगोद और सुल्तानपुर में अभी भी हालात बिगड़े हुए हैं।

रास्ते बंद होने के चलते 100 से ज्यादा गांवों से का संपर्क टूट गया है। कही नदी नाले के उफान ने राह रोकी है तो कहीं बारिश में पुलिया या अन्य स्ट्रक्चर क्षतिग्रस्त हो गया है। कोटा जिले में कोटा श्योपुर का रास्ता बंद है। इससे सुल्तानपुर, दीगोद, इटावा, खातौली और अन्य जगह का सीधा संपर्क कोटा से टूटा हुआ है। इसी तरह से कोटा कैथून मार्ग बंद है जिसके चलते सांगोद का रास्ता भी बंद हो गया।

बारां जिले की बात की जाए तो यहां भी कई रास्ते बंद हैं। बारां जिले में करीब 40 से ज्यादा गांव का संपर्क टूटा हुआ है।

पीपल्दा विधायक चेतन पटेल कोलाना का कहना है कि भीषण बारिश हो रही है पर ग्रामीण अपने घरों को छोड़कर नहीं जाना चाहते जबकि पानी काफी है। सभी को अपील कर रहे हैं कि वह घर को छोड़कर और गांव को छोड़कर बाहर आ जाएं क्योंकि घर गिर जाएगा तो मुआवजा बाद में लिया जा सकता है। हालांकि लोग घरों में जानवर होने के चलते उन्हें छोड़कर भी नहीं आना चाहते हैं।

खेत पूरी तरह से तालाब बन गए हैं। व्यापारियों को भी काफी नुकसान हो रहा है। बारिश के चलते उनके दुकान मकान में पानी प्रवेश कर गया था जिससे काफी माल खराब हुआ। खेतों में पानी भर जाने के चलते किसानों को नुकसान की भी हो रहा है। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक अतीश कुमार शर्मा का कहना है कि खेत में चावल की फसल में पानी भर जाने से नुकसान नहीं होगा लेकिन दूसरी फसलों में पानी ज्यादा समय तक भरा रहने से नुकसान की आशंका है।

भारी बारिश के कारण पीडब्ल्यूडी, अन्य एजेंसियों की सड़कों और पुलियों के साथ-साथ अन्य स्ट्रक्चर को भी नुकसान पहुंचा है। कोटा संभाग में सैकड़ों किलोमीटर सड़कें खराब हो गई हैं। अब इन्हें अस्थाई दुरुस्त कर चलने लायक बनाया जाएगा। साथ ही स्थाई मरम्मत की भी आवश्यकता रहेगी। पीडब्ल्यूडी कोटा के अधीक्षक अभियंता जगदीश गुप्ता का कहना है कि पहले एक बार असेसमेंट करवाया था, जिसमें कोटा जिले में 1025 किलोमीटर की सड़कों को मरम्मत की जरूरत थी। अब इसमें और बढ़ोतरी होगी।

इलैक्ट्रॉनिक फार्मास्युटिकल व सोलर एनर्जी के सामान...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है। दोनों देश अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने, स्थानीय मुद्राओं में लेन-देन बढ़ाने और ग्लोबल साउथ की संस्थाओं को मजबूत करने वाले कदमों का समर्थन करते हैं। ब्रिक्स की पहल ''न्यू डैवलपमेंट बैंक'' को भारत का समर्थन प्राप्त है, भले ही उस पर बीजिंग का प्रभाव अधिक हो।

ऊर्जा क्षेत्र इस मेलजोल को और गहरा करता है। भारत की रूस से रियायती कच्चे तेल की बढ़ती खरीद, जो अक्सर रुपये, दिरहम या युआन में तय की जाती है, डॉलर-विहीन वित्तीय व्यवस्थाओं की दिशा में चीन की सोच के अनुरूप है। दिल्ली इसे व्यावहारिकता के रूप में देखता ह जैसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए सस्ती ऊर्जा सुनिश्चित करना, लेकिन इसका समग्र प्रभाव यह होता है कि यह डॉलर वर्चस्व को चुनौती देने में चीन के साथ खड़ा दिखता है। वहीं, अमेरिका की आर्थिक नीति ने स्थिति को जटिल बना दिया है। भारतीय स्टील, रसायनों और दवाइयों पर लगाए गए शुल्क भारत के निर्यात के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं। हाल ही में, अमेरिका की ओर से रूस से कच्चे तेल की खरीद पर दी गई चेतावनियों ने दिल्ली में असंतोष उत्पन्न किया है, जो कहता है कि उसकी ऊर्जा सुरक्षा को पश्चिमी प्रतिबंधों के अधीन नहीं किया जा सकता।

ये कदम भारतीय नीति निर्माताओं में यह धारणा मजबूत करते हैं कि अमेरिका एक भरोसेमंद राजनीतिक साझेदार हो सकता है, लेकिन एक आर्थिक साझेदार के रूप में वह अविश्वसनीय है। इसके विपरीत, ब्रिक्स के भीतर चीन की पहलें-जैसे स्थानीय मुद्रा व्यापार और वैकल्पिक भुगतान प्रणाली-भारत को अधिक स्वतंत्रता देती हैं।

रूस की भूमिका इस संतुलन गतिविधि को और तीव्र करती है। दशकों से, मॉस्को भारत का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता रहा है। यूक्रेन युद्ध के बाद से, वह एक प्रमुख तेल आपूर्तिकर्ता भी बन गया है। रूस की चीन पर बढ़ते निर्भरता के कारण भारत की मास्को से नज़दीकियाँ अनिवार्य रूप भारत को से बीजिंग के करीब ले आती हैं।

ब्रिक्स जैसे मंचों पर यह त्रिकोणीय संबंध स्पष्ट हो जाता है। रूस और चीन पश्चिमी वर्चस्व को चुनौती देने में एकजुट हैं, जबकि भारत-चीन से सतर्क रहते हुए भी-आईएमएफ सुधार या डॉलरीकरण-विरोध जैसे मुद्दों पर रूस व चीन के साथ खड़ा होने में सामरिक लाभ देखता है। दिल्ली और बीजिंग में भरोसे का नहीं बल्कि सुविधा नहीं, बल्कि सुविधा जोड़ती है। भारत की यह प्रतीत होती विरोधाभासी नीति-राजनीतिक रूप से अमेरिका से मेल और आर्थिक रूप से चीन से सहयोग-उसकी दीर्घकालिक ''रणनीतिक स्वायत्तता'' की नीति का ही प्रतिबिंब है। शीत युद्ध के समय से ही भारत ने किसी भी ध्रुवीय गुटबंदी से दूर रहते हुए प्रतिस्पर्धी शक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखने की नीति अपनाई है।

यह संतुलन एक सोची-समझी रणनीति है। सुरक्षा के मोर्चे पर अमेरिका से मेल रखते हुए और वित्तीय स्तर पर चीन के साथ सहयोग करते हुए भारत दोनों से लाभ उठाता है। यह अमेरिका को संकेत देता है कि यदि वह दंडात्मक व्यापार उपाय अपनाएगा, तो भारत चीन के करीब जा सकता है, वहीं यह चीन को बताता है कि अमेरिका के साथ सुरक्षा सहयोग पर कोई समझौता नहीं होगा।

अमेरिका के लिए, ब्रिक्स में भारत की भागीदारी जो डॉलर की प्रधानता को चुनौती देती है, में भारत की भागीदारी निराशाजनक है। अमेरिकी रणनीतिकार चाहते हैं कि भारत पश्चिमी आर्थिक व्यवस्था में मजबूती से बना रहे, और उसके विखंडन में योगदान न दे। लेकिन शुल्क और प्रतिबंध भारत को विपरीत दिशा में धकेल सकते हैं।

चीन के लिए, भारत की इंडो-पैसिफिक नौसैनिक तैयारी और क्वाड सहयोग एक खतरा हैं। भले ही दिल्ली बहुपक्षीय अर्थशास्त्र में चीन के साथ तालमेल करता हो, वह हिंद महासागर में चीन का मुकाबला करने के लिए सैन्य तैयारी भी कर रहा है। बीजिंग की नजर में भारत साझेदार भी है और प्रतिद्वन्दी भी और इससे क्षेत्रीय रणनीति में अनिश्चितता उत्पन्न होती है।

भारत के लिए, खतरा इस संतुलन को ज़रूरत से ज़्यादा खींचने में है। चीन के साथ बहुत अधिक आर्थिक मेल घरेलू राजनीतिक प्रतिक्रिया और अंतरराष्ट्रीय संदेह को जन्म दे सकता है। वहीं, अमेरिका के साथ बहुत अधिक राजनीतिक मेल अमेरिका पर निर्भरता बढ़ाता है और रणनीतिक लचीलापन खोने का जोखिम पैदा करता है।

भारत की अमेरिका और चीन के प्रति नीति दो दिशाओं में खिंच रही है। राजनीति और सुरक्षा इसे वॉशिंगटन के करीब खींच रही हैं, जबकि अर्थव्यवस्था और बहुपक्षीय वित्तीय रणनीतियाँ इसे चीन के साथ सामरिक मेल में ला रही हैं, विशेष रूप से ''ग्लोबल साउथ'' की पृष्ठभूमि में। यह विरोधाभास नहीं है, यह रणनीति है। अमेरिका के साथ राजनीतिक साझेदारी और चीन के साथ आर्थिक मेल बनाए रखकर भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता की नीति को मज़बूत करता है। लेकिन यह अमेरिका की शुल्क-प्रधान नीति और चीन की दबाववादी रणनीति की सीमाओं को भी उजागर करता है।

यूरोपीय देश एकजुट होकर अमेरिका ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पुतिन ने बहुत स्पष्ट रूप से रूस के लिए अपने विज़न को व्यक्त किया जो वह अतीत के साम्राज्यों की रोशनी में देख रहे हैं।

इसी के समानांतर, रूस ने, जैसा कि उम्मीद थी, अमेरिका की उस पहल को ठुकरा दिया जिसमें अमेरिका की अगुवाई में रूस और यूक्रेन के नेताओं की त्रिपक्षीय बैठक का प्रस्ताव था। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव भी ने ऐसा संकेत दिया है।

रूस की स्थिति की विसंगति साफ झलकती है क्योंकि वह एक दुविधा में फंसा हुआ है और कुछ देशों को छोड़कर, यूक्रेन को अधीन करने की कोशिश में रूस पूरी तरह अलग-थलग खड़ा है।

रूसी विदेश मंत्री के बयानों से संकेत मिलता है कि शांति समझौते की बातचीत की संभावनाएँ हो सकती हैं। रूसी नेता, जो एक माहिर राजनयिक और विदेश नीति के जानकार हैं, ने संकेत दिए हैं कि वार्ताएँ फिर से शुरू हो सकती हैं।

लावरोव ने संकेत दिया कि यूक्रेन ने अब तक उन वार्ता शर्तों को स्वीकार नहीं किया है जो अमेरिकी राष्ट्रपति ने प्रस्तावित की थीं, यानी क्षेत्रीय समझौता और यूक्रेन का नाटो में शामिल न होना। उन्होंने कहा कि यूक्रेन ने इन शर्तों को नहीं माना है।

उन्होंने आगे कहा कि पुतिन शांति वार्ता तभी करेंगे जब शांति की शर्तों का विवरण स्पष्ट हो। यह रूसी भाषा में फिलहाल सीधे वार्ता न करने का संकेत है।

फिर भी, रूस अब उस व्यापक गठबंधन से अवगत है जो यूरोप और समूचे अटलांटिक दोनों ओर उसके खिलाफ खड़ा है। अमेरिका लगातार शांति समझौते को पूरा करने के लिए उत्सुक रहा है। उसने यूरोपीय देशों और यूक्रेन को ज़मीन के अदला-बदली वाले समझौते की शर्तें स्वीकार करने के लिए मनाने की कोशिश की।

पहले, यूरोपीय देश और यूक्रेन रूस को क्षेत्रों को सौंपने पर किसी समझौते पर नहीं पहुँच सके। वास्तव में, यूक्रेन तो रूस से क्रीमिया को वापस लेने की कोशिश में लगा हुआ था और उसकी सैन्य शक्ति का बड़ा हिस्सा क्रीमिया के संबंधों को पूरी तरह तोड़ने पर केंद्रित था।

खराब लड्डू ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की। उसने जब खुद प्रसाद ग्रहण किया तो पता चला कि लड्डूओं में से बदबू आ रही थी। इस पर उसने अपने परिचित कैलाश से घी की जांच करने के लिए कहा तो पता चला कि घी खराब था। जिस पर परिवादी ने तुरंत ही विपक्षी हलवाई को खराब लड्डू बेचने की शिकायत की। विपक्षी ने उसे कहा कि वे प्रसादी लौटा दें और इसके बदले में उन्हें इसकी कीमत 18,500 रुपए वापस कर दी जाएगी।

एन.डी.ए. के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

महासचिव ने कहा कि चुने हुए जनप्रतिनिधियों को अपराध के आधार पर हटाने वाले ये बिल गलत तरीके से बनाए गए हैं और इनका असली निशाना विपक्ष के मुख्यमंत्री और नेता हैं।

आचार्य ने कहा कि संविधान में पहले से ही जनप्रतिनिधियों पर कार्रवाई के पर्याप्त प्रावधान मौजूद हैं। भ्रष्ट नेता को दंड मिलना चाहिए, लेकिन इस बिल से राजनीतिक प्रतिशोध का खतरा बढ़ेगा और अस्थिरता पैदा होगी।

आचार्य ने चेतावनी दी कि ''ऊपरी तौर पर यह सही लगता है कि भ्रष्ट नेता सत्ता में न रहें, लेकिन असलियत इतनी आसान नहीं है।

ऐसे कानून से राजनीतिक अराजकता और अस्थिरता फैल सकती है।''

अपने सबसे विश्वास...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दर्शाता है।

गोर की नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब भारत और अमेरिका के संबंधों में सहयोग और तनाव दोनों मौजूद हैं। रक्षा सहयोग और इंडो-पैसिफिक रणनीति पर दोनों देश करीब आए हैं, लेकिन शुल्क, ऊर्जा आपूर्ति और रूस तथा ईरान के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को लेकर मतभेद बने हुए हैं। ऐसे में राजदूत की भूमिका इन जटिलताओं को संभालने में अहम होगी।

सीनेट की पुष्टि की प्रक्रिया यह तय करेगी कि गोर नई दिल्ली में अपना पद कब तक संभाल पाएंगे। हालांकि उनकी ट्रंप से नजदीकी और राजनयिक अनुभव की कमी के चलते यह नामांकन काफी ध्यान आकर्षित कर सकता है, लेकिन समर्थकों का मानना है कि उनकी संगठन क्षमता और राष्ट्रपति से सीधा संबंध उन्हें अमेरिकी नीतियों को आगे बढ़ाने में एक बड़ी ताकत प्रदान करेगा।

भारत ने इस नामांकन पर औपचारिक प्रतिक्रिया नहीं दी है। लेकिन नई दिल्ली आमतौर पर उन अमेरिकी राजदूतों का स्वागत करता रहा है जिन्हें राष्ट्रपति का पूर्ण समर्थन प्राप्त हो, क्योंकि इससे संदेश सीधा उच्च स्तर पर पहुंचता है। विश्लेषकों का मानना है कि ट्रंप के करीबी होने के कारण, यदि गोर की नियुक्ति होती है तो उन्हें वाशिंगटन में असाधारण प्रभाव प्राप्त हो सकता है।

इस नियुक्ति के माध्यम से ट्रंप ने यह संकेत दिया है कि वे भारत-अमेरिका संबंधों पर व्यक्तिगत रूप से नज़र बनाए रखना चाहते हैं। नई दिल्ली के लिए, वाइट हाउस से सीधा संपर्क रखने वाले एक नए दूत का आना नई संभावनाओं के द्वार खोल सकता है, विशेषकर तब जब दोनों देश सहयोग और प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

गोर की नियुक्ति को कई लोग एक सकारात्मक बदलाव के रूप में देख रहे हैं, विशेष रूप से ट्रंप के साथ उनकी गहरी व्यक्तिगत निकटता के कारण। उज्बेकिस्तान के ताशकंद में जन्मे गोर को मीडिया में शायद सबसे शक्तिशाली व्यक्ति जिनके बारे में आपने कभी नहीं सुना और मार-आ-लागो के मेयर के रूप में बताया गया है। उन्हें ट्रंप के आंतरिक मंडल का एक केंद्रीय व्यक्ति माना जाता है। वे इतने प्रभावशाली हैं कि एलन मस्क ने ट्रंप के साथ अपने मतभेद के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया था।

लेकिन कई रणनीतिक विशेषज्ञ गोर की नियुक्ति से चिंतित हैं। उनकी चिंता क्या है? दोहरी भूमिका को लेकर है। भारत के लिए अमेरिकी राजदूत के रूप में वे एक साथ दक्षिण और मध्य एशियाई मामलों के लिए विशेष दूत के रूप में भी कार्य करेंगे, जिससे वे पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और अन्य देशों में अमेरिकी कूटनीति की जिम्मेदारी उठाएंगे।

भारत के पूर्व विदेश सचिव कंवल सिब्बल ने इस कदम की तीखी आलोचना की है। कंवल सिब्बल ने एक्स पर लिखा, ''यह पहली बार है जब भारत में कोई अमेरिकी राजदूत दक्षिण और मध्य एशियाई मामलों के लिए विशेष दूत भी है। इसका मतलब है कि उसके पास अमेरिकी विदेश विभाग के साउथ एंड सेंट्रल एशियन अफेयर्स ब्यूरो के अधिकार क्षेत्र को कवर करने वाला एक व्यापक अधिकार होगा। इसका सीधा अर्थ यह है कि वह इस क्षेत्र में भारत के संबंधों पाकिस्तान और हमारे अन्य पड़ोसियों के साथ, निगरानी करेगा। इसका मतलब यह भी है कि वह इस क्षेत्र में अन्य अमेरिकी राजदूतों के साथ परामर्श और समन्वय करेगा, ताकि एक अधिक एकीकृत दृष्टिकोण विकसित किया जा सके।''

जयपुर में दिनभर वर्षा, आमेर महल के रास्ते की दीवार ढही

शनिवार को चौमूं में 4 इंच बरसात हुई, मुहाना मंडी में भी दुकानों, गोदामों में दो फिट पानी भरा

जयपुर, 23 अगस्त। राजधानी जयपुर में शनिवार को अलसुबह से लेकर देर शाम तक बारिश हुई। इस दौरान विश्वविख्यात पर्यटन स्थल आमेर किले के रास्ते की दीवार भी ढ ह गई। आमेर किले तक पहुंचने के लिए जो मुख्य मार्ग था, वहां रास्ते में ''दिल-ए-आराम बाग'' के पास दीवार धराशायी हो गयी। गनीमत रही कि कोई जनहानि नहीं हुई, परंतु वहां खड़ी दो बाइक क्षतिग्रस्त हो गयी। आमेर महल के अधीक्षक डॉ.राकेश छोलक ने बताया कि बारिश के कारण दीवार गिरी है। हादसे के बाद मौके पर मलबे का ढेर लग गया। एहतियात के तौर पर आवाजाही बंद कर दी गई। जयपुर कंट्रोल रूम से प्राप्त जानकारी के मुताबिक जयपुर जिले के चौमूं में सबसे ज्यादा 100 मिलीमीटर (एम.एम.) बारिश दर्ज हुई, जो कि करीब 4 इंच से ज्यादा है। जयपुर कलेक्ट्री सर्किल पर बारिश सिर्फ 23 एम.एम. ही दर्ज हुई। इसके अलावा दूदू में 93, माधोराजपुरा 90, रामपुरा डाबडी में 92, सांभर में 92, मौजमाबाद 81, नरेना 72 एम.एम. बारिश हुई।

- **मौसम विभाग ने जयपुर में रविवार के लिए तेज बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है।**

ज्ञात रहे कि जयपुर में अब तक कुल 592.9 बारिश हो चुकी है। जबकि मानसून के पूरे सीजन (1 जून से 30 सितंबर तक) औसत बारिश 524.3 होती है। मानसून की कुल औसत बारिश से ज्यादा पानी जयपुर में बरस चुका है। वहीं, अभी कुछ दिन अच्छी बारिश की संभावना है। मौसम केंद्र ने जयपुर में रविवार के लिए तेज बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। साथ ही अगले तीन-चार दिन जयपुर शहर और उसके आसपास माध्यम से तेज बारिश होने की संभावना जताई है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार को शहर में दिनभर बारिश के कारण जगह-जगह पानी भर गया। सवाई मानसिंह अस्पताल और जेकेलोन हॉस्पिटल के बाहर पानी भरने के कारण मरीजों और उनके परिजनों को आवाजाही में भारी परेशानियां उठानी पड़ी। बारिश से मुहाना मंडी की दुकानों और गोदामों में दो-दो फीट तक पानी भर गया। व्यापारी पंप लगाकर पानी निकालते रहे। जयपुर फल एवं सब्जी थोक विक्रेता संघ के अध्यक्ष योगेश तंवर ने बताया कि इस समस्या को लेकर वे लगातार प्रशासन और अधिकारियों को ज्ञापन देते आ रहे हैं, लेकिन अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला गया। केवल फौरी कार्रवाई की जाती है, जबकि असल समस्या जस की तस बनी रहती है।

जयपुर में शनिवार को अलसुबह से लेकर देर शाम तक बारिश होने से पर्यटन स्थल आमेर किले के रास्ते की दीवार ढह गयी।

मोदी के खिलाफ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मोदी के खिलाफ सोशल मीडिया पर तेजस्वी यादव ने अभद्र टिप्पणी की। पुलिस उपाधीक्षक रक्षपाल सिंह ने जानकारी देते हुये बताया कि जिलाध्यक्ष हरिश्चंद्र रावत ने बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव के खिलाफ कोतवाली तालबेहट में तहरीर दी है, जिस पर आर.जे.डी. नेता व बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के खिलाफ कोतवाली में धारा 173 बी.एन.एस.एस. के तहत एफ.आई. आर. दर्ज की गई है व मामले की जांच की जा रही है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908